# अदीना

*ताजिक भाषा का पहला उपन्यास*

लेखक
सदरुद्दीन ऐनी

अनुवादक
राहुल साकृत्यायन

वितरक
साहित्य केन्द्र
५३/९३, कमच्छा,
वाराणसी—१

# परिचय

इस उपन्यास का लेखक ऐनी "जदीदों" ( नवयुगवादियों ) के आन्दोलन का एक प्रसिद्ध प्रतिनिधि तथा बुखारा की क्रांतिकारी हलचल में आरम्भ से ही काम करनेवाला रहा। ऐनी यद्यपि उन व्यक्तियों में था, जिन्होंने बुखारा में जदीदी आन्दोलन की नींव डाली, लेकिन 'जदीदवाद' के खोखलेपन से जल्दी ही परिचित हो, उसने बाल्शेविक क्रांति के पथ को अपना लिया।

ऐनी की तीस-साला जुबली मनाते समय १६ नवम्बर, १९४५ को ताजिकिस्तान की राजधानी स्तालिनाबाद में ताजिक नेता आबिदोफ ने कहा था—"सामन्तवादी पूर्व ( के देशों ) में रुदकी, फिरदौसी, सादी, उमर खैय्याम, हाफिज़-जैसे कितने ही योग्य और महान् साहित्यकार पैदा हुए, किन्तु ये महामानव यदि सूली पर नहीं चढ़ाये गये, तो भी सदा उत्पीड़ित या निर्वासित रहे। हमारे प्रसिद्ध लेखक ( ऐनी ) के जीवन का बहुत बड़ा भाग बुखारा के अमीरी अत्याचारपूर्ण जमाने में गुजरा था।

ऐनी की जीवनी के बारे में बेहतर होगा कि मैं उनके पत्र ही को यहाँ उद्धृत करूँ, जिसे ऐनी ने २३ अप्रैल, १९४७ में समरकन्द से अनुवादक ( राहुल ) के पास भेजा था

"मैं सन् १८७८ में बुखारा जिले के गिजदुआन तहसील के साक्तारी गाँव में एक गरीब किसान के घर पैदा हुआ। १२ साल की आयु में अनाथ हो गया। बड़ा भाई बुखारा में पढ़ रहा था। उसने मुझे अपनी सरक्षता में ले लिया। वहाँ मैं पढ़ता और मजूरी करता रहा। मदरसा आलमजान में एक बरस झाड़ूदार ( फराश ) का भी काम किया। १९०५ से अध्यापकी और पाठ्य पुस्तकों के लिखने का काम करता रहा। १९१५–१६ में एक साल किजिलप्पा के कपास के कारखाने के ओटाइ आफिस में काम किया।

१६१६ में बुखारा के एक मदरसे म मुदर्रिस ( प्रोफेसर ) नियुक्त हुआ। १६१७ के राष्ट्रीय आन्दोलन या 'फरवरी-क्रान्ति' म अमीर के विरुद्ध काम किया। १६ अप्रैल का गिरफ्तार करके मुझे ७५ कोड़े मारे गये, और 'आवखाना' नामक जेल म डाल दिया गया। रूसी क्रांति-सेना ने मुझे जेल से निकाल कर कागन क अस्पताल म रखा, जहाँ ५२ दिन रहने के बाद मैं स्वास्थ्य-लाभ कर सका। १७ जून, १६१७, को समरकन्द आया। तब से समरकन्द नगर में ही मेरा निवास है।

मार्च १६१८ में कोलिसोफ युद्ध-काड के समय मेरे छाटे भाइ का, जो कि मुदर्रिस थे, अमीर ने पकड़वा कर मरवा दिया। १६१८ से मैं सोवियत के हाइ स्कूलों में पढ़ाने लगा, साथ ही १६१६–२१ मे समरकन्द के दैनिक और मासिक पत्र पत्रिकाओं म साहित्यिक सम्पादक का भी काम करता रहा। बुखारा की क्रांति मे भाग ले अमीर के विरुद्ध जनता को उभाड़ने का काम किया। १६२२ म मेरे बडे भाइ को साक्तरी गाँव म बसमाचिया ( क्रांतिविरोधियों ) ने मार डाला। १६२१ के अन्त से १६२३ तक मैं बुखारा जन-सोवियत प्रजातन्त्र के वकील के नायब के तौर पर समरक द में काम करता रहा।

१६२३ के अन्त से १६२५ तक समरक द म सरकारी व्यापार का सचालक रहा। १६२६ से १६३३ तक तिरमिज में साहित्य और विज्ञान विषयक सम्पादन का काम करता रहा। सितम्बर, १६३३ मे ताजिक सरकार ने मुझे काम से छुट्टी दे दी, जिसमें कि मैं घर पर रह कर अपना साहित्य और विज्ञान-सम्बन्धी कार्य स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकूँ।

१६३५ से मैं उजबेकिस्तान की उच्च शिक्षण-सस्थाओं, उजबेक सरकारी युनिवर्सिटी ( समरकन्द ), समरकन्द ट्रेनिंग कॉलेज, ताशकद ट्रेनिंग कॉलेज, ताशकन्द ला कॉलेज, मध्य एशिया युनिवर्सिटी ( ताशकद ) में एम० ए०, डाक्टर-उम्मेदवार ( पी० एच० डी० ) और डाक्टर ( डी० लिट्० ) की परीक्षाओं का परीक्षक और परामर्श-दाता होता आ रहा हूँ।

१६२३ म ताजिक समाजवादी सोवियत प्रजातन्त्र की केन्द्रीय कार्यकारिणी का मेम्बर चुना गया। १६२६ से १६३८ तक भी उसका सदस्य रहा। १६३१ में ताजिक सरकार ने मुझे 'लाल श्रमध्वज' का तमगा प्रदान किया। १६३५ में ताजिक सरकार की ओर से मुझे एक मोटरकार और भवन प्रदान किया गया और उजबक सरकार की ओर से सनद और रेडियो मिला।

१६२३ में अखिल सोवियत लेखक-संघ का मेम्बर चुना गया। १६३४-४४ तक संघ के सभापति मंडल का एक सभापति और ताजिकिस्तान तथा उजबेकिस्तान के लेखक-संघों की उच्च समितियों का भी सदस्य रहा। अप्रैल, १६४१ म सोवियत सरकार ने 'आर्डर आव लेनिन' नामक तमगा प्रदान किया। १६४३ में उजबक-साइन्स अकादमी का 'माननीय सदस्य' निर्वाचित हुआ। १६४६ में 'साइन्स के काम के लिये' तमगा मिला। १६३६ म स्तालिनाबाद की नगर सोवियत (कारपोरेशन) का मेम्बर चुना गया। २६ अक्तूबर, १६४० को 'माननीय साइन्सी नेता ताजिकिस्तान समाजवादी सोवियत प्रजातन्त्र' की उपाधि मिली। अक्तूबर १६४६ म उजबक युनिवर्सिटी की साहित्य फेकल्टी का डीन बनाया गया।"

२३ अप्रैल, १६४७ को आविदोफ ने ऐनी की जुबिली में भाषण देते हुए, उनके साहित्यिक कार्यों पर भी प्रकाश डाला—

"ऐनी की कितनी ही पुस्तकें रूसी, उजबेकी, उक्रैनी आदि भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। उनका 'अदीना' ताजिक भाषा के साहित्य का यदि प्रथम उपन्यास है, तो ऐनी की दूसरी कृति 'दाखुन्दा' निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति मानी जायगी।

"सबसे पहिला बड़ा काम ऐनी का है ताजिक भाषा को अरबी शब्दों से शुद्ध करना, जो कि लम्बे ऐतिहासिक काल मे (हमारी भाषा में) आ घुसे थे। ऐनी ने जनता की चालू भाषा से लाभ ही नहीं

उठाया, बल्कि उस भाषा को पूर्ण और विकसित कर, अपनी कृतियों के द्वारा उसे दुनिया के साहित्य में स्थान दिलाया।

'अदीना' और 'दाखुन्दा' की भाषा वह भाषा है, जिसमें ताजिकिस्तान के लोग बातचीत करते हैं। इस काम ने तथा जनसाधारण के जीवन की गम्भीर जानकारी ने ऐनी को बहुत जल्दी प्रसिद्ध कर दिया। गाँवों, कलखोजों और स्कूलों म ऐसे कितने ही पाठक मिलेंगे, जो 'अदीना' और 'दाखुन्दा' की कहावतों को बातचीत म इस्तेमाल करते हैं। पूज्य गुरु सदरुद्दीन ऐनी बहुत बरसों तक हमारे बीच रह शत्रुओं को संत्रस्त करते हुए, हमारे समाजवादी देश की भलाई के लिये काम करते हैं।"

ऐनी ने पुराने ढग से अरबी और इस्लामिक वाङ्मय का गम्भीर अध्ययन किया था। और वे एक बड मदरसे क अध्यापक भी रहे। उनकी कलम से ताजिक भाषा का यह पहिला उपन्यास लिखा जाना वैसा ही है, जैसे बनारस के किसी पुराने ढग के महामहोपाध्याय का उपन्यास लिखने के लिये कलम उठाना। इस उपन्यास को लिखकर ऐनी ने समरकन्द से निकलनेवाले दैनिक 'आवाज़े ताजिक' में २३ नवम्बर, १९२४ से क्रमश प्रकाशित कराना शुरू किया। वहाँ इसका नाम 'सरगुजश्ते यक ताजिक कमबगल या कि अदीना' (एक ताजिक गरीब की जीवनी अर्थात् अदीना) था। १९२७ म यह 'अदीना' के नाम से अलग छपा, और उसी साल इसका रूसी अनुवाद भी हुआ। लेखक और उसकी मातृभाषा का पहिला उपन्यास होने के कारण यद्यपि 'अदीना' की भाषा बहुत मँजी हुई नहीं है, लेकिन इसका अपना महत्व है। इसीलिये ऐनी के उपन्यास 'दाखुन्दा', 'जो दास थे' और 'अनाथ' का हिन्दी म अनुवादित करने के बाद मैंने उनकी प्रथम कृति 'अदीना' का भी अनुवाद करना आवश्यक समझा।

मसूरी,
१-३-१९५१

राहुल साकृत्यायन

# अनाथ

अदीना बारह बरस की उम्र में अपने माँ-बाप को खोकर दीन-अनाथ हो गया था। उसका बाप एक बहुत गरीब और बेचारा आदमी था। उसके पास एक गाय को छोड़कर और कोई चीज़ अपने छोटे लड़के को दायभाग में देने के लिए नहीं रह गई थी। अदीना का गाँव करातेगिन इलाके में था। बाप के मरने पर काज़ी ने चपरासी और मुफ़्ती को भेजकर, उसके माल को कुर्क करा लिया। काज़ी के हक, मुफ़्ती के खर्च, चपरासी के खिदमताने तथा गाँव के मुखिया और अक्सकाल (लंबरदार) के भोज के पैसों को काट लेने के बाद गाय की बची का पैसा ही खतम नहीं हो गया, बल्कि अदीना १० तका का कर्जदार भी हो गया। अदीना का पालन-पोषण उसकी नानी ने अपने जरखे और हाथ के काम से करना शुरू किया था। नानी ने कर्ज के रुपये के लिए अदीना की ओर से नायब काज़ी के सामने निम्न हैंडनोट (सनद) लिख दिया—

'मैं मुसम्मात बीबी आइशा, पुत्री शाह मुराद, अपने नाबालिग नाती अदीना, पुत्र बाबाकुलाँ, के बाप के श्राद्ध के खर्च के लिये अरबाब कमाल को १० तका की कर्जदार हो गई। उसे नाबालिग अदीना की ओर से मैंने सिर पर लिया, और करार किया, कि जिस वक्त वह बालिग और काम करने लायक हो जायेगा, उक्त रकम के बदले अरबाब कमाल की सेवा करेगा।'

बीबी आइशा ने तीन साल तक परवरिश करके अदीना को १५ साल का बना, अरबाब कमाल की सेवा में लगा दिया। अरबाब कमाल ने अपनी ५० भेड़-बकरियों तथा एक गधे को अदीना के हाथ में दे

कर, उसे चरवाही और लकड़हारी के काम में लगा दिया। अदीना प्रति दिन सवेरे जानवरों को लेकर चराने के लिये जाता, और शाम को दर्जे और पहाड़ से ईंधन काट, गधे के ऊपर लादकर, भेड़ बकरियों को सामने किये, अपने मालिक के घर लाता था।

इसी प्रकार खिदमत करते-करते अदीना १७ साल का हो गया। इस दो साल के अर्से में उसने अपने मालिक की ओर से न कभी पेट भर खाना पाया, और न ठीक से कपड़ा ही। पुराने धुराने कपड़े और सड़े-गले लत्तों को उसे दिया जाता था, और उन्हें वह ऊन के सूत से जानवरों को चराते वक्त किसी तरह सी और जोड़कर, 'जामा' का नाम देकर, अपने तन को ढाँकता। पुराने चमड़ों को भी इसी तरह जोड़-जाड़कर, पायजामा, 'मुकी' के नाम से पैरों में डाल लेता। मोटी छोटी रोटी जो मालिक की ओर से मिलती, वह भी पेट भरने के लिये पर्याप्त न होती, यद्यपि उसमें जंगली घास और जड़ भी शामिल रहती।

इतनी तकलीफें और मेहनत के बाद भी बेचारे अदीना ने मालिक के मुँह से न कभी एक भी मीठा शब्द सुना, और न उसके चेहरे को प्रसन्न देखा, बल्कि जब कभी उसके सामने गया, बिना कारण उसे गाली और झिड़की ही सुननी पड़ी। अरबाब कमाल चाहे किसी कारण किसी और पर नाराज होता, किन्तु उसका गुस्सा वह अदीना को गाली देकर उतारता, जैसे यदि किसी कर्जदार ने अपने करार के अनुसार कर्ज अदा न किया, तो उसके लिये गाली में अदीना को भी शामिल किया जाता, अथवा यदि समरकन्द के रास्ते में बर्फ पड़ जाने से भेड़ों का वहाँ जाना बन्द हो जाता, जिससे करातेगिन के इलाके में चौपायों का मूल्य गिर जाता, तो इसके लिये भी अदीना गाली का पात्र समझा जाता। अगर संयोगवश अदीना कोई गलती कर बैठता, तो चाहे वह गलती उसके बस की बात न भी होती, फिर भी प्रकाशमान दिन उसके लिये अँधेरी रात बन जाता।

× × ×

एक दिन वसन्त के समय सारी पर्वत-स्थली वसन्त ऋतु के कारण नवोत्पन्न हरियाली से जलपूर्ण नदी की तरह हरीतिमा की लहरें मार रही थी। इस हरियाली की अनन्त लहरों में बाधा डालनेवाले थे जहाँ-तहाँ पहाड़ों पर गड़े नग पाषाण। यह पाषाण यद्यपि आदमियों के हाथ से काटे नहीं गये थे, किन्तु वसन्ती वर्षा के कारण बहुत साफ-सुथरे हो गये थे, इसलिये सौंदर्य मे वह भी हरियाली से कम नहीं थे। यद्यपि पहाड़ के ऊपर की बरफ गरमी के कारण गलकर पानी बन, नीचे से नीली घासों को जमाने लगी थी, किन्तु अभी तक पहाडी फूल अपने सफेद सिरों को हरियाली से बाहर नहीं निकाल पाये थे, कि दर्शक की आँखें किसी और तरह के दृश्य को भी देख पातीं। पहाड़ की बड़ी नहरें ही बरफ की चादरों से ढँकी केवल मनोहर दृश्य उपस्थित नहीं कर रही थीं, बल्कि छोटी नहरें भी पानी जमा करने के खजाने के सालों-साल कम होते जाने मे पानी की मात्रा कम रखते भी बहती हुई अपने किनारे हरियाली को बढ़ाते स्थली की सुषमा को बढ़ा रही थीं।

आप यह न सोचें कि यह बड़ी-बड़ी नहरें और कुलावे अपने भीतर तेज चलती पानी की धारा को बहा रही थीं। वहीं, हमने और शब्द न मिलने के कारण उन्हें यह नाम दिया, नहीं तो वह पानी की छोटी-छोटी नालियाँ थीं, जिनकी लम्बाई-चौड़ाई उस घास और तिनकों से अधिक नहीं थी, जो कि उनके रास्ते में तीन-तीन पत्ती के निकल आये थे। पानी की आवाज भी इसी तरह उससे ज्यादा नहीं थी, जो कि किसी ताजिक सुन्दरी की अलकों के वायु से चालित होने पर निकलती है। यह दृश्य, जो कि हमने आपके सामने रखा, न बहुत गहरा था, और न चारों तरफ एक साथ। यह स्वाभाविक है कि ऐसी जगह, जहाँ पानी विशेष तौर से कम था, वहाँ वह बहुत धीमे धीमे चलता। उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि मिट्टी, कीचड़ या तिनकों को अपने रास्ते से हटाता हुआ, तेजी से आगे बढ़ता। हरियाली और तीनपतिया तृण, जो उतने ही बड़ थे, जितनी पानी की गहराई, हवा की गति और पानी की चाल

से हिलते हुए, बड़ी कोमल हरकत पैदा करते, कहीं पानी के भीतर ओ कहीं पानी के ऊपर लहरा रहे थे। हरियाली और तीनपतिया का थपड़ लगाती हवा हुक्म दे रही थी कि वह आगे बढ़कर पानी को चुम्बन दे। इसीलिये पानी को चुम्बन देने के लिये तीनपतिया हरियाली चचल हो उठी थी।

हमारा अदीना, जिसकी आँखें अनाथों के आँसुओं से कभी सुदरक नहीं हुई थीं, अपनी भेड़-बकरियों को लिये, इसी सुन्दर दृश्य के भीतर से उन्हें चराते हुए, अरबाब द्वारा पाये सभी कष्ट और रज का दिल से भूलकर एक शिला पर करवट लेता, पर्वत-स्थली के इस सौदर्य को देखने में डूबा हुआ था। उसे यह भी पता नहीं था कि रज क्या चीज है, और दुनिया क्या है। जब तब दूर पहाड़ के ढालों में से किसी चिड़िया की 'काफ काफ' की आवाज उसके कानों में आती, जिससे थोड़ा देर के लिये उसका ध्यान प्रकृति के उस नयनाभिराम दर्शन से हट जाता, लेकिन वह भी एक और ही आनन्द उपस्थित करता। कभी कभी आसमान में निकलकर काले बादल का कोई टुकड़ा सूर्य के मुख को उसी तरह ढाँक देता, जैसे कि अरबाब कमाल के ललाट का स्याही हर वक्त ढाँके रहती, जिसमें बेचारे अदीना की दृष्टि में दुनिया अन्धकारमय हो जाती। लेकिन सूर्य उस कालिमा को अपनी कोशिश से उसी तरह जल्दी ही हटा देता, जैसे कि पूर्व की पुत्रियाँ अपनी कोशिश से अपने सिर पर पड़े काले पर्दे को हटा देना चाहती हैं, जिसके कारण काले बादल के नीचे से एक सौंदर्यमय दूसरी दुनिया बाहर खड़ी होना चाहती है।

अदीना उस शिला के ऊपर कभी इस करवट, कभी उस करवट, कभी पट के बल और कभी पीठ के बल लेटा जल्दी ही नींद में डूब गया। उसे कुछ पता नहीं रहा कि भेड़-बकरियाँ कहाँ गईं, गधा का क्या हुआ, और ईंधन का क्या हुआ। भेड़-बकरियाँ पेट भर चरकर अपने रखवाले के चारों तरफ लेटी हुई, चरी हुई खुराक को फिर से

जुगाली करने में लगी हुई थीं। कुछ समय बाद पेट को खाली देखकर, वह फिर चलने की इच्छा से उठकर हरी भरी घास ढूँढने चारों ओर बिखर गईं। जिस पर्वत-स्थली के सौंदर्य को हमने अभी देखा, उसके नीचे की ओर एक गहरा दर्रा था, जिसके दोनों तरफ के पहाड़ सीधी दीवार की तरह खड़े थे। चरते हुए एक बकरी इस दीवार के किनारे पर पहुँचकर चरने लगी। उसकी देखा देखी एक भेड़ भी आगे बढ़ी। एकाएक उसकी दृष्टि एक हरे बूटे पर पड़ी, जो उसके पैरों के नीचे की ओर था। उसने आगे बढ़कर उसे चरना चाहा। इसी समय उसके पैर के नीचे का पत्थर खिसक गया, और भेड़ एक घास के पूले की तरह लुढ़कती नीचे जा पड़ी। भेड़ें इतनी लोभी नहीं होतीं कि चरने के लिये अपने को ऐसे खतरे मे डालें, लेकिन बकरी की देखा देखी वह अपने को रोक न सकी। लुढ़कते वक्त जिस जिस पत्थर के ऊपर वह भेड़ पड़ी, वह भी गतिशील हो, दूसरे पत्थरों पर पड़कर कितने ही पत्थरो को चलाते नीचे की ओर चला, और उनके टकराने से एक तरह की आवाज सारे पहाड़ में गूँजी, जिसे सुन कर भेड़ें कान उठा इधर-उधर भागने लगीं। इस आवाज ने अदीना को नींद से उठा दिया, और वह अपनी आँखों को मलते, चारों ओर नजर दौड़ाते, यह जानने के लिए कोशिश करने लगा कि क्या बात है। लेकिन अब पत्थरों के एक दूसरे से टकराने की आवाज बन्द हो गई थी, और भेड़ों का चारों ओर भागना भी खत्म हो चुका था। अदीना को यह देखकर ख्याल हुआ कि शायद भेड़ों ने भेड़िया देखा। ठीक हाल जानने की कोशिश करने के पहिले यह आवश्यक था कि भेड़ों को शान्त किया जाय। इसलिये 'ए-ए' पुकारते, धीरे-धीरे उसने सभी भेड़ों को एक कोने में इकट्ठा किया, और उनमें से एक एक पर नजर दौड़ाकर देखा कि वहाँ एक भेड़ नहीं थी। सभी भेड़ें डरी हुई एक ओर नजर किये खड़ी थीं। अदीना को ख्याल आया कि कोई बात उसी तरफ हुई है। उसने उसे जानने के लिये भेड़ों को वहीं छोड़ पहाड़ के

एक भेड पानी के भीतर पड़ी हुई थी

किनारे पर देखा कि एक बकरी दर्रे के नीचे चुपचाप इधर-उधर बिखरे पत्थरों मे पैर डाले अब भी चर रही है, और आराम मे इतना खाना खा रही है कि गोया दुनिया-जहान की उसको कोइ फिक्र नहीं है। अदीना ने बकरी को देख, भेड का ढूँढने के लिये कुछ और नीचे की तरफ नजर दौड़ाकर देखा। एक भेड पानी के भीतर पड़ी हुइ थी, और अपने सिर को बाहर किये हिला रही थी। भेड़ को पाने और जिन्दा देखने से सतुष्ट होकर, वह उसे ऊपर लाने के लिए दर्रे के नीचे उतरा। और भेड़ के पास जाकर देखा कि उसके अगले दोनों पैर टूट गये हैं, पिछले पैर भी फट गये ह, और शरीर में भी कइ जगह चाट है। यह देखते ही वह उज्ज्वल दिन बेचारे अदीना क लिये अँधेरी रात बन गया। उसने सोचा कि इसके कारण अरबाब कमाल उसकी बुरी गति बनावेगा। उसे कुछ समझ म नहीं आया कि अब क्या करें। खैरियत थी, कि भेड़ धारा में न गिर थोडे पानी म पड़ी थी, जा कि धारा से अलग हाकर पानी के छाटे-से गड्ढे की तरह था, नहीं ता धारा भेड़ का बहा ले जाती, और बीच की चट्टानां पर पटक कर उसके टुकड़े-टुकडे कर डाल्ती।

यद्यपि भेड़ मिल गई थी, किंतु उसके भीतर की चिंता का कारण अभी दूर नहीं हुआ था। वह जानता था कि अरबाब कमाल इसके लिये क्या करेगा, कितनी गालियाँ देगा। भेड़ के हाथ पर टूटने के कारण हा सकता है कि वह उसके हाथ-पैर ताड़ डाले, या कोड़ों से उसकी खाल उधेड़कर नमक भर दे। अरबाब कमाल एक पत्थर-दिल, खूँखार आदमी था। वह कुछ भी कर सकता था। इस तरह विचार करते हुए, अदीना एक भय से दूसरे भय म गिरता जा रहा था। फिर ख्याल आया, शाम होने को आइ है, मालिक के घर जाने तथा जो भी होनहार हो, उसे भोगने के सिवा कोइ चारा नहीं। सबेरे ही जो ईंधन उसने जमा कर रखा था, उसके दो बोझ बाँधकर गधे पर रख, घायल भेड़ को उस पर रख रस्से से खूब मजबूती से बाँधा,

और गधे को आगे कर, उसके पीछे भेड़ बकरियों को हाँकते, घर का रास्ता लिया। वह जितना ही घर के नजदीक पहुँचता जाता था, उसके दिल की कँपकँपी और ज्यादा बढ़ती जा रही थी। अंत में उसने सोचा 'अरबाब कमाल चाहे जो कुछ भी करे, मार डालने से अधिक कुछ नहीं कर सकता। जो जिन्दगी मैं बिता रहा हूँ, मरना उससे हजार गुना अच्छा है। इसलिये क्यों मैं इतना डर रहा हूँ, क्यों नहीं मैं मौत का खुशी के साथ स्वागत करना चाहता?' इस तरह विचार करते हुए उसका दिल कुछ निश्चिन्त हुआ, हाथ पैर में कुछ ताकत पैदा हुई, और वह मालिक के घर के दरवाजे पर भी पहुँच गया। पहिले घायल भेड़ को गधे से उतारकर दरवाजे के पास रखा, फिर ईंधन का उतारकर ईंधन घर के भीतर रखा, और फिर भेड़-बकरियों को उनके बाड़े में पहुँचाया।

अरबाब कमाल ने गधे की आवाज सुनकर समझ लिया कि भेड़ें आ गईं। वह उस वक्त खिचड़ी खा रहा था। उसे आधा ही खाकर बाहर चला आया, और अपनी रोज की आदत के अनुसार भेड़ों और बकरियों पर एक एक करके नजर दौड़ाने लगा। देखा कि एक भेड़ नहीं है। उसने जोर से आवाज लगाई—"अदीना, काली शीशक कहाँ है?"

"*वह यहाँ है,*" *अदीना ने जवाब दिया।*

"पदर-लानत (हरामी), यह बदचलनी कहाँ से सीखी? इस तरह भेड़ को चुराना चाहता है? घर के बाहर इसे क्यों रखा? ऐसा मारूँगा कि तेरे तीसों दाँत मुँह से बाहर निकल जायेंगे।"—यह कहते हुए, वह जल्दी से भेड़ के पास आया। फिर भेड़ की हालत देखकर, अदीना की ओर निगाह करके, चिल्लाकर बोला—"बतला, यह क्या हाल है?" कहकर, उसने हर नाम से उसे गाली देना शुरू किया।

अदीना घटना को बात बतलाने लगा—"मैं ईंधन जमा कर रहा था"

पर अरबाब ने उसे वाक्य पूरा करने का भी मौका नहीं दिया, और भूखे सियार की तरह मुर्गे पर हमला कर दिया, या भिखारी के ऊपर कुत्ते की तरह टूट पड़ा। अदीना के पास पहुँच, जमीन से पत्थर उठा, उसके सिर पर दे मारा। उसका सिर फट गया, और वह जमीन पर गिर गया। इतने से भी अरबाब का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ। वह जमीन पर पड़े बेचारे अदीना को मारता और ठोकर लगाता रहा, और साथ ही चिल्ला चिल्लाकर गालियाँ देता रहा। अदीना चोट खाकर, एक दो बार "हाय, मरा!" कहकर चिल्लाया। फिर उसमें आवाज निकालने की भी शक्ति नहीं रह गइ।

अरबाब के कोड़ों की पटपटाहट और गालियों की आवाज की चिल्लाहट सुनकर, गाँव के मुल्ला ख्वाकराह दो तीन बुजुर्गों के साथ इस घटना को जानने के लिए अरबाब कमाल की हवेली पर आये। इस वक्त तक अरबाब का गुस्सा कुछ कम हो गया था, और मारते मारते वह थक भी गया था। गाँव के लोगों को आया देखकर, अदीना को वैसे ही छोड़, उनके पूछने से पहिले ही उसने कहानी छेड़ दी—"इस नमकहराम तीन तिलाकी माँ के बेटे का देखिये! मेरी खिचड़ा खाता है, मेरी रोटी खाता है, मेरी दी हुई पोशाक पहनता है, और आप जानते ही हैं कि इसके बाप के मुर्दे को मैंने कब्र दिलाइ। आज भेड़ों को उनके ऊपर छोड़ यह सो गया था, या खेलने लगा, जिससे कि यह भेड़ गड्ढे में गिर गइ। और आप देख ही रहे हैं कि इसकी क्या हालत हुई है। क्या मैं इसका हक नहीं रखता कि इस मुसटंडे को मारूँ? पीटने ही की बात क्या, मुझे इसे जान तक से मार डालने का भी हक है। सौ सुअरों से एक भेड़ कहीं बढ़कर है। अगर आप लोग न आ जाते, तो इस वक्त मैं इसे मार डाले होता। अब इस बात पर आप सब गाँव के बुजुर्ग ही विचार करें।"

बुजुर्गों ने इस घटना के बारे में जान कर, तथा यह भी जानकर कि अरबाब का मसूरा क्या है, अदीना के पास आ, उसके घाव से खून जाते देखते हुए कहा—"कोई हर्ज नहीं। एक नमदे का टुकड़ा जलाकर बाँध दिया जाय, तो ठीक हो जायगा। अदीना, तूने लड़कपन किया, तूने नादानी की। अरबाब ने जो इतना हल्ला-गुल्ला किया, तुझे पीटा, यह भी तेरे हित की ही बात है। वह चाहता है कि तू होशियार हो, आदमी बन। कहावत है कि 'मोमिन का माल, मोमिन का खून।' तूने अरबाबके माल को बरबाद किया, मानो उसका खून बहाया। अरबाब सच कह रहा है कि तेरे गुनाहों के लिये तेरे कुसूर के लिये वह तुझे मार सकता है। खैरियत हुई कि हम लोग आ गये। अब हमारी पिता-जैसी नसीहत यही है कि अपने काम में होशियार रह, अरबाब के माल को अपने प्राण के समान जान, खबरदारी कर। तेरा बाप नहीं है, और अरबाब तेरे बाप की जगह है।"

फिर बुजुर्गों ने अरबाब की ओर देखकर कहा—"एक बार इसने बेवकूफी की है। इसे क्षमा कर दो। जो कुसूर इसने किया, उसे क्षमा करना ही बेहतर है। भेड़ के बरबाद होने का आपको अफसोस है। उसका भी इलाज है। हम सबको मालूम है कि अदीना तुम्हारा कर्ज-दार है इसीलिये तुम्हारे हाथ में लिखा-पढ़ी होकर पड़ा है। यह भेड़ जो बरबाद हुई है, इसका भी हम दाम लगा देते हैं, और उसी हैंडनोट (सनद) की पीठ पर लिख देते हैं। यदि इसकी उम्र बाकी रही, तो अदीना नौकरी करके तुम्हारे सभी कर्ज को अदा कर तुम्हें खुश करेगा। ठीक है न?" यह कहकर, उन्होंने अदीना की ओर दृष्टि डाली।

अदीना को भी सिर हिलाकर "हाँ" करने के सिवा और कोई रास्ता नहीं था। यह बला इतनी आसानी से हट रही है, यह देखकर वह अपने दिल में कुछ खुश भी हुआ। गाँव के बुजुर्गों ने भेड़ का दाम १० तका लगा कर, सनद की पीठ पर लिखा दिया।

"इतनी मधुरता के साथ इस काम को पूरा करने के लिये मुँह मीठा कराना चाहिये," कहकर, और हँसते हुए अरबाब को "खुश रहो" कह, वे हवेली से निकलकर, बाहर चले गये।

दूसरे दिन अरबाब कमाल ने घायल भेड़ को आठ तंका में बेच डाला। लेकिन अदीना तो पूरे १० तंका का कर्जदार बना ही रहा!

---

## हिसाब

पने बाप सुल्तान मुराद के मरने के समय अनाथ गुल बीबी एक साल की थी। तब से आठ साल की उम्र तक अपनी माँ, जो कि अदीना की मौसी भी थी, के हाथ परवरिश पाती रही। उसकी माँ रहीमा बेगम की लालसा यही था कि गुल बीबी को बड़ी करके अपने भतीजे को ब्याह दे, और इस प्रकार अपने तथा अपनी बहन के चिराग को जलता रखे। लेकिन रहीमा बेगम की अभिलाषा पूर्ण न हुई, और वह मर गई। मरते वक्त उसने अपनी माँ बीबी आइशा के सामने यही वसीयत की कि "मेरी आँखों की तारा गुल बीबी को अदीना के साथ पालना-पोसना, और बड़ी होने पर उसे अदीना से ब्याह देना।" बीबी आइशा ने इस वसीयत को भुलाया नहीं। रात दिन उसकी यही इच्छा था कि ख़िदमत से छुट्टी पा जाय तो शादी की तैयारी करके अपनी जिन्दगी में ही उस अमानत, अर्थात् गुलबीबी का हाथ उसके हाथ में दे दे। एक दिन बीबी आइशा ने अदीना से कहा—'माँ के प्राण, तेरे १७ साल पूरे हो गये। दो साल से—अरबाब की ख़िदमत कर रहा है। शायद अपनी ख़िदमत की मजूरी में अरबाब का कर्ज बराबर हो गया होगा। अब वक्त है कि तू अपने मालिक से छुट्टी लेकर अपने काम में लग जा, और कुछ बचा-खुचाकर अपने माँ के घर को आबाद और अपने पिता के चिराग को रोशन कर।"

अदीना की भी यही इच्छा थी कि जितनी जल्दी हो सके, अरबाब कमाल के हाथ से छुट्टी पाये और अपने दूसरे देशवासियों की तरह फरगाना की तरफ जाकर मजूरी और बोझा ढुलाई करे। और जब

उसके पास कुछ जमा हो जाय, तो अपने गाँव में आकर मौसी की लड़की गुल नीरी से ब्याह करके खुशी के साथ जिन्दगी बिताये। लेकिन कैसे किस रास्ते से अरबाब के हाथ से छुट्टी पाये, इसका उसे कोई उपाय न सूझा। अरबाब की गालियों, थप्पड़ों और कोड़ों ने उसकी आँखों को ऐसा भयभीत कर दिया था कि सिर उठाकर उसकी तरफ देखने की भी उसे हिम्मत न होती थी, हिसाब करने तथा छुट्टी पाने की बात तो अलग रही। खैर, यह सब भय होने पर भी नानी के बार-बार आग्रह करने पर उसे हिम्मत हुई और एक दिन उसने अरबाब के सामने अपना विचार प्रगट किया। अरबाब कमाल ने यह बात सुनकर, फाड़ खानेवाले शेर की तरह गुर्राते ओंठों के भीतर कहा—"छुट्टी! हिसाब! यह सब क्या है? अब इस पापिनी माँ के बेटे का पेट रोटी से भर गया!" फिर गुस्से से अंगारों की भाँति लाल हुई आँखों को अदीना के ऊपर डालकर, उसने कहा—"कमीने, नमकहराम! क्या कह रहा है? किस तीनतिल्ला की औरत ने तुझे गुमराह किया है? तू अच्छी तरह समझ रख कि तेरे मरने के बाद, तेरी हड्डी भी मुझसे छुट्टी न पायेगी और न तू मेरे कर्ज से रिहाई पायेगा। जा अपने दादा के पास, और विदाई ले!"

अदीना ने अत्यन्त नम्रता के साथ सिर नीचा किये, अपने पैरों की तरफ दृष्टि डाले, कहा—"नानी कहती है कि "

अरबाब ने अदीना को अपनी बात खत्म करने का समय न दे, उसकी तरफ दौड़कर, उसके हाथ से लाठी छीन ली, जिस पर सहारा लिये अदीना खड़ा था और उसे उसके सिर पर ऐसे तावड़तोड़ मारा कि उसमें सूराख हो गये और जगह जगह से खून की धाराय, मानो गड़वे की टोंटी से निकलने लगीं। इतना करके भी अरबाब को सन्तोष नहीं हुआ। वह उसके ऊपर लाठी बरसाता ही गया। अदीना ने चोट से तिलमिलाकर, रक्षा पाने के लिए लोगों को आवाज दी। लेकिन वहाँ कौन था, जो उसकी फरियाद पर आता?

अरबाब घायल अदीना को उसी तरह छोड़कर कुछ ख्याल करके दौड़कर गली में आ, मसजिद की ओर गया और वहाँ इमाम तथा कुछ दूसरे सिर कँपनेवालों को देखकर बोला—"आइये, देखिये, यहाँ क्या हाल है।"

"क्या हुआ?" कहते हुए, गाँववालों ने बार-बार पूछा। अरबाब ने कहा—"आइये, स्वयं देखिये कि क्या हुआ कि आप लोगों ने मेरे साथ क्या किया। जो गड़बड़ी आपने की है, उसे चलकर स्वयं ठीक कीजिये।"

इस तरह अपने अभिप्राय को अच्छी तरह प्रगट न करके, वह उन्हें अपने घर लाया। गाँव के बुजुर्गों ने अरबाब की हवेली में आकर अदीना को मिट्टी और खून में लतपथ देखा। वे अरबाब से बोले—"अच्छा, तूने इस अनाथ को मारा है। इसमें हमारा दोष क्या है?"

"आप ही न थे, जिन्होंने कि इसके बाप के मुर्दे के लिए मुझसे कर्ज ली? आप ही न थे, जिन्होंने भेड़ के बरबाद करने पर इसके मेरा नौकरी कराने का जिम्मा ले मुझसे मिठाई खाई? अब यह मुझसे हिसाब करके छुट्टी लेना चाहता है। आप लोगों का कर्तव्य है कि मेरा कर्ज दिलवायें या कोई रास्ता निकालें, जिसमें कि मेरा पैसा डूब न जाय, नहीं तो मैं अपना हक आप लोगों से पाना चाहूँगा।"

मुल्ला खाकराह अरबाब की इस बौखलाहट से मुस्कराकर बोले—"अपने इस दर्द को चिल्लाकर न कहने में भी काम चल सकता है। 'दोस्त का एक इशारा मिलना चाहिए और हम सिर के बल दौड़ने को तैयार हैं' की कहावत नहीं सुनी? तुम इशारा करो और हम उसे करने के लिये तैयार हैं। इसके लिये हम सबको काजीखाना (न्यायालय) में घसीट ले जाना उचित नहीं।"

श्वेत केशों में से एक ने मुल्ला खाकराह से कहा—"जाइये मुल्ला साहब, अब दूसरा बखेड़ा खड़ा न कीजिये।" और अदीना के पास आकर नसीहत करना शुरू किया—"तू अब भी बच्चा नादान है। तूने

दुनिया की सरदी-गरमी नहीं देखी। तू नहीं जानता कि पैसा कहाँ से पैदा होता है और किस तरह हाथ मे आता है। अच्छी तरह जान ले कि दुनिया म पैसा कर्ज की चीज नहीं है। कोइ किसी को चिरकाल के लिए धरमादा ऋण नहीं देता। वह १० तका, जो अरबाब ने तेरे बाप के मुर्दे के खर्च के लिये दिया था, उसका हर महीना एक तका सूद बढ़ता है ”

मुल्ला ग्याकराह ने श्वेतकेश की बात काटकर, बीच म कहा—“सूद मत कहिये, उतारा कहिये।”

श्वेतकेश ने अपनी बात जारी रखते हुये कहा—“ठीक। मुल्लाजी के कथनानुसार कहता हूँ; प्रत्येक १० तका पर प्रति माह एक तका उतारा होता है। इस माल तुझे कर्जदार हुए पाँचवाँ साल बीत रहा है। उस मूल पैसे पर सूद के हिसाब म ”

मुल्ला ग्याकराह ने बहुत गुस्सा होकर अबकी कहा—“कान लगा के सुनो, एक बार तुमसे कह दिया, फिर सूद मत कहो!”

दूसरे श्वेतकेश ने बात म शामिल होते हुए मुल्ला साकराह से कहा—“ ‘शिकार का अर्थ गोश्त खाना है’ की कहावत मशहूर है। चाहे सूद कहिये, चाहे उतारा, उसका अर्थ यही है कि १० तका पर प्रति मास एक तका ज्यादा होता है। मुल्ला, जी इसके लिये झगड़ा करना ठीक नहीं है।”

“क्यों ठीक नहा है?” मुल्ला साकराह ने कहा—“सूद अर्थात् रिबा इस्लामी धर्मशास्त्र में निस्सन्देह हराम ह। इसीलिये बुखारा शरीफ के धर्मशास्त्रियों ने लोगों की जरूरत को देखकर सूद खाने के लिये रास्ता निकाला, धर्मशास्त्र के अनुसार इसका नाम उतारा रखा है।”

“सूदखोरी करो, लेकिन नाम उसका उतारा रखो, यह बात बुखारा के धर्मात्मा लोगों की तरह अरबाब की समझ म नहीं आइ। उसे सूद खाने म भी कोई एतराज नहीं है। यदि सूद हराम है तो उतारा नाम रख देने से वह हलाल नहीं हो सकता। गधे का नाम भेड़ रख देने से

भेड़ नहीं होता। हम बाप दादों से सूद का नाम सुनते आये हैं। वह शब्द हमें मालूम है। इस उतारा को लेकर हम क्या करें?"—श्वेतकेश ने कहा।

"तुम्हें कोई अधिकार नहीं कि धर्मशास्त्र के काम में जबान चलाओ", कहते हुए मुल्ला ने झगड़ा करना चाहा।

अरबाब ने बीच में पड़कर कहा—"मुल्लाजी, इन बातों का यहाँ समय नहीं है। आइये, जो काम करना है उसे देखें।"

मुल्ला खाकराह को और दम मारने की हिम्मत नहीं हुई और उसने दोनों हाथों को अपने सीने पर कसकर अरबाब की ओर निगाह करके, "अच्छा अच्छा" कहा और चुप हो रहा।

श्वेतकेश ने स्वतन्त्रतापूर्वक कहना शुरू किया—"इस साल तेरे कर्जदार होने का पाँचवाँ साल है। सूद का हिसाब लगाने से मूल के ऊपर ६ तंगा का तू और कर्जदार हो गया। पिछले साल एक भेड़ के नुकसान हो जाने का १० तंका कर्ज चढ़ा, जिसका एक तंका सूद हुआ। यदि अरबाब तिल तिल का हिसाब करे, तो इस सूद को भी हर साल मूल में मिलाकर उसका सूद जोड़ सकता है। फिर जो कर्ज तेरे ऊपर है, वह तेरे खून की कीमत से ज्यादा होगा। इसलिये तू बुरे लोगों की बात में मत पड़, दोस्त और दुश्मन की बात में न फँस। तेरी टाग्री बेवकूफ है। उसके फुसलाने में न आ और अपनी जबान जान को अपने-आप मुसीबत में न टाल। एक टुकड़ा रोटी, जो अरबाब तुझे देते हैं, उसके लिये धन्यवाद देकर दिलोजान से उनकी खिदमत करता रह। बेहूदी बातों और नालायकी से अपने चेहरे की गरमी को सर्द न कर। यह है हमारी तेरे लिये पिता की तरह की नसीहत।"

अदीना इस घटना तथा श्वेतकेशों की उपदेश भरी बातों को सुनकर, सोय से जागा-सा या नदी में से निकल आया-सा हो, सजग हो गया। उसने अच्छी तरह जान लिया कि खुशी-खुशी सीधे छुट्टी पाने का उसके लिये कोई रास्ता नहीं है। उसने मुक्ति पाने का ख्याल इस वक्त दिल से निकाल कर बेबस हो फिर अरबाब की खिदमत करनी शुरू की।

# मुक्ति

●

दीना ने दाँत पर दाँत रखकर, इस जेलखाने या अरबाब कमाल की नौकरी म, एक साल और बिताया। इस सारे समय म कोइ ऐसा मौका हाथ नहीं आया कि भागने का रास्ता निकलता, और वह किसी दूसरे इलाके म जाकर आज़ादी से जिन्दगी बसर करता। इसी समय एक ऐसी बात हुइ जिससे कि करातेगिन तहोबाला हा गया, और अदीना का भी भागने का रास्ता मिल गया। वह बात इस प्रकार है

बुखारा के अमीर आलम खाँ ने बुखारा और तिरमिज के बीच रेलवे-लाइन बनवाने का इरादा किया, जिसके लिये सस्ते मजदूरों की जरूरत पड़ी। मजदूरों को आकृष्ट करने के लिये उन्ह मजूरी के अतिरिक्त राह-खर्च भी देने का निश्चय किया गया। करातेगिन के हाकिम को जिसकी आमदनी बहुत कम थी, सूचना मिली। हाकिम को पैसा कमाने के लिये इससे अच्छा मौक़ा दूसरा कौन मिल सकता था? लोगों को इस बात का पता नहीं था। उसने बार जबर-दस्ती से आदमियों को जमा करके बुखारा भेजना शुरू किया। लोग घबराये हुए थे। उन्हें मालूम नहीं था कि उन्हें किस कालेपानी भेज दिया जायगा। इसलिये उन्होंने इस आफ्त से बचने के लिये साधारण व्यवहार के मुताबिक पैसा देकर छुटकारा लेना शुरू किया। जिनके पास कुछ पैसा था, वे हाकिम तथा उसके कारिन्दों को पैसा देकर छुट्टी पा गय। जो गरीब थे, लेकिन शरीर से जवान और बलिष्ट थे, उन्होंने कितने ही वर्षों के अनाथपन में पड़ने या दूसरे लोगों के शब्दों में आजीवन दासता भोगने से बचने के लिये बायों (धनियों) और

सूदखोरों के हाथों में अपने को बेंचकर रिश्वत के लिये पेसा जमा करके दिया। कुछ लोग अपने पुत्र या छोटी लड़की को बेचने पर मजबूर हुए। जिन लोगों के पास न पैसा था, न सन्तान थी, न शरीर में जवानी और ताक़त थी, वे भगवान पर भरोसा करके बुखारा जाने के लिये तैयार हुए। अरबाब कमाल ने भी इस अवस्था से फायदा उठाते हुए, अपने गाँव के बड़ों के सामने अदीना से कहा—"तुझे इस आफ्त से बचाने के लिये मैंने हाकिम को सौ तगा दिया। अब मेरा कर्ज तेरे ऊपर ज्यादा हो गया। यदि तू प्रलय तक भी जिन्दा रहे, और मेरी तथा मेरी सन्तान की खिदमत करता रहे, तो भी मेरा कर्ज अदा नहीं कर सक्ता।"

अरबाब की सारी बात झूठी थी। हाँ, उसने भी सौ तगा हाकिम को दिया था, लेकिन वह अदीना की रिहाई के लिये नहीं, बल्कि अपने २२ साला पुत्र इबाब को छुड़ाने के लिये।

पिछले तजर्बों के कारण अदीना अब समझदार हो गया था, और अरबाब कमाल की बातों और उसकी हरकता से अच्छी तरह वाकिफ था, नहीं तो वह अरबाब से कहता, 'मेरी छुट्टी के लिय बेकार आप कष्ट न उठायें, पैसा न दें। मुझे अपनी क़िस्मत पर छोड़ दें, जिसम मैं दूसरे जानेवालों के साथ इस इलाके से चल दूँ। अगर इसका परिणाम मरना भी हो, तो भी मैं उसके लिये राजी हूँ। यही दौल्त मेरे लिये बहुत है कि मरने से पहिले तेरे-जैसे अत्याचारी के हाथ से छुटकारा पा जाऊँ।'

लेकिन जो बातें उसके दिल में आ रही थीं, उन्हें उसने अरबाब के सामने प्रगट नहीं किया, बल्कि उसने ऐसा रुख दिखलाया कि मानो अरबाब की इस कृपा के लिये वह बहुत ही कृतज्ञ और प्रसन्न है। लेकिन भीतर से अब वह भागने का रास्ता ढूँढने लगा था।

जमाने की तक्लीफों ने छोटी उम्र में ही अदीना को तजर्बेकार और समझदार बना दिया था। इस बात के कुछ दिनों बाद मुक्ति पाने

के ख्याल से ही उसने अपने को बीमार बना लिया। उसने यह नाटक इतनी अच्छी तरह से खेला कि अरबाब कमाल को मालूम होने लगा कि अदीना आज या कल इस दुनिया से चला ही चाहता है। उसने अपने पुत्र इबाद से कहा—"पुत्र, जल्दी ही एक दो आदमियों को लेकर इस मुर्दे को इसकी नानी के यहाँ रख आ। अगर यह यहाँ मरा, तो कब्र और कफन का खर्च भी हमारे ऊपर पड़ेगा।"

इबाद भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये गाँव के दो-तीन आदमियों को बुलाकर दो डंडों पर रस्सी बाँध, बीमार अदीना को उस पर उठवा कर बीबी आइशा के घर पहुँचा आया। बीबी आइशा ने नाती को इस हालत में देखकर क्षण भर के लिये होश-चैन गंवा दिया। होश आने पर रोना धोना शुरू किया। इबाद के चले जाने के बाद अदीना ने सताप की साँस ले आँख खोलकर नानी से कहा—"बीबी जान, बेकार का रोना धोना मत करो और मुझे परेशानी में न डालो। मैं वस्तुतः बीमार नहीं हूँ, बल्कि उस जल्लाद (अरबाब कमाल) के हाथ से मुक्ति पाने के लिये मैंने अपने को बीमार बनाया है।"

अदीना ने कुछ सुस्ताकर फिर कहा—"बचाव का उपाय यही है कि इसी रात मैं उठकर इस इलाके से चला जाऊँ। इस भेद को एक सप्ताह तक किसी से न कहना। जो कोई पूछे, उसे बतलाना कि मैं सख्त बीमार हूँ। एक सप्ताह बाद जो कोई पूछे उससे कह देना कि अच्छा होकर मैं अपने मालिक के घर चला गया।"

बीबी आइशा ने एक एक जो यह बात सुनी, जिसका भय था, अपनी इकलौती सतान का सदा के लिये वियोग, तो वह सावन भादों की तरह आँखों से आँसू बहाने लगीं, और कहने लगी—"तेरा जाना मेरा मरना है। यह न समझ कि इस बुढ़ापे में तेरा अलग होना मेरे लिये सह्य होगा। यह मानो तेरे हाथ से मरना है।"

अदीना ने हजारों तरह से ढारस बंधाते, समझाते हुए दादी से

कहा—"नीनी जान, बिल्कुल चिंता मत कर, यदि मैं इस इलाके से सही-सलामत चला गया, तो थोड़े ही समय म काफी धन-सपत्ति स्थायी बनाकर तेरी सेवा में चला आऊँगा। उस समय गुल नीनी के साथ मेरा निकाह करके एक बच्चे की जगह दो बच्चे बनाकर अपनी मनो-कामना पूरी करना। अगर जिन्दगी है, तो दादी को दीदार मिलेगा। यदि अधीर होकर बिना सोचे समझे रोना धोना करेगी, तो मेरा भेद खुल जायगा, और जल्दी दुश्मन के हाथ म फिर पड़ जाऊँगा। ऐसी हालत म वह आततायी (अरबाब कमाल) दुनिया म मुझे जिन्दा न छोड़ेगा। भेड़ के नुकसान होने और हाकिम से छुट्टी पानेवाले कर्ज की बात तुझे भूली न होगी। उससे अच्छी तरह जाहिर है कि इस जल्लाद के लिये मनुष्य का मारना भेड़ के मारने से भी आसान है। अगर मेरा भेद खुल गया, तो जालिम के हाथ से मेरी जान जायगी, और मेरी जुदाइ सदा के लिये तुझे सहनी पड़ेगी। फिर तेरे दुख का काइ हटा न सकेगा।"

बेचारा नीनी आइशा अरबाब के काम और स्वभाव से अच्छा तरह वाकिफ था। अपने तरुण नाती की अकलमदी भरी बातों का सुनकर, उसने अपने को सँभाला और समझाया कि चद रोज की जुदाइ के ज़हर क बदले चिरकाल तक मिलन की शहद हाथ आयगी, और यदि इस समय धीरज न धरा, तो रहस्य खुलने पर सदा की जुदाइ भागनी पडगी। यह साचकर, बेबस हो भय के साथ उसने सब्र और धीरज से काम लेने का निश्चय किया।

नाना का धीरज धराकर, अदीना ने एक फटा पुराना चप्पल कहीं से पैदा किया, और एक खलीते में कुछ रूखा-सूखा रोटी दाना सफर क लिये तैयार किया। जिस वक्त रात आई, और दुनिया में चारों आर अँधेरा छा गया, उस समय पीठ पर झोले का रख हाथ म डडा ले, उसने फरगाना का रास्ता लिया। दो दिन चलने के बाद वह एक पहाड़ के दर्रे म पहुँचा। बुखारा की याना से भागे हुए मजूरों के पीछे

हाकिम के चपरासी दौड़ धूप करके बड़ी मुश्किल से उन्हें घेर पाये थे। अदीना ने भी अपने को उसी गिरोह के भीतर डाल दिया।

हाकिम के चपरासी सूर्योदय के पहिले ही उठ बैठे। उन्होने रास्ते के लिये लाइ रोटी और यख्नी से अपने पेट को खूब भरा। इसके बाद उन्होंने भेड़ों के झुड की तरह मजदूरों की जमात को सामने करके फरगाना की ओर हाँका। उन लोगों म अधिकतर बूढ़े, दुर्बल और भूखे थे।

जो रास्ता चलने म असमर्थ होता, उसके सिर पर कोडे तथा डडे पड़ने के लिये तैयार थे। वस्तुत यह मजदूरों की जमात भेड़ों के गल्ले जैसी ही थी। यदि अतर था, तो यही कि अगर भेड़ चल नहीं पाती, या बीमार हो जातीं, तो उसे गधे की पीठ पर लाद देते, किंतु इन मजदूरो मे जो कोइ बीमार होता या पिछड जाते तो उसे आगे चलाने के लिये तब तक पीटते रहते, जब तक कि वह रास्ते म मर न जाता।

अत में कितने ही लोगों के रास्ते मे मर जाने या मरने मे भी बढकर बीमार और कमजोरी में पड़ जाने के बाद, बाकी किसी तरह फरगाना पहुँचे। अदीना भी जो जवान और बलिष्ठ था, सलीते के सूखे टुकड़ों को खाते खाते किसी तरह उस आफत की नदी के किनारे सही सलामत पहुँच गया।

अदीना कुछ दिन इधर उधर घूमता फिरता रहा, क्योंकि वह दूसरे मजदूरों की तरह नाम लिखाया हुआ नहीं था। फरगाना म उसने देखा कि उसके स्वदेशी कितने ही बोझा ढुलाइ करते थे। कोइ कोइ चौकीदारी भी करते थ, और कितने ही दूसरा कोइ काम कर रहे थे। उनमे अदीजान के एक कपास की आटनी मिल का पता लगा। उसने वहाँ जाकर नौकरी शुरू की। यह घटना सन् १३३७ हिजरी ( सन् १६१४ ई० ) की है।

---

# निछोह

अदीना ने अपनी नानी बीबी आइशा को धीरज और तसल्ली देकर रवाना की थी। आपको यह विश्वास नहीं होना चाहिये कि अदीना की दिलासा देनेवाली बातों से बीबी आइशा को सचमुच तसल्ली हो गई। वह नहीं हो सकता था। एक ७० साला बुढिया, जिसके हाथ की लाठी यही एकमात्र नाती था, कैसे धीरज धर सकती थी, जबकि वह उससे दूर हो गया था? न उसे वह सहारा दे सकता था, न उसकी बीमारी में सेवा शुश्रूषा कर सकता था, न प्राणांत के समय सूखते तालू में दो बूँद पानी डाल सकता था, और न सदा की निद्रा के लंबे सफर के लिये प्रयाण करते समय उसके कफ़न दफ़न का इन्तजाम कर सकता था। कौन जानता है कि उसका वह इकलौता नाती परदेश में जाकर मर न जायगा? यदि वह जिन्दा भी रहे, तो भी शायद देश लौटने के लिये रास्ते का खर्च भी उसे न मिले। यदि सामान कुछ इकट्ठा भी कर सके, तो भी न मालूम कितने वर्ष बाद। बहुत संभव है कि उस समय तक यह ७० साला बुढिया अपने पैरों को कब्र में रख चुके।

इसी तरह के विचारों ने बीबी आइशा के धैर्य को बँधने नहीं दिया। अदीना के घर से रवाना होने के कुछ ही घंटा बाद बीबी आइशा ने विकल होकर, हाय हाय करके रोने चिल्लाने का ख्याल किया। लेकिन इससे अदीना का रहस्य खुल जायगा, और नाहक बेचारा एक बड़ी आफत में फँस जायगा, यह ख्याल करके, बुढ़िया ने अपने दिल के दर्द को भीतर ही रखकर उसे ओठों पर आने नहीं दिया। लेकिन ओठ का बदकर नाती के बिछुड़ने की आग

भीतर ही भीतर और प्रचण्ड हो गई। उसने अपनी दोनों आँखों से खून के आँसू बरसाकर, उस आग को ठंडा करना चाहा। लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ—

'खून के आँसू बुझा पाये न मेरे दिल की आग,
है ये, वह तन्दूर जो नारों में भी जलता रहा।'

बारे, बीबी आइशा ने एक सप्ताह तक मुँह से आवाज न निकाली। आग से छुए बालों की तरह वह अपने भीतर-ही भीतर झुलसती-उलझती रही। आग की ज्वाला तो ऊपर नहीं उठने पाई, लेकिन भुस में पड़ी चिनगारी की तरह वह भीतर ही भीतर सुलगती रही।

'न इतनी ताब थी कि दिल को दे सके करार भी,
मगर मजाल क्या जो मुँह से उफ् भी कर सके जरा।'

अदीना के बीमार होने से एक सप्ताह बाद तक अरबाब कमाल को उसके मरने की खबर नहीं मिली। उसने हालचाल जानने के लिए अपने पुत्र इबाद से कहा—"बा, अदीना के घर से खबर ले आ। यदि जिन्दा है, और चलने फिरने की ताकत रखता है, तो कहना कि आकर भेड़-बकरियाँ चराने ले जाय, नहीं तो जल्दी कोई उपाय करें जिसमें कि भेड़ें बिना चरे दुबली न हो जायँ। अभी भी उनका मांस और चरबी बहुत घट गई है।"

बाप की आज्ञा के अनुसार इबाद ने बीबी आइशा के घर जाकर अदीना के बारे में पूछा। बीबी आइशा ने उसी तरह जवाब दिया, जैसा कि चलते वक्त अदीना ने उसे सिखलाया था—"इधर पिछले दिनों उसकी हालत कुछ बेहतर हो गई थी, और वह बिस्तर से उठने लगा था, दो दिन हुए वह आपके घर गया, तबसे लौटा नहीं।"

यह कहकर, विकल-सी होकर, बीबी आइशा ने फिर कहा—"लेकिन तुम क्या अपने घर में नहीं थे, किसी और जगह से आ रहे हो, जो अदीना के बारे में मुझसे पूछ रहे हो?"

इनाद ने इस सवाल-जवाब से अचरज में पड़कर कहा—"नहीं, मैं अपने ही घर से इस वक्त आप की आज्ञा के अनुसार अदीना का हाल-चाल पूछने के लिये आया हूँ। उस रोज, जब हम उसे यहाँ पर छोड़ गये थे, तब से वह हमारे घर नहीं गया, कहाँ गया वह? अचरज की बात है।"

बीबी आइशा ने अपने पाट को खूब अच्छी तरह अदा किया। नाती के जाने के दिन से लेकर आज तक रहस्य को छिपा रखा था, और सिखाइ पढ़ाइ बात को भी बड़ी चतुराइ के साथ उसने इनाद के सामने रखा। इस समय खुलकर रोने धोने और दिल को दुख से खाली करने का कोइ अर्थ नहीं था, लेकिन इनाद के आने के बहाने से उसने खूब रोना शुरू किया। बीबी आइशा ने इनाद के सामने ऐसा अभिनय किया कि मानो वह अदीना को मालिक के घर गया समझती थी, और अभी जाना कि अदीना वहाँ नहीं है। जैसे कि गुम हुए पुत्र की खबर पाने से मातायें अधीर हो जाती हैं, उसी तरह होकर बीबी आइशा ने कहा—"मेरे सिर पर यह कैसी मुसीबत आ गइ है? इन दो दिनों में मेरी आँखों की रोशनी के ऊपर क्या-क्या बीती है! अगर वह तुम्हारे घर नहीं गया तो अवश्य उसे यहाँ लौट आना चाहिये था। कहीं किसी खड्ड में गिरकर उसको कुछ हो तो नहीं गया? या उसकी कमजोरी से फायदा उठाकर भेड़ियों ने उसे खा तो नहीं डाला? या भूत (देव) ने तो उस पर कोइ आफत नहीं ढाली, या कोई दुश्मन बदला लेने के लिये उसे पकड़ तो नहीं ले गया? हाय आफत! हाय अदीना, मेरी जान! हाय मेरी आँख और चिराग! हाय मेरे दिल की ताकत! हाय मेरी सुनसान रात के साथी! हाय मेरे बीमारी के दिनों के देखने भालनेवाले हाय! हाय!! हाय!"

हाँ, बीबी आइशा ने आज ही अपने बच्चे को खोया। वह ऐसी विह्वल हो उठी, मानो उसे पाने की उम्मीद न रह गयी हो। यद्यपि पोते को गये एक सप्ताह हो गया था, किन्तु जैसा कि पहिले कहा गया

है, उसे इस विछोह को प्रकट करने का मौका नहीं मिला था। अब उसे अवसर मिला था। अब उसे अवसर मिला था कि अपने बालों को नोचे और छाती को पीटे। इस प्रकार बीबी आइशा ने हाय हाय करते रोते धोते निम्न गजल के अनुसार शोक प्रकट करना शुरू किया—

'जब कि वह प्यारा आँखों का उजाला हाथ से चला गया,
दिल मे धीरज, प्राणों के सुख शरीर की शक्ति चली गई।
वह फूल आँखों से दूर हो गया, रोने की ताकत नहीं रही,
चिल्लानेवाली बुलबुल हूँ, जिसे क्रदन करने की शक्ति नहीं।

इस निष्ठुर दुनिया में मेरा बस यही एक सहारा था,
वह दिल का सहारा चला गया, मेरी दुनिया लुट गई।
वह गया और मेरे दिलो जान का आनन्द हाथ से चला गया,
सक्षेप म में कहूँ कि मेरा प्राण निकल गया।'

इबाद इस रोने धोने और स्याप का घण्टे भर तक देखता रहा। फिर लौट कर उसने अपने बाप से सब कुछ कहा। जबबार कमाल ने अपने ५० साल की जिन्दगी मे अदीना-जैसे कितने ही निगेह आदमियों को धोखा फरेब देकर अपनी नौकरी म रखा था। उनम से भी अधिकाश ने अत म इसी तरह भागकर अपनी जान बचाई थी। उसने जल्दी ही समझ लिया कि अदीना भी भाग गया है, और फिर अपने बेटे इबाद से कहा—'अफसोस, हजार अफसोस कि मुफ्त में ही हाथ मे शिकार निकल गया। अवश्य वह नमकहराम इस इलाके से चला गया। तो भी उसकी नानी के पास चलकर पता लगाऊँ। शायद कोई बात मालूम हो। अगर अदीना को हाथ मे न कर सकूँ, तो इस बूढ़ी को ही लाठी पकड़ घसीट लाऊँ।"

जबबार अदीना के घर गया, तो बीबी आइशा ने फिर रोना धोना शुरू किया। जबबार को देखकर, वह अपनी आस्तीन से आँखों के आँसुओं को पोंछ, रोना बद कर, बात करने के ख्याल से सलाम कर,

अरबाब की ओर निगाह किये गूंगी हो गई। अरबाब ने सलाम का जवाब देने की जगह बहुत गुस्से में आकर पूछा—"अदीना कहाँ है?"

बीबी आइशा ने बड़ी नरमी और मुलायमियत से किन्तु बहुत अधीर और विकल होकर सारी गढ़ी हुई बात को दुहरा दिया। अरबाब ने कहा—"तेरी जैसी राक्षसी औरतों की बहानेबाजी को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। अवश्य तूने ही अदीना को बुरे रास्ते पर डाला है, और अब उसके बचाने का बहाना बनाकर मुझसे बनावटी बातें कह रही है। जरूर अदीना तेरे बताये रास्ते और उपाय के अनुसार भागा है। ठीक बतला, वह कब गया, और कहाँ जाने का इरादा रखता था? जहाँ तक हो सकेगा, मैं उसे पकड़ूँगा। तभी तू मेरे पंजे से छूट सकेगी, नहीं तो अदीना की जगह तू मेरे हाथ में पड़कर इस डंडे से (हाथ के डंडे की ओर इशारा कर) मारी जायगी!"

बीबी आइशा ने देखा कि इस क्रूर राक्षस के हाथ से नरम नरम बातें करने से छुट्टी नहीं मिल सकती। इसीलिये दुश्मन को हमला करने का अवसर न दे, चाहे जो हो, सोचकर, स्वयं हल्ला मचाना शुरू कर दिया—"ओ अरबाब, मुझे विश्वास है कि तूने मेरे लड़के को मार कर कहीं पर दबा दिया है, और इस समय मेरे सामने झूठी बातें बना रहा है। तू मत समझ कि मुझे हाकिम और काजी के घर का रास्ता मालूम नहीं है। अभी हाकिम के घर जाता हूँ, और इन्साफ करने के लिये अर्जी देकर तहकीकची (जाँच करनेवाले) और जसावल (दारोगा) को लाती हूँ। तू देखेगा कि कैसा प्रलय तेरे सिर पर मचता है!" यह कहकर, चिढ़ी चिढ़ी हो गई। अपनी चादर को सिर पर रख कर वह चल पड़ी।

अरबाब कमाल बीबी आइशा की इस गतिविधि को देखकर चिंता में पड़ गया। वह अच्छी तरह जानता था कि हाकिम और काजी को भले ही अदीना के मरने की परवाह न हो, लेकिन सच्चा या झूठा मामला उनके हाथ में आ जाये, तो वह उनके लिये पैसा कमाने का

एक बहुत अच्छा बहाना है। 'यदि यह औरत जाकर हाकिम और काजी के पास नालिश करेगी, तो उसी वक्त उनके चपरासी और नौकर बिना पूछ-ताछ किये ही, अदीना को मेरे हाथ से मारा गया मानकर मुझसे एक बड़ी रकम लेना चाहेंगे। हाँ, यह जरूर है कि यदि पीछे अदीना हाथ में आ गया, तो उसके बारे में पूछ-ताछ करके सदा के लिये उसे दास बनाकर मेरे सिपुर्द कर देंगे।'

लेकिन अदीना इस जगह नहीं था कि करातेगिन के हाकिमों का हाथ उसके पास तक पहुँचता।

अरबाब कमाल ने भीतर से घबराकर भी, बाहर से अपने गर्व को जरा भी खर्व किये बिना, डाँटकर कहा—"जहाँ जाना हो जा। मुझे किसी का डर नहीं है।"

लेकिन यह सिर्फ ऊपर-ही-ऊपर था। भीतर से तो वह बहुत त्रस्त और भयभीत हो गया था। उसने टोले-मोहल्ले के दो एक श्वेतकेशों को इस बात की सूचना दे, बीबी आइशा का रोकने के लिये प्रार्थना की। गाँव के बड़े बूढ़ों ने जाकर, बीबी आइशा को रोका। फिर अरबाब की ओर से उसे विश्वास दिलाया कि वह उसके ऊपर कोई जोर-जुल्म नहीं करेगा। बीबी आइशा को तो पता था ही कि अदीना को अरबाब ने मारा नहीं है। उसने बुड्ढों की प्रार्थना स्वीकार करके कहा—"आप बुजुर्गों का ख्याल करके मैं हाकिमखाना नहीं जा रही हूँ। अपने गुम हुए यूसुफ की स्मृति में घर में बैठे बैठे आँसू बहाऊँगी।"

## स्वाभाविक सुन्दरता

●

यद आपने पर्वत स्थली का दृश्य देखा हो। शायद आपमें से किसी ने जगल के किनारे या पहाड़ी दर्रे को वर्षाकाल में देखा हो, जब कि पहाड़ों के किनारे की हरित वन-स्थली में वर्षा पहुँचती है, और बसत की सुन्दर हवा भी उसका साथ देती है, उस समय आपके दिमाग म एक कोमल सुगध भर जाती है। यह वह खुशबू है, जिसे अपनी शक्ति भर आप छोड़ना नहीं चाहेंगे, उस सुगद स्पर्शवाली कोमल हवा को हटाना नहीं चाहेंगे। जिस समय वह शीतल, मद, सुगध हवा चल रही है, क्षण-क्षण आपका प्राण ताजा होता जाता है, पल-पल आपका हृदय परिशुद्ध होता जाता है। आँखें खोलकर देखिये—एक ओर चश्मा है, चमन है, स्वय खिले लाल, सफेद या पीले रग के लाला खडे हैं, और दूसरी तरफ पहाड़ के स्वयभू वृक्ष दयार, अखरोट, इसगाई, चारमग्न और विस्ता के एक-दूसरे से उलझे हुए हैं अपनी शाखायें फैलाय। ऊपर की ओर नजर करने पर जहाँ तक दृष्टि जाती है, स्वच्छ रग विरगे पाषाण और चट्टान के चारों तरफ नाना प्रकार के फूल-पत्तोंवाले पौधों से घिरे शोभा दे रहे हैं। उनके बीच में नहरें या नाले बह रहे हैं, जिनका जल शीशे और स्फटिक की तरह साफ है, और सरदी में जमा रहता है, और गरमी में धार बाँधकर चलता दिखाइ पड़ता है। यह नहरें-छोटे-छोटे चश्मों से निकली हैं, जो गहरे दर्रों में तीन-चार कोस के बाद अपनी धार को बहुत तेज करके चलने लगती है। इस सारे दृश्य को देखकर आप समझेंगे कि हम किसी दूसरी दुनिया की सैर कर रहे हैं। यहाँ जगह-

जगह बुलबुलों तथा दूसरे सुदर पक्षियों के कलरव आपके मन पर प्रभाव डालकर सारे सुदर नगर के सगीत को भुलवा देंगे।

इन सुन्दर चरागाहों में बकरियों और उनके बच्चों के खेल-कूद, भेड़ों और मेमनों की दौड़ धूप, हरिनों और हरिन शावकों की कुलाँचों और कलाबाजियों को देखकर आपको शहरों के आँगनों में तरुणी कन्याओं और दुल्हनों का नाच-रग याद आयेगा। इस प्राकृतिक सौंदर्य के दृश्य को आपने बिना पैसे और बिना किसी के हाथ की तकलीफ के कितने मनोहर और चित्ताकर्षक रूप में देखा है! इनके मुकाबले में शहरों के बाग-बगीचों के सजाने बनाने मे कितना अधिक धन और कितनी ज्यादा मेहनत करनी पड़ता है, लेकिन तो भी वे इस स्वाभाविक सौंदर्य का मुकाबला नहीं कर सकते हैं।

मेरी कथा की नायिका गुल बीबी का स्मरण उस बचपन के समय म पहिले आ चुका है। वह सभी सौंदर्य और खूबियों से भरी थी। किन्तु उसका सौंदर्य शहरी सौंदर्य से उसी तरह भेद रखता था, जैसे कि स्वाभाविक पर्वतस्थली का सौंदर्य आदमी के हाथों से बनाये बागों के सौंदर्य से रखता है। गुल बीबी के कपड़े देबा के न थे, न उसकी पोशाक कतान की थी। न जरबफ्त कुर्ता उसके तन पर था और न सिर पर मखमल बँधा हुआ था। हीरा-मोतियों की माला उसके गले म नहीं थी, न हाथों म शुद्ध सोने का ककन, और न अँगुली में पद्मराग की अँगूठी ही थी। ये सभी सौंदर्य के बढानेवाले भूषण और वस्तु गुल बीबी जैसी एक अनाथ तथा पहाड़ की लड़की गरीब को देखने को भी कहाँ मिल सकते थे? लेकिन गुल बीबी की सुन्दरता और शाभा ऐसी थी, जो कि पहाड़ों म भी दुर्लभ थी। नगर की रमणियाँ सदा सुरमा, गाजा, श्वेत और रक्तचूर्ण से अपने को सँवारती रहती हैं, किन्तु यह अनिन्द्य सौंदर्य उनके पास कहाँ?

इस सारे सौंदर्य के होने के बाद भी गुल बीबी के मन में वे विचार न थे, जो की नगर की लड़कियों म अपने सौंदर्य को दिखलाने और

दुनिया को अपने हाथ में करने के लिये होता है। पहाड़ी तरुणियों का दिल और दृष्टि साफ होती है, वे बहुत सीधी-सादी होती हैं, उन्हें अपने बनाव-शृंगार का कोई ख्याल नहीं होता।

इस सारे भोलेपन और बेखबरी के होते भी गुल बीबी का दिल हमेशा अदीना से बँधा रहता था। उसकी माँ और दादी ने कितनी ही बार कहा था कि अदीना से उसकी शादी होगी, वही उसका जीवन-संगी बनेगा। इन बातों को सुन-सुनकर गुल बीबी ने भी अदीना को अपना जीवनसाथी मान लिया था। पहिले यह ख्याल छोटे बच्चों-जैसा मासूम ही था, लेकिन धीरे धीरे वह प्रेम और इश्क के रूप में बदल गया। जब अदीना १७–१८ साल का था, तब गुलबीबी भी १५–१६ साल की हो गई थी। इस समय सचमुच वे दोनों एक दूसरे के प्रेमी बन चुके थे। लेकिन पूर्वी देशों की नीति शिक्षा इस बात की आज्ञा नहीं देती कि वे अपने भीतरी भावों को एक-दूसरे के ऊपर इतनी जल्दी प्रकट करते। आशिकों को चोरी छिप नज़र डाल भर लेना ही वहाँ विहित है। यह नजर ही दूती बनकर, एक-दूसरे के विचारों को उनके पास पहुँचाने का काम करती है। दिल की गरमी, रंग का उड़ना, अंग का कँपना, ठंडी साँस वक्त बेवक्त खींचना, अपने भावों के प्रकट करने के उनके पास यही साधन थे। अब ख्याल कीजिये कि इस तरह के प्रेमी-युगल जब वियोग में पड़ते हैं और उन्हें नहीं मालूम होता कि आगे कैसे दिनों का उन्हें सामना पड़ेगा तो उनकी क्या हालत होगी।

अब अदीना मर्द हो गया था। उसकी उम्र भी गुल बीबी की अपेक्षा ज्यादा थी, उसका प्रेम भी आगे बढ़ा था, लेकिन उसे अपनी बुद्धि को अपने प्रेम के ऊपर रखना पड़ता था। अदीना के सामने दो कठिनाइयाँ थीं एक देश में रहकर अरबाब कमाल के हाथों जान गँवाना और दूसरी वहाँ से भाग जाना। दोनों ही तरह से उसे अपनी प्रेमिका से अलग होना था। लेकिन पहिली जुदाई अनन्तकाल की थी, जिसमें फिर मिलने की कोई आशा नहीं थी, और दूसरी जुदाई में पुनर्मिलन

की आशा थी। इसीलिये उसने भाग जाना ही पसन्द किया, जिसमें कि मौका पा, लौटकर फिर उसे देख सके। अदीना ने चन्द सालों की जुदाई को भविष्य के मिलन की आशा से स्वीकार किया, यद्यपि वह उसके लिए असह्य थी।

लेकिन बेचारी गुल बीबी की हालत बिलकुल दूसरी ही थी। वह प्रेम की पीर से इतनी बेचैन थी कि बुद्धि उसे कोई सहारा नहीं दे सकती थी। दूसरे यह कि उसका जीवन अदीना की अपेक्षा अधिक कठिन था। अदीना के लिये वह अपने प्राणों से भी प्यारी थी। वह उसका एकनिष्ठ पुजारी था। गुल बीबी के माता पिता मर चुके थे। नानी कब्र म पैर लटकाये हुए थी। धोखेबाज दुश्मन चारों ओर बिना इच्छा के उसकी इज्ज़त लूटने के लिये तैयार थे। ऐसे समय अदीना का अलग होना उसके लिये एक भयकर बात थी। ऐसी स्थिति म एक जवान लड़की की जिन्दगी कितनी भयाकुल हो जाती है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। यह और भी मुश्किल बात थी, कि गुल बीबी का कोई एसा दोस्त नहीं था, जिसके सामने वह खुलकर अपने दिल के दर्द रख सकती। उसके दिल में लज्जा इतनी थी कि वह अपनी नानी के सामने हाय-हाय करके, रोकर दिल का दर्द हल्का भी न कर सकती थी। हाँ, इससे दुस्सह कोइ बात नहीं हो सकती, जबकि उसके दिल में अपने प्रेमी की जुदाई की आग जल रही हो, और वह दिल खोल कर रो भी न सके। उसे इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि एक कोने म जाकर, मुँह से आवाज निकाले बिना भीतर ही भीतर सिस कियाँ भरे।

गुल बीबी के लिये जो असह्य पीड़ा थी, उसमें केवल जुदाई का दर्द और बिछोह का दाग ही नहीं था, बल्कि वह डरती थी कि कहीं उसका अदीना परदेश से जल्दी न लौटे, और बीच में नानी भी दुनिया को छोड़ सिधार न जायँ। फिर तो गाँव के जालिम, अत्याचारी, जिसका रग-ढग और चाल-व्यवहार गुल बीबी से छिपा नहीं था, मनमानी करने

पर उतारू हो जायँगे, और जोर-जुल्म से किसी अपरिचित आदमी के पजे में उसे फँसाकर कहेंगे कि 'यही तेरा जीवन-साथी है।' इस प्रकार तो वह सर्वदा के लिये कैदखाने में बन्द कर दी जायगी। फिर बेचारी क्या कर सकेगी? यह भी उतना असह्य न था। सबसे भयकर बात यह थी कि अदीना जब इस बात को सुनेगा, तो समझेगा कि 'गुल बीबी ने अपनी इच्छा से दूसरे को अपना दिल दे दिया। उसने मेरी मुहब्बत को पाँव-तले रौंद दिया।'

कभी-कभी उसके दिल में और दूसरी बातें भी उठती थीं। हो सकता है कि अब जब कि अदीना तुर्किस्तान चला गया है, वहीं उसको किसी से मुहब्बत हो जाय, और शायद धीरे धीरे गुल बीबी उसके दिल से उतर जाय। यदि अदीना का दिल किसी दूसरे के प्रेम-पाश में बँध जायगा और उसका हाथ, जिसे गुल बीबी अपने कंठ की माला समझती है, किसी दूसरे के गले में पड़ जायगा, तब फिर अगर उसके मन में गुल बीबी का ख्याल भी आएगा, तो वह उसे घृणा की दृष्टि से ही देखेगा। यह पीड़ाएँ थीं, जिनको पत्थर का दिल भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। भला उसे गुल बीबी-जैसी अनुभवहीन, सीधी-सादी ताजिक तरुणी कैसे सहन कर सकती थी—

'अपने सारे पत्थर के दिल और कड़ाई के होते भी पहाड़
इस ज्वाला को सहन करने की शक्ति नहीं रख सकता।
गम और रंज से चूर-चूर आशिक का दिल
किस प्रकार जुदाई में पड़ा धीरज धरे?'

———

## कपास का कारखाना

ओंदीजान में रेल की सड़क के पास लम्बे-चौड़े मैदान में एक बहुत ऊँची इमारत दिखाई पड़ती थी। इस इमारत की दीवारें कुछ ऊँची किन्तु अधिक आकर्षक न थीं, तो भी आकाश से बातें करनेवाली उसकी चिमनी बराबर काले बादल की तरह अपने साँस को ऊपर की ओर फेंक रही थी और मीलों दूर से देखनेवाले के ध्यान को अपनी ओर खींचती थी। इस इमारत में दो दरवाजे थे, जिनमें से एक बहुत बड़ा था और कपास से लदी गाड़ियों के आने के वक्त ही खुलता था और दूसरा एक गज चौड़ा, दो गज ऊँचा, भीतर-बाहर आने जानेवालों के लिये सदा खुला रहता था।

यदि आपको कारखाना देखने की इच्छा है, तो कृपा करके इसी छोटे दरवाजे से भीतर आइये। यहाँ दाहिनी ओर आप एक ४० गज ऊँची इमारत देखेंगे। यद्यपि यह इमारत बहुत से दरवाजोंवाली है, लेकिन आप सामने के दरवाजे से भीतर चलिए, जिससे कि कारखाने को एक सिरे से देख सकें। जिस वक्त आप इस इमारत के भीतर पहुँचेंगे, सामने तख्तों का बना एक ज़ीना मिलेगा। कष्ट करके इसी जीने पर चढ़कर ऊपर चलिये। कोठे पर पहुँचने के बाद एक बड़ा दरवाजा दिखाई पड़ेगा। इसके साथ एक लम्बे-चौड़े तख्तों का भारी जीना लगा हुआ है, जो सीधे बाहर की ओर ज़मीन पर चला गया है। इस बड़े जीने पर थोड़ी देर खड़े होकर देखिये। वहाँ ताज़िक, उजबक तथा दूसरी जातियों के मजदूर ढेर किये हुए कपास के बोझों को सिर पर उठाकर, इसी ज़ीने से चढ़कर कोठे पर ला रहे हैं। कोठे के मजदूर

इस कपास को नीचे की ओर जाते एक बड़े बक्स में डाल रहे हैं। मैं आपको सलाह दूँगा कि इस दृश्य का सरसरी तौर से आँखों के सामने से गुजारिये। यहाँ आप देखेंगे कि मानव-सन्तान किस तरह मनों भारी तथा ५ गज ऊँचे कपास के ढेर को सिर पर उठाकर बीस-पचीस सीढ़ियों को पार करते, मर मर के ऊपर चढ़ा रहे हैं। ये लोग इस काम को केवल एक बार नहीं करते, बल्कि प्रति वर्ष सात-आठ महीना कपास की फसल के समय हर रोज १२ घण्टा इसी तरह बोझों को उठाते चढ़ाते रहते हैं।

कपास को बड़े बस्ते से निकालना भी आसान काम नहीं है। खाली करनेवाले मजूर चाकू से बस्ते चीरकर, बड़ी आसानी से नीचे की ओर गिराते हैं। किन्तु उसकी वजह से हवा निचले घर से धूल और गर्द फौव्वारे की तरह ऊपर की तरफ फेंकती है। बेचारे मजदूर १२ घंटे तक इस धूल को फाँकते रहते हैं। यदि आप सीढ़ी के सिरे पर न हों, उनके पास होते, तो आपके ऊपर भी धूल-गर्द छा जाती, साँस के द्वारा आपके भीतर जाकर वह आपको बेहोश कर देती, और आप ज़मीन पर गिर पड़ते। अब ज़रा ख्याल कीजिये, आप जैसा ही मानव इस जगह एक दो घंटा नहीं, १२ घंटा प्रति दिन खड़ा रहता है। अगर वह ऐसा न करे, तो उसके लिये भूखों मरने के सिवा कोई चारा नहीं। कोठे पर जो धूल-गर्द उड़ रही है, उसे देखकर यहाँ अधिक देर खड़ा रहना अच्छा नहीं है। कृपा करके इस दूसरे जीने से नीचे उतरिये, और यहाँ के दृश्य को देखिये।

इस घर में एक छोर से दूसरे छोर तक चर्खियाँ और धुनकियाँ लगी हैं। सामने एक बहुत बड़ा फौलाद का चक्का घूम रहा है। यह चक्का एक बड़े तस्मे द्वारा, जिसका सिरा दूसरी मशीन में लगा हुआ है, घुमाया जा रहा है। तस्मे (बेल्ट) का एक सिरा नीचे के घर में दूसरे चक्के की गर्दन में लिपटा है, जिससे लगा एक और तस्मा मशीन-घर की एक मशीन से फँसा है। वहीं से असली चालक शक्ति आ रही है।

इस घर में और भी कितने ही चक्के दिखलाई पड़ते हैं, लेकिन वे बड़े चक्के की अपेक्षा छोटे हैं। यह सभी तस्मों-द्वारा उस बड़े चक्के के घूमने से चालित हो रहे हैं। छोटे चक्के दो पंक्तियों में स्थापित हैं। इनका काम है ओटनेवाली मशीनों को गति देना, जो बिनौला अलग कर, रूई को साफ करती हैं। दाँतवाले घूमते दो बेलन अपने छोटे से छेद के भीतर से कपास को बाहर जाने देते हैं। इस घर के मजूरों का काम बिनौला अलग करना है। यहाँ से ओटी हुई कपास दूसरे रास्ते से गाँठ बाँधनेवाले यन्त्र के पास पहुँचती है। अलग किया हुआ बिनौला भी एक खास रास्ते से नीचे के तहखाने में गिरता है, जहाँ दूसरी ओटनियाँ फिर से बिनौले को अपने भीतर से पार करती हुई, चिपटी रह गई कपास को अलग करती है। यह दुबारा ओटी हुई कपास उतनी अच्छी नहीं समझी जाती।

ओटनीखाना का तमाशा अभी पूरा नहीं हुआ है। इस घर के चक्कों और ओटनी मशीनों की देख भाल चतुर कारीगर करते हैं। वे ठीक से काम करने की विधि बतलाते हैं, अपनी जगह से हट गये तस्मों को उनकी जगह पर रखते हैं, और मशीनों में समय समय पर तेल डालते रहते हैं। यह घर ऊपरवाले घर से भी ज्यादा गंदा और मैला है। यहाँ धूल भी है, साथ ही चक्कर के भीतर के गन्दे तेल की बू भी आती है। इसके अतिरिक्त यहाँ की हड़हड़ फड़फड़ से आदमी के कान बहरे हो जाते हैं, और तबीयत परेशान हो जाती है। आइये, इस घर से जल्दी बाहर निकल चलें, नहीं तो शायद इस गर्द गुबार, इस तेल की दुर्गन्ध और गड़गड़ाहट से सिर दर्द न करने लग जाय। आइये, इस सीढ़ी से कोठे पर चलें, जहाँ कि तैयार कपास लाया जा रहा है। यहाँ चारों ओर ६ ६, ७ ७ गज लम्बे यन्त्र लगे हुए हैं, जिनके इतने ही बड़े छेदों में मजूर तैयार कपास को भरते हैं। जब वह छेद भर जाता है, तो उसके ऊपर खड़ी लकड़ी हिलाते हैं, जिसके साथ छेद को भर सकनेवाला खंभा कपास को दबाता नीचे की ओर चलता है। रूई दब

कर इतनी छोटी हो जाती है कि जिससे छोटी हो नहीं सकती। अ
उसे लोहे की पट्टियों में बाँधकर दबानेवाले खंभे को ऊपर खींच ले
है। बड़े मजबूत कारीगर इन कपास की गाँठों को ले जाते हैं। अ
बाहर आइये, और चलिये मशीनखाना में चलें। यह कारखाने व
इमारत से बाहर आकर ओटनीखाने के सामने एक अलग घर है
इसमें छोटे-बड़े बहुत से चक्के चल रहे हैं। इन चक्कों को भाप क
ताकत से चलाया जा रहा है। यह भाप चारों ओर से बन्द उन देग
के भीतर से आ रही है, जिनके नीचे आग धायँ धायँ जल रही है
मशीनखाने के एक कोने में कुछ दूसरे चक्के दिखाई पड़ रहे हैं, जो नि
भाप से चलकर बिजली पैदा कर रहे हैं। इस बिजली को तार द्वार
सभी घरों मशीनखाना, गोदाम, आदि—तथा रास्तों में पहुँचाया गय
है। रात के वक्त यह बिजली जलकर चारों ओर दिन-सा दृश्य
उपस्थित करती है।

इस घर के एक कोने में एक लोहे का बहुत बड़ा मुँहबन्द बर्तन
है, जिसमें सैकड़ों घड़ा पानी रखा जा सकता है। इस बर्तन के मुँह
पर एक पतली नली लगी हुई है, जिसका एक सिरा बिजली के खजाने
के साथ मिला हुआ है। इस बर्तन में पानी गरम हो रहा है। इसमें
मजूरों का हाथ-मुँह धोने तथा पीने का पानी मिलता होगा, ऐसा न
समझिये। यदि इस बर्तन को हटा दिया जाय, तो इसके नीचे बारीक
लोहे के बहुत से नल के दिखाई पड़ेंगे। इनका एक सिरा तहखाने की
ओर जा रहा है, जहाँ से कि आप आये हैं और उनका सम्बन्ध गाँठ
बाँधनेवाले खंभों से है।

अब आइये, चलें दफ्तरखाने में। मैदान में मशीनखाने और
ओटनीखाने की इमारत के तीन तरफ मकानों की पंक्तियाँ खड़ी हैं,
जिनमें से कुछ कच्चे कपास रखने के लिये हैं, कुछ बिनौले जमा करने
के गोदाम हैं, बड़े दरवाजे के पास एक बहुत ऊँचे मकान में कपास
की गाँठें जमा की गई हैं। ओटनीखाने के सामने एक ओर कुछ यूरोपीय

ढग के सुन्दर कमरे बने हुए हैं। इनम से पहिले तीन आफिस के कमरे हैं, जिनम प्रबन्धक तथा क्लर्क बैठकर अपना काम करते हैं। दूसरी तरफ पाँच कमरों की एक बहुत ही सुन्दर इमारत है, जिसमें कारखाने का मैनेजर अपने परिवार के साथ रहता है। इसके एक तरफ एक चहार-दीवारी के घेरे के भीतर फूल-पत्ते और वृक्षों को खूब सजाकर लगाया गया है। ग्रीष्म के दिनों में जब गरमी से परेशानी होती है तो कारखाने का मैनेजर अपने परिवार के साथ यहीं हवाखोरी करता है। य सारे कमरे अच्छे-अच्छे सामान और फर्नीचर से सुसज्जित हैं और इनम सुन्दर बिजली के दीपक लटक रहे हैं।

मैनेजर के इस महल का कारखाने के गर्द-गुबार से भरे मकान से क्या मुकाबला हो सकता है? एक जगह स्वर्ग है तो दूसरी जगह नरक। कारखाने की चहारदीवारी के बाहर छोटी-छोटी कोठरियों की पाँतें खड़ी हैं। वहाँ प्रकाश का कोइ प्रबन्ध नहीं, न हवा का रास्ता ही। नीचे से ऊपर तक दीवारें नमी से भरी हुइ ह। उन दीवारों म शायद कभी सफेदी नहीं की जाती और न प्लास्टर ही दुरुस्त किया जाता है। ये बहुत गन्दी और मलीन कोठरियाँ हैं, जो देखने में ढारों और भेड़ों के रखने के घर-सी छोटी, गन्दी तथा बदबूदार ह। इन्हीं कोठरियों में कारखाने के मजदूर रहते हैं।

दीवार के बाहर रोज़ सूरज के उगते समय यदि आप देखें, तो वहाँ पाँतों में बहुत से लोग बैठे दिखाइ पड़ेंगे। इनके चेहरे पीले हैं, आँखें भीतर धुसी हुइ ह, पुतलिया बतेज की ह, हाथ घट्टे पड़े तथा छालों और खून से भरे हैं, पैर घाव और घट्टों से भरे ह तथा पोशाकें फटी हुइ है। इनम से कोइ किस्मत का मारा लम्बा पड़ा, दर्द के मारे हाय हाय कर रहा है। दूसरा अपने पैरों में लत्ता बाँध और उसे खोलकर घाव के खून को ताजा कर रहा है। तीसरा फटे हुए कपड़ों का जमा करके, उन्हे जोड़कर अपने लिए पोशाक बनाने की कोशिश म ह।

अगर आप १६१५-१६ इ० के काम के मौसम म इस कारखाने में

आते, तो इन्हीं फटे चिथड़ेवाले मजूरों म एक १७–१८ साल के जवान का देखते, जो अपने कपड़े को खोल, उसमें से चीलर निकाल रहा है। हमने ऊपर जा वर्णन किया, उससे आपको यह समझने म दिक्कत न होती कि यही है हमारे कथा का नायक अदीना, जो कि अपने घर-द्वार से अलग हो, यहाँ जिन्दगी बिता रहा है। मानव पुत्र क्यों इतनी परेशानी म पडे इस जगह बैठे हैं, इसका उत्तर आप स्वय दे सकते हैं।

आपने मशीनखाने को अभी देखा, और आदमीखाने और माल्खाने को भी देख लिया। वहाँ आपने सैकड़ों मजूरों को काम करते देखा है। बिना आराम किये रात दिन काम करना सभव नहीं है। खाने और सोने के लिये भी काम से एकाध घड़ी की छुट्टी आवश्यक होती है। इसलिये हर १२ घटे बाद मजूरों की बदली हाती है। ये अभागे, जो दीवार क नीचे इस बुरी हाल्त म बैठे हुए ह, कारखाने क भोंपू बजने की प्रतीक्षा म हैं। जैसे ही वह आवाज़ आयेगी, ये उठकर अपने काम पर हाजिर होंगे।

---

# कारखाने मे अदीना

●

अदीना कारखाने के ऊपरी तल्ले पर काम करता था। उसके बारे मे पूरी जानकारी के लिये थोड़ा विस्तार के साथ कहने की आवश्यकता है। अदीना के लिये जरूरी था कि या तो हर रोज थैले मे भरे कपास को उठाकर सीढी पर से ऊपर पहुँचाये या रात दिन १२ घंटे तक उसी घर के भीतर खड़ा रहे, जहाँ आप ५ मिनट भी रहने की हिम्मत नहीं कर सके। वहीं खड़ा-खड़ा वह थैलों को खाली करने के कार्य मे लगा रहता। यह काम केवल अदीना ही नहीं करता था, बल्कि दूसरे १०० ताजिक, उजबेक मजदूर एक सरदार की मातहती मे करते थे। सरदार फैक्टरी के इन वेकसों मे जोर-जुल्म से काम लेता था। बेचारे जिन्दगी बिताने का और कोई रास्ता न देख अपने गाँव से भागकर, या सूद म अपनी जमीन को बायों के हाथ गँवाकर रोजी की तलाश मे आये थे। काम का मिलना आसान न था, इसलिये मजूरी बहुत सस्ती थी। जब सरदार एक बार इन गरीबों को अपने चगुल में फँसा लेता, तो फिर किसी की ताकत नहीं थी कि उसके हाथ से छुड़ा ले। वह हल के बैलों की तरह उन्हें जोतता था। सचमुच मजूर हल के बैल ही जैसे थे। सरदार के हाथ मे हलवाहे की तरह ही डंडा रहता था, जिसे वह कभी इधर और कभी उधर चलाता रहता। अंतर इतना ही था कि यदि बैल को चलने की ताकत न हो, तो उसका मालिक आराम करने के लिये उसे थोड़ी देर के लिये छोड़ देता है, लेकिन मजदूर को छुट्टी कहाँ? सरदार हर वक्त उससे काम लेने के लिये तैयार रहता था। न काम कर सकनेवाले को वह निकाल बाहर करता और उसकी जगह पर

काम की तलाश में फिरते सैकड़ों में से किसी को भरती कर लेता। फिर बेकार मजूर को भूख से मरने के सिवा और कोई चारा न रहता। अदीना भी बेकारी के डर के मारे सारी ताकत लगाकर अपना काम करता, बिना दम मारे बोझे को ऊपर उठाता, और उसे खाली करता। अदीना की बस एक यही इच्छा थी कि चाहे कितना भी मुश्किल काम क्यों न करना पड़े, जो मजदूरी मिले, उसमें से बचाकर अपने वतन लौटने के तथा अपनी प्यारी (गुल्बीबी) का ब्याहने के लिये कुछ जमा कर सके।

अदीना की मजदूरी बहुत कम थी। यद्यपि सयाने लोगों से उसके काम में कोई अंतर नहीं था, लेकिन मजूरी देने में उसे लड़कों में शुमार किया जाता था। प्रति दिन उसे करीब ३० कोपक (पैसा) मिलता था। ६ कोपेक में वह दो काली रोटियाँ लेकर, उनसे दिन और रात का भोजन करता। बाकी २४ कोपक वह हर रोज जमा करता जाता। इस तरह के खाने के ऊपर उतना भारी काम करना बहुत मुश्किल था। लेकिन बेचारा क्या करता? अगर वह अपने भोजन में थोड़ा मा माम और घी भी शामिल कर लेता, तो रोज की मजदूरी उसी में चली जाती। अदीना की पोशाक भी कारखाने के दूसरे मजदूरों की तरह फटी और गंदी थी। उसने बोझेवाले थैलों के टुकड़े और दूसरे लत्तों को सीकर जामा बनाया था। रहने की कोठरी भी अत्यन्त गन्दी थी। वह बहुत ही नीची, अँधेरी, पानी से भीगी भीगी, और पायखाने से अंतर नहीं रखती थी। इसी छोटी सी कोठरी में १५ २० आदमी सोना-बैठना करते थे। उनके पास हाथ-मुँह धोने के लिये साबुन नहीं था। और हवा आने के लिये उस कोठरी में कोई खिड़की नहीं थी। इस तरह की जिन्दगी के साथ उतनी मेहनत और ताकत का काम शक्ति से बाहर था। अदीना के सौ फूलों में अभी एक फूल भी नहीं खिल पाया था, लेकिन वह ऐसी मेहनत में पड़ा हुआ था। अगर ऐसा ही जीवन रहा, तो हो सकता है कि वह साल खतम

होते होते मर जाये। यह कोई अनहोनी बात नहीं थी। मजदूरों में से कितने ही टायफायड से मर गये, कितनों को पेट की बीमारी ने पकड़ लिया था। इस प्रकार वहाँ सैकड़ों ने बुरे तौर से जान दी थी। लेकिन अदीना इन सारी कठिनाइयों और निराशाओं में जिन्दगी बिताते, सिर्फ एक बात की इच्छा रखता था। उसकी क्या इच्छा थी कि यह आपको मालूम है—"काम करना और कुछ पैसा बचाना, फिर अपने वतन लौटना, और अपनी प्रेमिका गुल बीबी से मिलना।" यह ठीक है कि वियोग का दुख सभी दुखों से ऊपर है। वह एक बड़ी बला है, ऐसी बला है, जिसने बहुत से नौजवानों को कोमल शय्या से उठाकर मिट्टी में पटक दिया। लेकिन जिस वियोग के पीछे बहुत आशा होती है, वह आशिक को बहुत धैर्य और सभी तकलीफों तथा मेहनतों को बर्दाश्त करने की शक्ति देती है।

---

## हलचल

•

नौस सौ पन्द्रह म कपास की फसल खूत हुइ थी। विश्व युद्ध के कारण रूस क कपड़े के कारखानों की माँग नहुत नढ़ी हुइ थी। साधारण पहिनने के कपड़ों के अलावा युद्ध के काम के लिये भी उसका खर्च नहुत अधिक था। कपास का बाजार बहुत चढा हुआ था। यद्यपि सरकार कीमत को राकने का पूरी कोशिश करती थी, लेकिन बाजार मे माल का दाम बढ़ता ही जा रहा था। साधारण बाजार के अलावा चारबाजारी भी चल रही थी, जहाँ कीमत वैधानिक दाम से चौगुने पर पहुँच गइ थी। यह हाल्त मास्को में थी। कपास के व्यापारियों और कारखानेवालों के लाभ का क्या कहना? वह तीन-चार गुना बढ़ा हुआ था। जितना ही लाभ बढ़ रहा था, उतना ही उनका लोभ और भूख भी बढ़ती जा रही थी। वे आदती शरानियों की तरह जितनी ही पीते, उससे अधिक शराब की माँग करते। क्षण प्रति-क्षण लाभ का चक्कर उन्हे ऊपर की ओर बढ़ाये लिये जा रहा था। कपास के रोजगारियों के गुमाश्ते एक बाजार से दूसरे बाजार, एक गाँव से दूसरे गाँव और घर घर दौड़ लगा रहे थे, और कची कपास का जमा करने म लगे हुए थे। कारखानों में इतनी कपास जमा हो गयी थी कि उस आट सकना सभव नहा रह गया था। फैक्टरियों क गादाम और घर कची कपास से भरे हुए थ। अत में उन्हें मजबूर होकर कची कपास को मैदान में बाहर जमा करना पड़ा। जाड़ में बर्फ पड़ने के बाद यह कपास के ढेर बर्फ से ढँक गये, और बसत म बरफ पिघलने से भीगने लगे। इसी तरह वर्षा की नमी और गरमी की गरम हवा खाते, सन् १६१६ शुरू हुआ। मौसिम गरम

होने से भीगे कपास म गरमी आई, और उसके भीतर की नमी भाप बनकर, ज्वालामुखी पहाड़ से निकले धूयें की तरह आसमान पर छा गई।

काम के लिये अधिक मजदूरों की आवश्यकता थी। एक आर कपास की मिलों के लिये मजदूरों की आवश्यकता थी, दूसरी आर बसत-ऋतु आने के बाद जब कि खेत मे किसानों का काम शुरू हुआ, मजूरों का मिलना मुश्किल होगया था। किन्तु कुर्बान अली सरदार को इस बात का हल करना आसान था। कुर्बान अली ने मालिकों की ओर से इस काम का पूरा करने के लिये अपने नीचे के मजदूरों को पकड़ा। उसने उनसे कहा—"कारखाने को कायम रखना हमारे लाभ की बात है। अगर कारखाना खराब हो गया, तो हम लोग बेकार हो जायँगे। मालिक के माल के खराब होने से कारखाने का नुकसान होगा। अगर तुम लोग थोड़ी मेहनत करके मामूली से ज्यादा काम करके कपास को जल्दी खतम नहीं करोगे, तो सब कपास खराब हो जायगी। उस समय हम बेकार हो जायँगे, या मालिक हमें काम से हटाकर दूसरे मजूरों को भरती कर लेगा। इसलिये मेरी राय है कि तुम लोग रोज जितने समय तक काम करते हो, उससे कुछ ज्यादा समय काम करके इस भीगी हुई कपास को अलग करो। खुदा चाहेगा, तो काम हो जाने के बाद मालिक की दौलत से तुम्हें खुश कर दिया जायगा।"

मजूरों ने मालिक की दौलत की उम्मीद पर सरदार की बात मजूर कर ली। वे रोज के १२ घण्टे के काम को खत्म करके, काली रोटी ठंडे पानी म भिगो पेट म डालते, और लोहे के पंजे को हाथ मे ले भीगी कपास को अलग करने में लग जाते। यह काम काम के घण्टों से ज्यादा ही नहीं था, बल्कि मुश्किल भी था। कपास भीगकर बैठ गयी थी, जिसको छुड़ाना और अलग करना बहुत कठिन काम था। वह नीचे से सड़ भी गयी थी, जिससे निकलती बदबू मजूरों के दिमाग को

असह्य थी। १५ मिनट काम करने के बाद ही वे गिरने लगते। जो गिर जाते, उन्हें कुर्बान अली अपने डंडे से उठाकर, फिर काम में लगाता। इस काम से मजूरों की सेहत पर इतना बुरा असर पड़ा कि कई बीमार होकर मर गये। काम वे जी जान से करते थे, लेकिन इस अधिक काम के लिये उन्हें एक पैसा भी अधिक नहीं दिया जा रहा था। मालिक की दौलत बढ़ती जा रही थी, लेकिन उससे मजूरों को खुश करने का ख्याल खुदा को कभी नहीं आया। कुर्बान अली को मजूर अपना खुदा समझते थे, लेकिन उसने गोदाम खाली हो जाने के बाद कुछ नहीं दिलवाया। काम करते करते मजूरों के शरीर में बस हड्डी हड्डी ही रह गयी। उन्होंने आपस में सलाह की और अधिक काम के लिये मजूरी बढ़ाने के वास्ते मालिक से कहने का निश्चय किया। यदि ऐसा नहीं किया जाता, तो उनसे अधिक काम न लिया जाय। अगर मालिक ने इन दोनों बातों में से किसी को नहीं माना, तो वे काम को एक साथ छोड़ देंगे।

मजूरों की यह सलाह अभी कार्य रूप में परिणत होने नहीं पायी थी कि इसकी खबर कुर्बान अली द्वारा मालिक के पास पहुँच गई। मालिक ने इस बात की खबर स्थानीय हाकिमों के पास पहुँचायी, और पुलिस मँगवा ली। कारखाने के बाहर पिस्तौल, भालों आदि से लैस एक टुकड़ी रूसी कसाकों की भी आकर तैनात हो गयी। रूसी अफसर ने मजूरों से कहा—"यह महायुद्ध का समय है। देश में सैनिक शासन चल रहा है। हर एक कारखाने के मजूर फौजी ढग से सैनिकों की पाँती में खड़े हो, बिना ना नु किये काम करने के लिये मजबूर हैं। जो कोइ काम करने से इनकार करेगा, उसे भागा हुआ सैनिक मान कर कड़ी सजा दी जायगी, जो कि गोली से मार देना है, और यह सबको मालूम है। अगर तुम लोगों ने बिना हुज्जत किये काम करना शुरू न किया, तो तुम्हें जेलखाने भेज दिया जायेगा, जहाँ तुम्हें वही सजा मिलेगी।"

एशियाई मजूर रूसी मजूरों की तरह किसी प्रकार का संगठन नहीं रखते थे। इस कारखाने में काम करनेवाले रूसी मजदूरों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। इसलिये अफसर के डराने मात्र से वे फिर काम करने लगे। अदीना कपास की बदबू में काम करने के कारण बीमार हो गया था, इसलिये वह काम नहीं कर सका। वह अपने एक स्वदेशी भाई की देख रेख में मजूरों की एक कोठरी में लेटा था।

———

## हमदर्द

●

जूरों की स्वास्थ्य-रक्षा के लिये कारखाने के मालिक एक पैसा भी खर्च नहीं करते थे, लेकिन मुल्लों और पादरियों द्वारा उनको समझा-बुझाकर काम में लगाये रखने के लिये पैसा खर्च करने में ज़रा भी कमी नहीं करते थे। मजूरों में ताजिक, उजबक, इरानी, जरमनी, रूसी, तत्तरी आदि सभी जाति और धर्म के लोग थे। मुल्ला और पादरी धर्म के नाम पर उन्हें समझा-बुझाकर आपस में मेल नहीं होने देते थे। सभी अपने-अपने धर्म की प्रशंसा करते हुए उनको बहकाते थे—"तुम लोग दूसरे धर्म और जातिवालों से बच कर रहना। भूल न करना, नहीं तो वे तुम्हें अपने धर्म में खींच ले जायँगे। अपने धर्म के लिये दान दो, और भगवान की भक्ति करो। अपने पुरोहितों और इमामों की इज़्ज़त करो, उनकी बात मानकर चलो। धर्मात्मा लोगों के भोग और आनन्द को देखकर ईर्ष्या न करो, न उसके लिए अफसोस करो, क्योंकि यह दुनिया चंदरोज़ा है। दुनिया की दौलत दुनिया ही में रह जायगी। तुम्हें सदा रहनेवाली अंतिम दौलत की आशा रखनी चाहिये। जिस खानदान में काम करते हो, जिस जगह रोटी खाते हो, वहाँ के नमक का हक़ अदा करना चाहिये। नमक का हक़ खुदा के हक़ के बराबर है। अपने मालिक के लाभ में हानि नहीं पहुँचानी चाहिये। मालिक जो काम करने की आज्ञा दे, उसे दिलोजान से पूरा करना चाहिए। सेवक रहो, सच्चे सेवक बन कर रहो। याद रखो, गरीबी बुरी चीज़ नहीं है। हाँ, कुफ्र की नियामत और नमकहरामी बहुत बड़ा पाप है।

अपने समय के बादशाह और उसके हाकिमों की आज्ञा मानना धर्म है। जानना चाहिये कि बादशाह खुदा की छाया है, और दुनिया की नियामतों का मालिक है "

बेचारे मजदूर मुल्लों और पादरियों के भुलावे में पड़कर एक दूसरे को दुश्मन समझते थे, और आपस में मेल नहीं करते थे। वे अपने धर्म और जाति से बाहर की हर बात को सदेह और बुरी निगाह से देखते थे। वे सोचते थे कि दूसरे अपने जाल में फँसाकर हम हमारे मजहब से हटा के अपने पथ में ले जाना चाहते हैं। ४५ तका मजूरी, जो उन्हें हर महीने मिलती थी, जिसके लिये उन्हें एड़ी का पसीना चोटी तक पहुँचाना पड़ता था, उसमें से भी एक भाग अलग करके, कुरान-पाठ, गर्मिन्दान, या पाप से मुक्ति पाने के लिये पादरियों और मुल्लों को देते थे।

लेकिन आखिरी दिनों में हालत बदल गई। फर्गा के यूरोपियन मजूर अपना गुप्त सगठन करते थे। उनका क्रांतिकारियों के साथ सम्बन्ध था। उन्होंने पहिले आन्दोलन आरम्भ किया। उनके नेताओं ने नारा लगाया—"सारी दुनिया के मजूरो, एक हो जाओ।" युरोपियन मजदूर सभी मजदूरों को भाइ भाइ कहने की आवाज निकालने लगे, और मालिक के जोर-जुल्म और सरदार की गाली-गलौज तथा मार-पीट, और पुलिस तथा सरकारी हाकिमों के इन जालिमों के पक्षपात की बात करने लगे। अब वे यह सब चुपचाप सहने के लिये तैयार नहीं थे। उन्होंने इसके खिलाफ कहना शुरू किया—"कारखाने के मालिक की यह सारी धन दौलत हमारे हाथ की मजूरी का फल है। पूँजी और नक़द धन को, जिसके बल से मालिक हमें अपना गुलाम और दास बनाये हुए है, अगर अलग रख दिया जाय, तो १०० तका से एक तका भी नहीं बढ सकता। मालिक अपने दलालों और गुमाश्तों के द्वारा हमारी तरह के गरीब और सताये हुए किसानों के पास से कपास और रूई अपने मनमानी दर से खरीदता है। उसे कारखाने लाकर हमारे

हाथों की मेहनत से एक का दस बनाता है। अपने भूखे बीबी-बच्चों को जिलाने के लिये हम मजबूर हैं इसकी गुलामी करने को। इन कपास की गाँठों को मालिक रेल से मास्को भेजते हैं। रेल भी हमारे-जैसे अभागे मजूरों के हाथ से बनी और चलाई जाती है। मालिक इस तरह खूब नफा कमाकर बड़े धनी बन जाते हैं। उनके बड़े बड़े आलीशान महल और सुन्दर बाग हमारी मजदूरी पर ही खड़े हैं। गुलाबी गालों वाली सुन्दरियाँ, अंगूरी शराब और इनके आनन्द-मौज, सब हमारे ऊपर चल रहा है।

"आप सोचिये, कारखाने का मालिक सिवाय ४० ५० हजार तक पूँजी लगाने के और क्या करता है? यह पूँजी भी उसने अपनी मेहनत-मशक्कत से जमा नहीं की, बल्कि हम तुम जैसे मजदूरों और किसानों की मेहनत को लूटकर इकट्ठा की, और इसके लिये उसे आनन्द भोगने की छुट्टी है। नहीं, कारखाने का मालिक इस आनन्द का हक नहीं रखता। हम लोगों को इतनी तकलीफ में डाल उस तरह की मौज कभी उचित नहीं समझी जा सकती। ये कारखानेवाले बैठे-बैठे मौज करते हैं, और हम रात दिन काम करते करते मरते हैं। उनकी तोंद फूलती जाती है, और हम सदा भूखे रहते हैं। वे शराब पीते हैं, और हम अपने कलेजे का खून। वे अपनी प्रेमिका के लाल ओंठों को चूमते हैं, और हम काली जमीन में नाक रगड़ते हैं। उनकी बीबी और लड़कियाँ बागों की सैर करती हैं, तरह-तरह के सुन्दर कपड़ों का पहिनती हैं, हजारों तरह के ऐश में जीवन बिताती हैं, और हमारी औरत और बच्चियाँ भी जी-तोड़कर मेहनत करती हैं, तब भी निश्चित दो दो रोटी नहीं पातीं। उनके लड़के सुन्दर कपड़े पहनते, स्वादिष्ट भोजन करते स्कूलों में विद्या पढ़ते हैं, और हमारे बच्चे बिना पढ़े मूर्ख रहते हैं। बचपन ही से कड़ी मेहनत में लग, अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लेते हैं, और उनमें से अधिकांश जवान होने से पहिले ही मर जाते हैं।

"इस तरह का जीवन, इस तरह का गुजर-बसर, जिन्दगी बिताने

का यह ढग, इस तरह की मेहनत कभी उचित नहीं है। इसे कभी ऐसा रहना नहीं चाहिये। हम लोगों को उचित है कि जाति और धर्म की बात अलग रख, उसे बीच मे न आने दें, सब एक हो जायँ। चाहे रूसी हों, या मुसलमान, अरमनी हों या ताजिक, उजबक हों या बरबरी। हमें सब भेद भाव भूलकर एक दूसरे को भाइ भाइ समझना चाहिये। सबके लाभ को अपना लाभ मानना चाहिये। और अपने जीवन का सुधारने, इन जालिमों से बदला लेने और अपने छिने हुए अधिकारों को अपने हाथ म लौटाने की कोशिश करनी चाहिये। यदि हम सब मिलकर एक हो जायँ, तो अपने हक को जरूर ले लेंगे। हाँ, एक होकर हम दुनिया ले सकते हैं, अपने निजी हक की तो बात ही क्या?

"जो व्यक्ति या जमात हमारे एक होने म रुकावट डालती है, उसे हम अपना प्राण और जीवन का दुश्मन समझना चाहिये। जो लोग अपने को खुदा का नायब और पैगम्बर का उत्तराधिकारी कहकर, हमसे दान दक्षिणा लेते हैं, और हमे मदद देने के बदल हमारे बीच म फूट डालते हैं, और इस प्रकार हमारी शक्ति को कमजोर करते ह, और इस तरह अपना हक लेने मे हमारे रास्ते म बाधक होते ह, ऐसे मुल्ला और पादरी हम नहीं चाहिये। वे सहायता करने की जगह हमे समझाते है कि दुश्मन की ताबेदारी करो, बादशाह की फरमा बरदारी करा। हमारे लिये ये बस यही उचित समझते हैं। वस्तुत न वे खुदा के नायब हैं, न पैगम्बर के वारिस। वे दान दक्षिणा के बन्दे, मालिक के गुलाम और बादशाह के फरमाँबरदार हैं और अपने आराम के लिये वे अपनी आत्मा को बेचे हुए हैं। खुदा के नायब और पैगम्बर के वारिस हो, वे क्यों दान दक्षिणा चाहते हैं? वे क्यों पैसेवालों और सूदखोरों के फरमाबरदार हैं? नहीं-नहीं, वे मुफ्तखोर, नगे और बेईमान ह। उन कौवों और सियारों-जैसे हैं, जिनकी भुजाओं में खुद शिकार करने की ताकत नहीं है। वे बड़े परिन्दों के आगे-पीछे दौड़ते फिरते हैं कि जब वह शिकार का मारकर खा चुकें, तो बची लाश को नाच-

नान कर अपना पेट भरें। इसीलिये वे हम एक नहीं होने देते। इसीलिये वे कहते हैं कि हम मालिक के नमक का हक अदा करें। इसीलिये वे समझाते हैं कि हम बादशाह की फरमाबरदारी करें। कभी किसी ने नहीं देखा कि इन्होंने गायों और पैसेवालों का नौकरों के साथ मेहरबानी बरतने, उस पर जुल्म न कराने की शिक्षा दी हो, और न बादशाह को कभी इन्होंने यह समझाने की तक्लीफ की कि अत्याचार-पीड़ितों की हिमायत करें। हमें इन लोगों की बातों पर कान नहीं देना चाहिये, और न इनके बहकावे में पड़कर अपनी एकता को मजबूत करने से बाज़ आना चाहिये। अगर हमारे काम में ये ज्यादा रुकावट डालें, तो इन्हें निकाल बाहर कर देना चाहिये।

"पूँजीपतियों और कारखानेदारों की मदद करनेवाली एक और भी जमात है। वह है बादशाह (ज़ार) की हुकूमत और उसकी पुलिस। यद्यपि उनकी खुराक-पोशाक सब-कुछ हम जैसे मेहनतकश मजदूरों और किसानों की बदौलत ही है, यद्यपि ये सरकारी सिपाही हमारी तरह भूखे नंगे किसानों और मजदूरों के लड़के हैं, फिर भी वे हमारी मदद करने के बजाय हमारे दुश्मनों का साथ देते हैं। इससे मालूम होता है कि जार की सरकार रोटी हमारी खाती है, और साथ ही हमारे खून से अपने तलवार की धार तेज करती है। यह साफ है कि जार की सरकार पूँजीपतियों और कारखानेदारों के गुमाश्तों और बड़े जमींदारों के साथ है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह बादशाही हुकूमत चोरों और डाकुओं की सरदारी है। हमारे लिये उचित है कि जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी इस हुकूमत को अपने भीतर से निकाल फेंकें, और शासन चलाने का भार ऐसे आदमियों के हाथ में दें, जो कि हमारे हों। चूँकि देश में सबसे बड़ी संख्या हम किसानों और मजदूरों की है, अगर हम एकताबद्ध हो जायँ, तो बादशाही सरकार को भगा सकते हैं। बादशाह के हाथ में जो सबसे बड़ी ताकत है, वह है फौजी ताकत। यदि अच्छी तरह से देखें, तो

मालूम होगा कि वह भी गरीब किसानों और मजदूरों के पुत्र होने से हमारे ही वर्ग के हैं। किस कारखाने के मालिक का लड़का कंधे पर बन्दूक रखकर सीमा की रक्षा के लिये गया? किस पूँजीपति के दामाद ने काली रोटी पर सब्र करके जाड़े-गरमी में पहाड़ और रेगिस्तान की खाक छानी? असल बात यह है कि बादशाही हुकूमत ने सैनिकों को अपने जाल मे फँसाया है, मुल्लों तथा पादरियों ने नसीहत और उपदेश, कसम और तोबा दिलाकर, उन्हें हुकूमत का बन्दा बना दिया है। अगर हम असली बात उनको समझा सके, तो जो तोप और बदूक उनके हाथ मे हमे गुलाम बनाने के लिये है, वह हमारी तरफ मे दुश्मन पर गोलाबारी करने लगें।"

यद्यपि इस तरह की बातें यूरोपीय मजदूरों के भीतर ही पहिले शुरू हुईं, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने मुसलमान (एशियाई) मजदूरों को भी अपने भीतर शामिल किया। बहुत सावधानी के साथ, बहुत छिप-छिपकर उन्हें क्रांति का पाठ पढाया गया। कारखाने के जिन मजदूरों का इन बातों के सुनने का मौका मिला, उनमे से सबसे अधिक ध्यान देनेवाला अदीना था। अदीना अपने अनुभव से उन बातों की सचाइ को समझता था। अमीर बुखारा की सरकार के नीचे अरबाब कमाल की गुलामी करते हुए उसने कैसी कैसी तकलीफें सही थीं। इस गुलामी म फँसे रखने के लिये गाँव के बड़ बूढ़ों, विशेषकर मुल्ला खाक-राह ने कितनी कोशिश की थी, यह भी उससे छिपा न था। सबसे अधिक खुशी अदीना को इस बात के लिये थी कि अब वह पहिले की तरह अकेला नहीं था। इस वक्त अपने दुखों को कहने और अपनी तकलीफों को दूर करने के बारे में कोशिश करनेवाले उसके बहुत से हमदर्द थे। इस वक्त वह यह नहीं कह सकता था, कि 'दर्द तो हैं' मगर हमदर्द नहीं!' केवल गुल बीबी के लिये उसका दुख—बुलबुल का फूल के लिये दर्द—दूर देश म रहते अदीना को कभी चैन नहीं लेने देता था। यह दुख की बात थी कि इस दर्द को सुननेवाला वहाँ

कोई हमदर्द नहीं था। कारखाने के भीतर राजनीतिक और आर्थिक दर्द के हमदर्द अवश्य थे। अदीना बेचारा इस बात के लिए मजबूर था कि अपने इस दर्द को अकेले ही सहे, इस कड़वे घूंट को अकेले ही पिये और इस दिल के बोझ को अकेले ही उठाये। हाँ, इश्क का दर्द ऐसा लाइलाज दर्द है कि समूह में जीवन बिताते हुए भी, उसे एकान्त में ही आह भरते हुए सहना पड़ता है।

---

# फरवरी मार्च १९१७

•

नीस सौ सत्रह, फरवरी के आरंभ से ही ज़ार की हुकूमत की जड़ उखड़ने लगी। दरबारियों की बेईमानी, व्यापारियों की लूट, विशेषकर हथियार के कारखानेवालों तथा युद्ध-मन्त्रालय की बेईमानियों और धोखे धड़ियों के बारे में अब छिप कर नहीं बल्कि खुल्लमखुल्ला लोग नुक्ताचीनी करने लगे। ज़ारीना के गुरु रसपुटिन के काले कारनामों की तरह तरह की कहानियाँ मजूरों और किसानों तक में सुनी जाती थीं। बादशाही रौब उठ चला था। देश में रोटी नहीं थी, कपड़ा नहीं था। दवा दारू नहीं थी, युद्धक्षेत्र में गोली-बारूद न था, बन्दूक नहीं थी, तोप नहीं थी। चाहे युद्ध-क्षेत्र हो, या युद्ध के पीछे की भूमि, सर्वत्र सिर्फ एक चीज मौजूद थी—मौत, मौत, और मौत। लोग भूख से मर रहे थे, नंगे रहकर मर रहे थे, बीमारी में देख भाल न होने से मर रहे थे। कारखानों और मिलों में मौत, रास्तों पहाड़ों, जंगलों बयाबानों में मौत। युद्ध क्षेत्र में बिना गोला-बारूद, बिना तोप-बन्दूक निहत्थों की मौत, जर्मन गोलों से हो रही थी। हर जगह, हर तरफ बस मौत-ही मौत थी। देश की यह साधारण हालत उस कपास के कारखाने में भी थी, जिसके बारे में हम यहाँ कह रहे थे। वहाँ भी मजूर भूख से मर रहे थे, पेट की बीमारी से मर रहे थे, टाइफायड से मर रहे थे, मलेरिया से मर रहे थे।

४ मार्च, १९१७ (पुराने पंचाग के अनुसार) को तारीख थी। कारखाने के बड़े चक्कों के तख्ते टूटे हुए थे। उसकी गर्दन घिस गई थी। चर्खियों के दाँत बेकार हो गये थे। सारा कारखाना ही मानो

जारशाही सरकार के विभागों की तरह बेकार हो गया था। सबसे बड़े चक्के पर ज़रा नज़र डालिये। एक मिस्त्री उसी चक्के की गर्दन में तेल डाल रहा था, दूसरा तस्मे को बाँध बूँधकर लगाने की कोशिश कर रहा था। दिन में दो दो बार काम करने की जगह, अब एक बार भी पूरा काम नहीं हो रहा था। एक मजूर ओटनी के भीतर पड़े बिनौले को निकालकर साफ कर रहा था। मशीन चलाने पर जोर की आवाज़ के साथ एक बार चक्का चला, और मरम्मत करनेवाला मिस्त्री धक्का खाकर दूर जा गिरा। बड़े चक्के पर तैनात आदमी ने चाहा कि उस घायल आदमी की जाकर मदद करे, लेकिन उसके कपड़े फटकर लत्ते लत्ते हो गये थे, लत्ते का छोर चक्के के दाँत में फँस गया, और वह स्वयं अपने कपड़े-सहित चक्के के भीतर खिंच गया। चक्के की गति हद से ज्यादा तेज थी। उसने पुराने तस्मे को तोड़ दिया। तस्मे का छोर जोर से उड़कर तेल डालनेवाले मिस्त्री की कमर में जाकर लगा। वह भी चक्के की लपेट में आ गया। यह सारी बातें कुछ मिनटों के भीतर इतनी जल्दी जल्दी हुईं कि खतरे की घंटी की आवाज घायल मिस्त्री की चिल्लाहट के साथ मिलकर कारखाने के बाहर मैदान में पहुँची। मजूरों के लिये बड़ी मुसीबत थी। ओटनीवाले का हाथ ओटनी में कट चुका था और वह पास पड़ा मौत के क्षण गिन रहा था। तेल डालनेवाला मिस्त्री उसकी क्या मदद करता, जब कि वह स्वयं टुकड़े टुकड़े हो, इस दुनिया से चल बसा था? मजूरों में हलचल थी। मैदान में सभा शुरू हुई। एक के-बाद एक मजूर वहाँ पहुँचकर बातें करने लगे। कारखानेदार ने सरकार के पास शिकायत भेजी थी कि मजूर आज की दुर्घटना की जिम्मेवारी कारखाने के संचालकों और मालिक के सिर पर रख रहे थे। इसके बारे में एक मिस्त्री ने कहा—"एक महीना हुआ, मैंने संचालक और मालिक को खबर दी थी कि चक्के घिस गये हैं, उनकी गर्दन टेढ़ी हो गयी है, और तस्मे भी बहुत पुराने हो गये हैं। ऐसी हालत में कारखाने का चलाना खतरे की बात है। या तो काम

को रोक दें, या नये सामान मँगायें। लेकिन उन्होंने कहा, 'एक-एक चीज का दाम आजकल कइ कई मोहरें हैं। तेरा काम यही है कि जहाँ तक हो सके, इन्हीं कल-पुर्जों से काम चालू रख। खतरा-अतरा कुछ नहीं है। अगर एकाध दुर्घटना हो भी गयी, तो उससे तुझे क्या!''

इससे पहिले मजूरों ने मामूली बातों के लिये अपने सिर के ऊपर के डंडे और कजाकों के कोडे खाये थे, लेकिन आज वे हर बात के लिये तैयार थे। उनमे से जिनके पास तमचा या दूसरा कोइ बारूदी हथियार छिपाकर रखा हुआ था, उसे उन्होंने आज खुल्लम-खुल्ला अपने हाथ में ले रखा था, और जिसके पास बारूदी हथियार नहीं थे, वे डंडों, लोहे के छड़ों या दूसरी किसी लोहे की चीज से लैस थे। आज भय था, कि बडे फाटक के बाहर खडे कजाक आक्रमण करेंगे। मजूरों ने कारखाने का फाटक बन्द कर लिया था, और वहाँ पहरेदार मुकर्रर कर दिये थे, जो आने-जानेवालों की तलाशी लेते थे।

कारखाना आज युद्धक्षेत्र बना हुआ था। बराबर मीटिंग हो रही थी। लेकिन न पुलिस का कहीं पता था, और न कजाकों का। उनकी जगह स्थानीय सरकारी अफसर मामूली पोशाक म कारखाने क अमलों के साथ सिर झुकाये मजदूरों के सामने आये। "दूर हो, बरबाद हो, भाग जाओ"—जैसे मजूरों के शब्दों की उन्होंने कुछ भी परवाह न कर, बात करनी शुरू की। उनके कहने के मुताबिक अब तक मजूरों के ऊपर जो कुछ बीती थी, मानो वह सब ज़ार के निजी हुक्म और राय से हुइ थी, अब जार निकाल दिया गया, इसलिये कारखाना कारीगरों के लिये अब स्वर्ग हो गया था। यह खुशखबरी सुनाकर वे समझते थे कि मजदूर इसे अपना सौभाग्य समझेंगे, और सच्चे दिल से धन्यवाद देंगे।

वस्तुत जार के निकाले जाने की खबर अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रही। वह घृणा और गुस्से की मीटिंग अब आनन्द और महोत्सव मनाने की मजलिस म बदल गइ।

आज जो घटना कारखाने में घटी थी, वह उस बड़ी घटना की प्रतिध्वनि मात्र थी, जो तीन-चार दिन पहिले (२७–२८ फरवरी,) (पुराने पचांग से) पेत्रोग्राद (लेनिनग्राद) में घटित हुई थी। उस दिन पेत्रोग्राद के साधारण मेहनतकश 'रोटी, रोटी" कहते सड़कों पर निकले थे। जार की सरकार की सेना भी सहानुभूति दिखलाते मजूरों के साथ हो गयी, और जार की सरकार के विरुद्ध खड़ी होने में भी उसने आनाकानी नहीं की।

दूमा (पार्लामेंट) की सरकार ने हर तरह से शासन को अपने हाथ में लेना चाहा। उसने जार को गद्दी से उतारने की घोषणा कर दी, और स्वयं अपना अस्थायी मन्त्रिमंडल कायम किया। दूमा की सरकार में करेन्स्की-जैसे समाजवादी जनतान्त्रिक, मेल्कोफ-जैसे कादेतदली और काले दिलवाले गुचकोफ-जैसे राजवादी तक शामिल थे, जो दिखलाना चाहते थे कि हम भी जनता की क्रांति के साथ हैं, हम भी क्रांतिकारी हैं। इस घटना की खबर उसी दिन (पुराने पचांग के अनुसार १ मार्च) तुर्किस्तान में भी पहुँची। लेकिन स्थानीय हाकिम ने "जब तक दूसरी खबर न आ जाय, तब तक कुछ नहीं करना चाहिये" कह कर, उसे प्रकट होने नहीं दिया, और एक दो रोज़ और अपने दबदबे को कायम रखना चाहा। लेकिन सूर्य का आँचल से छिपाना कहाँ सम्भव था? जार का तख्त से उतारा जाना उस सूर्य की भाँति था, जिसे जनता के सामने प्रकट होने से कैसे रोका जाता? ४ मार्च को तुर्किस्तान के हाकिम भी जार के गद्दी से उतारे जाने की खबर की घोषणा करने का मजबूर हुए, और चाहा कि जनसाधारण के इस आनन्द में अपने को भी साथी साबित करें। इसीलिये अदीनान के कारखाने के प्रबंधकों ने भी स्थानीय हाकिमों के साथ आकर, मजूरों को इस बड़ी घटना की खबर दे, उनके क्रोध की अग्नि पर, जो कि उन्हीं के खिलाफ थी, ठंडा पानी डालने का एक अच्छा अवसर पाया, जिससे मजूर उनसे बदला लेने में सफल नहीं हुए। हाकिम और कारखानेवाले बड़ी आसानी

से छूट गये। कारखाने के मजूरों ने इस खुशी में अपने इन्कलाबी लाल झंडों को उठाया, और उत्सव मनाने के लिये निकल पड़े। कितनों ही ने अपने जोशीले भाषणों में उसी तरह की बातें कहीं, जिनका वर्णन हम पहिले कर आये हैं। पहिले जो बातें छुक छिपकर भीतर भीतर होती थीं, अब वह खुल्लम-खुल्ला हो रही थीं। इसका एक परिणाम यह हुआ कि उत्पीड़ित मजूरों के मुर्दादिलो म क्राति की नई जान पड़ गयी। मजूर आज उत्सव मनाते हुए सड़कों और कूचों में एक साथ हो, स्वतनता के गीत गा रहे थे

( १ )

'ऐ उत्पीड़ितो, ऐ बदियो !
हमारी स्वतनता का समय आ गया !
ऐ गरीबो, खुशखबरी !
दुनिया में आनद प्रभात आ गया !
कितने युगों तक रज और दुख सहते रहे,
तब आज आनद प्रगट हुआ,
जोर और जुल्म खत्म हुआ। ऐ न्याय,
दुनिया में शासन कर !
बदला, बदला, ऐ साथियो !
ऐ जुल्म देखे हुए, ऐ दोस्तों !
इसके बाद दुनिया मे शासन हो
एकताबाद, दुखी मेहनतकशों का !'

( २ )

'हमारा खून बहाया गया,
मुट्ठी भर कमीनों की मनोरथ पूर्ति के लिये।
अपने दिली दोस्तों के मनोरथ के लिये,
इन कमीनों के प्राण को हरो !

दुनिया में जालिम का जुल्म न रहे,
अन्याय, अत्याचार और फूट न रहे।
सभी आनद के मधु को चखें,
दुखी मेहनतकशों की एकता से !
बदला, बदला, ऐ साथियों !
ऐ जुल्म देखे हुए, ऐ दोस्तो,
इसके बाद दुनिया में शासन हो
एकताबद्ध, दुखी मेहनतकशों का !"

( ३ )

'हर उत्पीड़ित आनदित और प्रसन्नता हो,
आनन्द के प्याले को सालों पिये !
अँधेरी रात में जोर-जुल्म,
देखा हुआ हर एक सुखी हो !
अत में न्याय का सूरज
गरीबों के सिर पर उगा।
दुनिया से अन्याय और अँधेरा नष्ट हुआ,
अन्यायी जहन्नुम म फेंका गया।
बदला, बदला ऐ साथियो !
ए जुल्म देखे हुए, ऐ दोस्तो !
इसक बाद दुनिया मे शासन हो
एकताबद्ध, दुखी मेहनतकशो का !"

मानव पुन दो समय अपने यार दोस्तों को अधिक याद करता है - एक दुख और बुरे दिनों में, और दूसरे आनद और खुशी के दिनों म। अदीना इन सारे दिनों में अपनी प्रेमिका, गुल बीबी को भूल नहीं सका था। आज जब कि विजय और आनद का उत्सव हरेक गरीब मना रहा था, उसके लिये यह स्वाभाविक था कि ऐसे समय वह अपने दिल के दर्द को याद करे। उसकी इच्छा हो रही थी कि जितना जल्दी हो

सकें, वह स्वदेश लौट चले, और यह आनद और उत्सव जिस कारण हुआ, उसकी गात अपनी प्रेमिका को सुनाये, और उसे भी इस आनंद का भागी ननाये, लेकिन उसके लौटने में एक बड़ी गाधा यह थी कि बरफ पड़ने से पहाड़ से जाने का रास्ता गद हो गया था। अदीना वसत मजबूर था के आने तक प्रतीक्षा करने के लिये। उसने निश्चय किया कि जैसे ही रास्ता खुले, देश जानेवाले पहिले ही गिरोह के साथ अपने मुल्क चला जाय।

---

## घर वापस

दीना ने पूरे तीन साल कारखाने में काम किया। यद्यपि उसकी मजदूरी बहुत कम थी, किंतु वह अपने खाने-पहिनने तथा दूसरे कामों में बहुत कम खर्च कर, पैसा जमा करता गया। उसी से उसने कभी एक थान साटन खरीदा, कभी एक थान छींट, कभी कुछ गज सूफ, कभी दो विलायती रूमाल, एक शादी की पोशाक और एक-जोड़ा जूता। चीजें खरीद-खरीद कर वह अपने खुर्जी (झोले) में रखता गया। वह सोचता था कि गुल बीबी इन चीजों को देखकर प्रसन्न होगी, और तीन साल की जुदाई तथा तरह तरह की तकलीफों को, जिन्हें उसने बहुत मुश्किल से झेला है, दिल से भुला देगी। अदीना ने अपनी कृपामयी नानी को भी भुलाया नहीं। उसके लिये भी एक छींट की पोशाक, एक सूत की पोशाक और कुछ गज ढाका (मलमल) खरीद लिया। गाँव तथा पड़ोसियों के बच्चों के लिये कुछ मिस्री, मिठाइ, बिस्कुट और चाय खरीदकर रख लिया।

मार्च और अप्रैल का महीना भी बीत गया। जब कारखाने का काम का मौसिम भी खत्म हो गया था, और पहाड़ का रास्ता भी बरफ से कुछ कुछ खाली हो गया था। पहिला गिरोह इकट्ठा होकर पहाड़ की ओर चला। अदीना ने तीन रूबल में अपने सामान के लिये एक गधा खरीद लिया था, और बुखारा के बीस नकद तंकों को कमर में बाँध रखा था।

अदीना रास्ते में जा रहा था, लेकिन उसका दिल बहुत अधीर हो, उसके अंग-अंग को कँपा रहा था। उसे मालूम नहीं था कि आगे क्या आनेवाला है। वह सही-सलामत घर पहुँच जायेगा, या रास्ते में ही मर

कर अपने मनोरथ को अपने साथ ही दफना देगा ? देश पहुँचने पर भी क्या वह अपनी प्रेमिका को जैसे घर में छोड़ आया था, वैसे ही पायेगा, या वह तकलीफ में पड़कर अथवा किसी दूसरे के चंगुल में फँसकर, हाथ से बेहाथ हो गई ? उस वक्त उसके दिल की हालत क्या हुई होगी ? अगर भाग्य ने मदद की, और उसने अपनी मँगेतर को सही सलामत अपने घर में पाया, तो भी क्या अपने दोस्तों और दुश्मनों के बीच विवाहोत्सव मनाकर वह खुल्लम-खुल्ला कह सकेगा, 'यह मेरी जीवन-साथिनी हो गयी ?' अरबाब कमाल का जाल फिर बीच में बाधक होगा, और उसे स्थानीय हाकिम के क़ैदख़ाने में बंद होना पडेगा, जहाँ से दूसरी बार उसे फिर परदेश भागना पडेगा ?

यह कड़वे मीठे विचार, यह अच्छी बुरी आशंकायें और यह भयास्पादक संदेह, जिन्हें कोई भी आशिक़ अपने दिल से दूर नहीं कर सकता, अदीना बेचारे पर भी प्रभाव डाल रहे थे, और उसके मन को धीरज नहीं बँध रहा था।

अदीना सामान को गधे पर लाद, उसे आगे कर, हाथ में डंडा लिये, पैदल उसके पीछे चल रहा था। उसका मन उपरोक्त विचारों, संदेह और आशंकाओं से भरा हुआ था। कभी कभी वह आशावान हो, जोश में आ अपने साथियों के साथ 'नक्शेमुल्ला' का कोई पद गाने लगता—

'पर्वत-तटी में लाला के फूलों की राशि,
लेकिन मेरे सिर में तेरे लिये उत्सुकता की बाढ़।
राह पत्थरों से भरा, और मेरा घोड़ा लँगड़ा,
तेरे लिये अधीरता ने मुझे प्यादा कर दिया।
क्या हुआ, जो पंछी उड़ गया,
आँखों के बाण ने क्या उसे लक्ष्य बनाया।
सुन्दर स्वर वाले पंछी, सुन्दर बोली वाले बुल्बुल ने
तेरे गुलाबी मुख की प्रशंसा का गीत गाया।'

और कभी-कभी वह अत्यन्त निराशा और नाउम्मीदी से और चिता की नदी मे डूबते-उतराने लगता, और अपने-आपको भूल जाता।

बारे, अदीना जिस कारवाँ के साथ हुआ था, वह करातेगिन इलाके म दाखिल हुआ। अभी कारवाँ वालों ने अपने सामान का उतारा भी नहीं था कि करातेगिन के हाकिम के नौकरों और जकात (आयात कर) वालों ने चारों ओर से उन्ह घेर लिया, और उनके असबाब और सामान को उठाकर, चौकीदारों के पहरे म दिया, और उनके बोझा ढोनेवाले जानवरों को भी एक ओर ले जाकर बाँध दिया। स्वय काफला के लोगों का भी कैदियों की तरह एक कोने म जाकर रखा। इसके बाद एक एक करके छानबीन शुरू हुई। मुसाफिरों के पहिनने के कपड़े को, उनके पाजामे को, उनके कमरबन्द तक को खुल्वा के देखा, जामा के अस्तर का फाड़ डाला, पायजामों को पैर से निकलवाया। इस तरह की नगी तलाशी म जो कुछ भी नकद उनके पास से मिला, उसे एक रूमाल मे रख जकातची (जकातवाले अफसर) के सामने ढाँककर रखा गया। इस लूट म अदीना का भी बोझ तका हवा हो गया। कारवाँवालों ने बहुत फरियाद और गुहार की, बहुत खुशामद की, और जकातकी तथा उसके नौकरों से कहा—"हमारी हालत पर रहम कीजिये! हमने तुर्किस्तान में एड़ी का पसीना चाटी तक करके, स्वय न खा, न पहिन अपने बाल बच्चों के लिये पाँच पैसा जमा किया था। ऐसा न कीजिये कि इतने सालों क प्रवास के बाद हम खाली हाथ अपने बच्चों के पास जायँ।"

जकातची ने कहा—'हम मुसल्मान है। तुम भी मुसल्मान हो! इसलिये इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार बादशाह की आज्ञा का पालन करो। हम तुम्हारे सामान और बोझे को देख रहे हैं। उसका हिसाब करेंगे, और जो नगद पैसा तुमसे लिया है, उसमें से तुम्हारे असबाब की ज़काात का हिसाब करेंगे। फिर तुम्हारे हाथ म ज़कात का कागज लिख कर देंगे। उस कागज के कारण दूसरे अमलों की दस्तदाज़ी से

तुम्हें छुट्टी मिल जायगी, और तुम अच्छी तरह अपने घर पहुँच जाओगे। यह बात बादशाह का हुक्म और इस्लामी धर्म शास्त्र की आज्ञा के अनुसार है। जो कोई इस आज्ञा से मुह मोड़े, उसका माल हम बादशाह के नाम से ज़ब्त करेंगे, और उस आदमी को बेड़ी पहिनाकर करातेगिन के जेलखाने में भेज देंगे। अब और कोई बात करने की जरूरत नहीं है। बस सलाम।"

बेचारे अपने चार पाँच तकों के लिये अफसोस कर रहे थे। दूसरे माल-असबाब के ज़ब्त होने की बात सुनकर, उन्होंने अपना मुँह बंद किया, और रिजा-ब कजा (खुदा की मर्जी) पर भरोसा कर, जमीन पर बैठ गये। अभी तलाशी और बगाझोरी खत्म नहीं हुई थी, उनके थैलों और खुर्जियों को एक एक करके खाला गया, उनमें जो कुछ भी माल पसद आया, उनमे से किसी को "यह हमारे लिये सौगात है", "यह जनाब मीर हाकिम के लिये ठीक है", और यह दूसरी चीजें बेगाजान (हाकिम की बीबी) के लिये अच्छी होंगी", कहकर ले लिया। छोटे-छोटे नौकरों ने भी हाथ साफ किया। किसी ने रूमाल लेकर जेब म डाल ली, किसी ने मिस्री के टुकड़े खीसे मे डाल लिये। कारवाँवाले बेचारे, जो सभी मजदूर थे, सिवाय रोने धाने के क्या कर सकते थे? लेकिन उनका रोना धोना उन सगदिल नौकरों के लिये केवल हँसी मजाक का ही कारण हो सकता था। कारखाने में काम करनेवाले मजदूरों ने फरवरी क्राति के उत्सव को देखा था, और क्राति के बारे म कितनी ही बातें सुनी थीं। उन्होंने देखा कि अत्याचारियों और जालिमों की ताकत अब भी वैसी ही है, अब भी वे कमजारों को उसी तरह लूट-खसोट सकते हैं। दीन और धर्म शास्त्र तो लोगों को मारने के फंदे हैं, जिन्हें वे यहाँ इस्तेमाल कर रहे हैं। इन खूँख्वार भेड़ियों से छुट्टी पाने का एकही उपाय है कि सारी दुनिया के गरीब एक हो जायँ।

अंत म अदीना के गट्ठर को खोलने की बारी आई। लाल साटन

के थान को देख जकातची ( अफसर ) एका-एक अपनी जगह से उठकर गोश्त पर चील की तरह टूट पड़ा, और पजा मारकर साटन के पुलिंदे को हाथ मे ले, "है, है, यह बहुत अच्छा माल है। छोटी बेगीजान ने इसी तरह के साटन की माँग की थी। सो यहाँ मिल गया!" कहते हुए अपने चमड़े के बक्सों पर रख दिया।

अदीना बेचारे का अभी अपने बीस तके के चले जाने का अफसोस कम नहीं हुआ था, और अब उसने यह हालत देखी। उसने आँखों म आँसू भरकर, जमीन पर पड़ के, मिन्नत की—"जनाबबेग, पैरों पड़ता हूँ, अपनी जान निछावर करता हूँ, घर जा रहा हूँ। यह साटन शादी के लिये लिया है। ऐसा न करें कि मेरा शादी का काम बिगड़ जाय। कृपा करें! इसे मुझे बख्श दें! मेरी जवानी और निराशा पर दया करें!"

जकातची बोला—"बचा, बहुत हल्ला मत कर।"

"स्वय कह रहा है कि शादी करना है तो क्या बेगी जान की सौगात नहीं देगा? यह कैसी बेशरमी है?"

जकातची उतने ही से बस न करके, एक विलायती रूमाल ले, अपनी जेब म रख, "यह हमारी सौगात है", कहकर, हँस पड़ा। अदीना का रोना धोना सिर्फ उपहास का मसाला बना।

जिस वक्त असबाब की तलाशी ली जा रही थी, उसी समय काफिले म आया शरीफ नाम का सरायवान दो प्याला हरी चाय ले आया, जिसके ऊपर पुराने दैनिक पत्र का एक टुकड़ा रखा हुआ था। जकातची ने उस दैनिक पत्र को देख चिल्लाकर अपने नौकरों से कहा—'बाँध लो जदीदी ( नवयुगवादी ) को।"

बिल्ली जैसे चूहे पर पड़ वैसे नौकरों ने "पगड़ी ले आ" कहते उसके सिर से पगड़ी छीन ली, और बेचारे शरीफ को लात मारकर, उसके पैरों में रस्सी बाँधे एक कोने में पटक दिया।

जकातची ने कारवाँवालों से कहा—"क्या तुम्हारे भीतर इस काफिर

का सगा-सम्बंधी या दोस्त-यार है ? हो, तो बतलाओ।"

कारवाँवाले यह हालत देख, भौंचक से रह गये। उनको पता भी नहीं था कि ऐसी घटना घटेगी। भय के मारे काँपते हुए, उन्होंने कहा—"इस आदमी को हम नहीं पहिचानते। यह केवल रास्ते म हमारे साथ हो लिया था।"

जकातची ने काफिलेवालों से पूछते हुए कहा—"सच बोलो, तुमम और कौन जदीदी है ?"

बेचारे काँरवावालों ने जदीदी का नाम भी नहीं सुना था, उन्हाने जवाब दिया—"हम जदीदी को नहीं जानते और न हमने किसी का ऐसा नाम सुना है।"

वस्तुत ये सभी बेचारे बेपढे लिखे आदमी थे। सवेरे से शाम तक कड़ी मेहनत में लगे नहीं जानते थे कि हाल के सालों मे बुखारा म क्या हुआ, और वहाँ 'जदीद' और 'कदीम' को लेकर कितनी खून-खराबी हुई। उन्होंने समझा कि 'जदीदी' किसी अपराधी का नाम है, जो कि हाकिमों के हाथ से भाग गया है, और उसे ये लोग ढूँढ़ रहे हैं। इसीलिये उन्होंने कहा—"हमने जदीदी नामवाले किसी को नहीं देखा।"

अन्त म शरीफ के सामान और उसके जानवर को बादशाही माल बनाकर, उसे बाँधकर, पहरेवालों के साथ करातेगिन भेज दिया। दूसरे कारवाँवाले लुट गये थे, तो भी सही सलामत रास्ते पर अपने को पाकर उन्होंने शुक्र किया।

जब कारवाँवाले अपने इलाके म चल रहे थे। हर जगह कहीं नायब-काजी मिले, कहीं हाकिम के अमले मिले, कहीं जकातची क आदमियों से भेंट हुई। उनम से भी हर एक ने कभी जकात के नाम पर, कभी सौगात के नाम पर जबरदस्ती उनकी चीजें छीन लीं। इस प्रकार सबसे बढ़िया चीजें लुट गयीं और अदीना की तो प्राय सारी चीजें इसी म खत्म हो गयीं। अगर वे सीमांत के जकातची के कागज

की दिखलाते, तो ये उपहास करते हुए कहते—"इसको अच्छी तरह अपने पास रखो। अगर सिर दर्द हो तो भिगोकर पीना। हमें इसकी जरूरत नहीं। अगर जरूरत हो तो हम ऐसे कई कागज तुम्हें दे सकते हैं।"

बेचारे मजदूर लूटने से बचे माल्मता को ले अपने-अपने घरों को गये। अदीना भी गाँव के एक साथी सगीन के साथ, जिसका गाँव उसके गाँव के नजदीक था, चला। दोनों एक दुराहे पर पहुँचे, जहाँ वे अलग होनेवाले थे। अदीना ने सगीन से शादी के दिन आने के लिये प्रार्थना की। फिर दोनों दो ओर चल दिये।

---

## फिर क्या देखा ?

दीना अरबाब कमाल से बहुत भय खाता था। इसीलिये उसने दिन को सीधे गाँव में जाना अच्छा नहीं समझा। अपने गधे को चरने के लिये छोड़, वह एक दर्रे में सोया रहा। सूर्यास्त होने में बाकी रही तीन घड़ियों को काटना अदीना के लिये तीन साल से भी ज्यादा कठिन था। अदीना मानो ऐसा प्यासा था, जो नदी-तट पर पहुँचकर भी पानी से महरूम था, ऐसा भूखा था, जिसके सामने थाली परसी रखी हुई थी, लेकिन मुँह उसका बाँध दिया गया था। अदीना 'कोई देख न ले' सोच, एक चट्टान के पीछे लेटा, अपनी आँखों को सूरज से अलग नहीं कर रहा था—"वह सूरज जो कि हर रोज अपने उदय से रात के दुख दर्द को अदीना के दिल से कुछ कम करता था, वह सूरज जो कि प्रति रात्रि अपने डूबने से रात की चिंता और तकलीफ में उसे डालता था, आज उसी सूरज का प्रभाव अदीना के ऊपर दूसरे ही प्रकार का दिखाई पड़ता था। सूरज अदीना को प्रिय नहीं लग रहा था। वह हृदय से चाहता था कि वह जल्दी डूब जाय। लेकिन सूरज अपने रास्ते जाने में जल्दी नहीं करता और उसको इसकी कोई परवाह नहीं थी कि अदीना के दिल पर क्या गुजर रहा है।

धीरे धीरे ही सही, अन्त में सूरज पहाड़ के पीछे छिपा। लेकिन उसकी किरणें अब भी पहाड़ की पीठ पर साफ दिखाई पड़ रही थीं। यह किरणें हर रोज की तरह अच्छी नहीं मालूम हो रही थीं, बल्कि किसी कब्र पर दुख और रंज लिये जलती मोमबत्ती की तरह प्रतीत होती थीं। अंत में अदीना के भाग्य का सूरज उगा। दुनिया उसकी आँखों के सामने प्रकाशमान हुई, जबकि सूरज अपनी अन्तिम किरणों को समेटकर डूब गया, और दुनिया में चारों ओर अन्धकार छा गया।

को दिखलाते, तो ये उपहास करते हुए कहते—"इसको ः
अपने पास रखो। अगर सिर दर्द हो तो भिगोकर पीना। ।
जरूरत नहीं। अगर जरूरत हो तो हम ऐसे कई काग
सकते हैं।"

वेचारे मजदूर लुटने से बचे मालमता का ले अपने-अ
गये। अदीना भी गाँव के एक साथी सगीन के साथ,
उसके गाँव के नजदीक था, चला। दोनों एक दुराहे पर
वे अलग होनेवाले थे। अदीना ने सगीन से शादी के
लिये प्रार्थना की। फिर दोनों दो ओर चल दिये।

———

उनमें से किसी का फल अच्छा भी हो सकता था, और किसी का बुरा भी। उस दिन रात को बीबी आइशा जब गुल बीबी के साथ सोइ, तो क्या देखा कि एक चोर घर के भीतर आ घुसा, जिससे बीबी आइशा ने कहा—"तू कैसा चोर है कि एक गरीब बुढ़िया के घर म घुस आया, और उसे बेकार ही डरा रहा है ?"

चोर ने जवाब दिया—"तेरे पास एक बहुत मूल्यवान रत्न है। उसकी मुझे आवश्यकता है।" यह कहकर चोर ने गुल बीबी की आर मुँह किया। बीबी आइशा मारे डर के चिराग हाथ में ले जब देखने चली, तो देखा कि वह चोर नहीं है, बल्कि खुद अदीना है।

बीबी आइशा ने इस स्वप्न को आज कइ बार गुल बीबी से कहा। स्वप्न को फिर दुहराकर, उसने उसकी ताबीर (फल) भी कहा—"इस सपने का शुभ फल यही है कि अदीना जल्दी ही आ रहा है। लेकिन इसका बुरा फल भी है, जिससे कि भगवान उसकी रक्षा करे।'

बीबी आइशा ने स्वप्न के बुरे फल को गुल बीबी से नहीं कहा, तो भी वह अपने मन म डर रही थी कि अचरज नहीं कि कोइ दुश्मन गुल बीबी को पकड़ने के ख्याल से चोर की तरह घर में घुसे और वह अदीना का जिस पर उचित हक है, उसके हाथ से चली जाय।

इसी समय दरवाज़े पर पैर की आहट सुनायी दी। बीबी आइशा को भय हुआ कि कहीं स्वप्न का बुरा फल न उपस्थित हुआ हो और उसका चेहरा फक हो गया। बुढ़िया ने गुल बीबी को दूसरी कोठरी म जाने का इशारा किया। इस समय तक आनेवाला बाहरी दरवाजे से घर के भीतर चला आया था, बीबी आइशा ने घबराकर उठते हुए, चिल्ला कर कहा—"तू कौन है ? और किसलिये एक गरीब बुढ़िया के घर म रात को आया है ?"

आनेवाले ने बड़ी नरमी से "मादर जान, मत डर, मैं तेरा बच्चा अदीना हूँ," कहकर आवाज दी।

गुल बीबी, खातिरजमा रख, खड़ी रही। अदीना के लिये एक

यह सच है कि अभी तक अदीना के लिये दिन सौभाग्य की वस्तु थी, और रात दुर्भाग्य की वस्तु, किन्तु आज उसने रात के जल्दी आने की कामना की थी। भविष्य के गर्भ में क्या है, इसका भय भी उसके हृदय में समाया था। अब उसे घर जाना था। मानो गधा भी अदीना के मन की बात जानता था, इसलिये पेट भर चरकर, दुनिया के अंधकार में डूबते ही वह चट्टान के पास आकर सवारी के लिये तैयार खड़ा हो गया।

अदीना ने अपनी खुर्जी और थैले को गधे पर लादा। सारी यात्रा में यह पहिला मर्तबा था, जब कि अपने गधे पर सवार हुआ, क्योंकि वह जल्दी ही घर पहुँच जाना चाहता था। गधा भी तीन घंटा आराम कर, खूब पेट भर चर चुका था। वह तेजी से कदम बढ़ाने लगा। लेकिन अदीना को उतने से संतोष नहीं था। उसे गधे की चाल बहुत सुस्त मालूम होती थी। वह उड़कर घर पहुँच जाना चाहता था। अंत में अधीर हो, गधे से उतर कर पैदल हो, दो डंडे लगाकर, जानवर को भगाया, और खुद उसके पीछे दौड़ने लगा। लेकिन इधर चलते चलते उसके पैरों में छाले पड़ गये थे, इसलिये गधे के बराबर चल नहीं सकता था। अंत में फिर गधे पर चढ़ा। कुछ दूर जाने के बाद, फिर वह सुस्ती से अधीर हो उतर पड़ा, और तेज चलने की कोशिश करने लगा। इसी तरह कभी गधे पर और कभी पैदल चलते हुए, वह अपने घर पहुँचा।

घर के भीतर बीबी आइशा लेटी हुई बात कर रही थी, और गुल बीबी बातें सुनती उसके पैर दबा रही थी। यद्यपि ये वही बातें था, जिनको गुल बीबी कई बार सुन चुकी थी, लेकिन उन्हें सुनने से वह ऊबी नहीं थी, बल्कि और चाव से उन्हें सुनना चाहती था, क्योंकि बीबी आइशा की बातचीत सदा अदीना पर पहुँच जाती थी। ये बातें अधिकतर उन स्वप्नों के बारे में होती थी, जिनमें बीबी आइशा अदीना को देखती थी। बीबी आइशा जो स्वप्न देखती,

उनमें से किसी का फल अच्छा भी हो सकता था, और किसी का बुरा भी। उस दिन रात को बीबी आइशा जब गुल बीबी के साथ सोई, तो क्या देखा कि एक चोर घर के भीतर आ घुसा, जिससे बीबी आइशा ने कहा—"तू कैसा चोर है कि एक गरीब बुढ़िया के घर में घुस आया, और उसे बेकार ही डरा रहा है ?"

चोर ने जवाब दिया—"तेरे पास एक बहुत मूल्यवान रत्न है। उसकी मुझे आवश्यकता है।" यह कहकर चोर ने गुल बीबी की ओर मुँह किया। बीबी आइशा मारे डर के चिराग हाथ में ले जब देखने चली, तो देखा कि वह चोर नहीं है, बल्कि खुद अदीना है।

बीबी आइशा ने इस स्वप्न को आज कई बार गुल बीबी से कहा। स्वप्न को फिर दुहराकर, उसने उसकी ताबीर (फल) भी कहा—"इस सपने का शुभ फल यही है कि अदीना जल्दी ही आ रहा है। लेकिन इसका बुरा फल भी है, जिससे कि भगवान उसकी रक्षा करे।'

बीबी आइशा ने स्वप्न के बुरे फल को गुल बीबी से नहीं कहा, तो भी वह अपने मन में डर रही थी कि अचरज नहीं कि कोई दुश्मन गुल बीबी को पकड़ने के ख्याल से चोर की तरह घर में घुसे और वह अदीना का जिस पर उचित हक है, उसके हाथ से चली जाय।

इसी समय दरवाज़े पर पैर की आहट सुनायी दी। बीबी आइशा को भय हुआ कि कहीं स्वप्न का बुरा फल न उपस्थित हुआ हो और उसका चेहरा फक़ हो गया। बुढ़िया ने गुल बीबी को दूसरी कोठरी में जाने का इशारा किया। इस समय तक आनेवाला बाहरी दरवाज़े से घर के भीतर चला आया था, बीबी आइशा ने घबराकर उठते हुए, चिल्लाकर कहा—"तू कौन है ? और किसलिये एक गरीब बुढ़िया के घर में रात को आया है ?'

आनेवाले ने बड़ी नरमी से "मादर जान, मत डर, मैं तेरा बच्चा अदीना हूँ," कहकर आवाज दी।

गुल बीबी, खातिरजमा रख, खड़ी रही। अदीना के लिये एक

दूसरा खतरा भी पैदा हो गया था, क्योंकि "तेरा बच्चा अदीना है," इस वाक्य को सुनकर आइशा "वाइ" कहकर, बेहोश होकर, जमीन पर गिर पड़ी थी। उसके गिरने की आवाज गुल बीबी ने सुनी। वस्तुत ये चन्द क्षण गुल बीबी और बीबी आइशा, दोनों के लिये बड़ी बेचैनी पैदा करनेवाले क्षण थे। हद से ज्यादा खुशी का एकाएक होना ऐसा ही परिणाम लाता है और कभी कभी तो मौत का भी कारण बन जाता है। बीबी आइशा और गुल बीबी, दोनों एक क्षण पहिले सख्त भय भीत थीं और दूसरे ही क्षण आनन्द की सीमा पार कर गई थीं।

दरवाज़ा खोलने पर मालूम हुआ कि गुल बीबी ने अपने को बहुत जोर लगाकर सँभाल रखा है, लेकिन बीबी आइशा अब भी बेहोश पड़ी हुई है। अदीना इस तरह देख और रुक न सका। पानी का बर्तन लाकर, उसने उसके हाथ और मुँह को थोड़ा धोया। सर्द पानी के प्रभाव से बीबी आइशा होश में आयी और "मेरे स्वप्न का शुभ फल सीधे सामने आया" कहती, अपने आँखों की रोशनी अदीना को गोद म खींचकर, कुछ देर तक हाय हाय करती, आनन्द का रुदन रोती रही। फिर मद हुए चिराग के प्रकाश को बढ़ाने पर जब बीबी आइशा की आँखे अदीना के मुँह के ऊपर पड़ीं, तो उसने अपने काँपते हुए हाथों को उसकी गर्दन पर रख, उसके सिर और मुँह को चूमा और उसके ओठों को चाटा। इस चुम्बन से उसे आनन्द मिल रहा था, और वह मुहब्बत की बातें करती जाती थी। लेकिन जीभ के सूखने से आगे बेचारी ७३ साला बुढ़िया अपनी आकस्मिक प्रसन्नता को भी अच्छी तरह प्रकट नहीं कर सकती थी। हाँ, उसकी आँखों से गिरते आँसुओं की धारा अदीना क सिर और मुँह को तर कर रही थी, जिसे जब-तब आस्तीन से पोंछने की जरूरत पड़ रही थी।

काफी देर बाद बीबी आइशा का आनन्द विह्वल मन कुछ स्थिर होने लगा, उसके दिल को भी ढारस मिला और उसने इन तीन सालों में अरबाब कमाल की ओर से जो-जो कारवाइयाँ हुइ थीं, उनकी कथा

अदीना को कह सुनायी। अदीना को यद्यपि बहुत लज्जा आ रही थी, लेकिन वह और ज्यादा देर रुकने की शक्ति न रख सका और गुल बीबी का समाचार पूछ बैठा।

बीबी आइशा ने कहा—"धन्यवाद है खुदा को कि गुल बीबी सही-सलामत है। अपनी बात में मैं उसे तो भूल ही गई।" कहते हुए वह अपनी जगह से उठकर बाहर गयी।

गुल बीबी को दूसरी कोठरी में उठाकर, लौटकर उसने फिर कहना शुरू किया—"मैं चाहता हूँ, जितनी जल्दी हो सके, तेरी मँगेतर का हाथ तेरे हाथों में दे दूँ। केवल अरबाब कमाल के झगडे का निपटाने की जरूरत की है। गुल बीबी तेरी मँगेतेर है, और जल्दी ही तेरी बीबी होगी, लेकिन जब तक निकाह नहीं हो जाता, जब तक उसे देखना ठीक नहीं है। पहिले जब तुम दोनों छोटे-छोटे बच्चे थे, तब एक-दूसरे को देखने म हर्ज नहीं था। लेकिन अब तुम सयाने हो गये, इसलिये दुनिया के रिवाज के मुताबिक चलने की जरूरत है।'

यद्यपि बीबी पर आइशा का बहुत जोर था, लेकिन वह आइशा के पीछे-पीछे आकर, किवाड़ की ओट से सब बातें सुन रही थी। उसके लिये नानी की शिक्षा पर चलना बहुत कठिन था, किन्तु क्या करती? बाप दादों के समय से चला आया। यही रिवाज था तो भी काम आसान था। अगर जिन्दगी रही, तो जल्दी ही दोनों का मनोरथ पूरा होगा। लेकिन अरबाब कमाल से छुटकारा पाना बहुत ही मुश्किल है। उससे जल्दी ही छुट्टी पाना जरूरी है, क्योंकि उनकी मनोरथ-सिद्धि उसी पर निर्भर करती है।

नाती और नानी ने सारी रात बात करने म गुजार दी। गुल बीबी का भी नींद नहीं आयी। इतने दिनों के दिल के दर्द को उसने अदीना के मधुर शब्द सुनकर कम करना चाहा।

---

# फन्दा टूटा

अदीना यद्यपि सारी रात नानी से बात करता रहा, लेकिन उसका दिमाग बराबर अरबाब कमाल के मामले से बँधा हुआ था। बहुत सोचा, किन्तु मुक्ति का कोइ रास्ता दिखाई नहीं दिया। अन्त मे उसने विचारा, 'विवाह ओर निकाह की रस्म का किया जाना किसी तरह छिपा नहीं रह सकता। चाहे कितने ही दिन घर में छिपा रहूँ, अन्त म एक दिन बाहर निकलना ही पडगा और तब शायद फिर देश को छोड़ना पडगा, गुल बीबी से मिलन की इच्छा को मन से निकालकर परदेश जाना पडगा। लेकिन मेरे लिये शरीर से प्राण निकाल देना आसान है, किन्तु गुल बीबी को दिल से निकालना आसान नहीं है। इसलिये अच्छा यही है कि चाहे जो भी हो, खुले मैदान में आ जाऊँ, और जो कुछ भी भवितव्यता हो, उसे देखूँ। शायद उसी में मुक्ति का रास्ता भी निकल आये।

अदीना यह निश्चय करके, सवेरे के वक्त कूचे में आया, और गाँव के इमाम मुल्ला ग्वाजराह से मिलने के लिये मसजिद म गया। उसने कुछ मिठाइ और चाय भेंट के तौर पर मुल्ला के सामने पेश की।

"जरूरत नहीं थी, जरूरत नहीं थी", कहकर इमाम ने मिठाइ और चाय लेकर, अदीना के लिये दुआ की, और उसके पिता की आत्मा के लिये फातिहा पढ़ा। फिर दान देने की महिमा वर्णन करते हुए, बहुत से अरबी वाक्य पढे। अन्त में कहा—"रात ही रात बीती, तेरे पिता को मैंने स्वप्न में देखा। उसके दोनों गाल लाल सेब की तरह चमक रहे थे। उसके शरीर पर नया सफेद जामा था, सिर पर

पगड़ी थी यह मेरे नजदीक आकर, कुछ मिठाइ और चाय देकर, बोला 'मुल्ला जी, मेरे अदीना के लिये दुआ कीजिये। आपकी दुआ अवश्य खुदा के पास स्वीकृत होगी।' अब देख रहा हूँ कि यह वही मिठाइ और चाय है। जिसे तेरे पिता ने स्वप्न म दिया था। इससे मालूम होता है कि तेरे पिता की खुशखबरी के अनुसार मेरी दुआ भी तेरे लिये कबूल हुइ है।"

निश्चय ही मुल्ला जानकराह यह झूठ अदीना की मिठाइ और चाय के लिये बोला। अगर अदीना के बजाय कोई दूसरा आदमी होता, तो शायद इस कहानी पर विश्वास करता। लेकिन अदीना कारखाने में मजदूरों के बीच रह और वहाँ की सभाओं में बातें सुन चुका था, फरवरी क्रान्ति के उत्सव में शामिल हो चुका था। ऐसी झूठी बातों का उसे पता था। लेकिन उसने यही उचित समझा कि बाहर म मुल्ला की बातों पर विश्वास दिखलाये।

अदीना ने मुल्ला की दुआ लेकर, अपने घर का रास्ता लिया। मुल्ला अदीना के यहाँ से उठते ही, जरा भी देर किये बिना, अरबाब कमाल के घर पहुँचा और बोला—"खुशखबरी है, भेंट दीजिये! अदीना आ गया है। यही वक्त है उस भगोड़े से अपना हक अदा कराने का। लेकिन भूलियेगा नहीं, जब अपना हक ल, तो मेरे हक का भी याद रखियेगा, जिसम कि हमारे बीबी-बच्चे भी ज़रा एक देग गरम कर सकें।

अरबाब कमाल ने इमाम का "हाँ, जरूर" कहकर प्रसन्न किया, और अपने पुत्र इबाद को हुक्म दिया कि घोडे पर सवार होकर नायब-काजी, मुल्ला मर्दखुदा के पास जाकर उन्हे बुला लाये, जिसम कि यहीं पर उनके सामने मामले का फैसला हो। अरबाब खूब जानता था कि अगर यह मामला स्वय काजी के सामने गया, तो दोनों तरफ से खर्च भी बहुत ज्यादा होगा और मामला भी जल्दी तय न होगा।

इबाद बाप की आज्ञा मान, घोडे पर सवार हो, रवाना हो गया।

एक गाँव से दूसरे गाँव में नायब-काजी की तलाश करते-करते, आखिर उसने उसे एक मुर्दाखाने में पाया और शाम तक उसे अपने घर ले आया।

उस रात को अरबाब कमाल के घर मे गाँव के बड़े-बूढ़े (पच), इमाम, मुल्ला खाकराह और नायब-काजी मुल्ला मर्दखुदा इकट्ठा होकर, सलाह करते तथा दावत खाते रहे। अदीना के बारे म यही तय हुआ कि अगले दिन सवेरे उसे मसजिद में लाया जाय, नायब-काजी उसे बाँधने का हुक्म देकर डरवाये, फिर गाँव के बड़े बूढे बीच में पड़, यह कहकर सुल्ह करवायें कि जब तक अरबाब कमाल का 'हक' अदा नहीं हो जाता, तब तक के लिये उनकी नौकरी करने की स्वीकृति का अदीना एक दस्तावेज लिख दे और नायब-काजी तथा काजी का खिदमताना भी अदीना के सिर डाला जाय।

इस सलाह के अनुसार अगले दिन सवेरे अदीना को मसजिद के दरवाज पर लाया गया। अदीना के साथ सगीन भी आया, जो कि शादी का दिन मनाने के लिये अपने दोस्त के पास आया हुआ था। लेकिन ताजिक कहावत मशहूर है कि 'मैं आया दिलखुशी को, और सामने आया कपासकसी' यहभी साल सगीन के ऊपर घटी। बेचारा शादी-खुशी क लिये आया था, और यहाँ जजाल देखने म आया। सगीन को जब यह बात मालूम हुइ, तो उसने अदीना से कहा—"अच्छा हुआ, जो मैं आ गया। मालूम होता है कि ये तुझे तकलीफ देनेवाले है। शायद इस बारे में मैं तेरी कुछ सहायता कर सकूँ।"

बारे, सगीन और अदीना मसजिद के दरवाजे पर आ खड़े हुए। नायब-काजी ने रात की सलाह के अनुसार अदीना को खूब धमकी दी, उसे चोर, लोगों का माल उड़ानेवाला, भगोड़ा आदि कहकर, बाँध लेने का हुक्म दिया। गाँव के इमाम ने सुल्ह और शान्ति कराने का अभिनय करते हुए, बीच मे पड़कर कहा— "जनाब नायब साहब का खिदमताना जो कुछ मुनासिब है, उसे अदीना देगा और अरबाब

कमाल को भी अपनी स्वीकृति का दस्तावेज लिख देगा, और जब तक कर्ज अदा न हो, तब तक अरबाब की खिदमत से सिर नहीं हटायेगा। जनाब नायब साहब भी अब इसके पुराने अपराध को क्षमा करें, और इसकी भूल-चूक को लड़कपन और कम-तजर्बेगी की बात समझकर माफ कर दें, और जनाब शरीयत पनाह ( धर्मपालक ) काजी साहब का मुहरा न ले कर अदीना का यह मामला खत्म कर दें।"

नायब काजी मुल्ला मर्दखुदा ने चिल्लाकर कहा—"नहीं, यह नहीं हो सकता! क्या देश बिना हाकिम का है? ऐसे मनमानी करनेवाले बच्चे को अपने किये का फल चखना चाहिये, तभी उसे शिक्षा मिलेगी।"

गाँव के बड़े-बूढ़ों ने बीच में बोलते हुए, इमाम का समर्थन किया, और उसकी बात पूरा करने के लिये कहा। नायब-काजी खिदमताना एक थान छींट निश्चित हुआ। उन्होंने नायब से प्रार्थना की कि अदीना के पिछले गुनाह का क्षमा करके, उसकी ओर से एक एकरारनामा लिख देने की कृपा करें, तथा काजी साहब के मुहराना के लिये जो कुछ उचित समझें लें, ।

मगीन ने देखा कि अदीना का काम खराब होने जा रहा है, उसके ऊपर ऐसा फन्दा पड़नेवाला है कि अंतिम उम्र तक वह अरबाब कमाल की गुलामी से छूट नहीं पायेगा। यह सोचकर, उसने अपने का बीच मे डालते हुए, नायब-काजी के कान में कहा—"जनाब नायब, एक थान छींट आपका हलाल हक है। इसके अतिरिक्त एक जोड़ा जूता और एक विलायती रूमाल भी हम अदीना की ओर से आपको देते हैं। ऐसा करें कि अदीना अरबाब कमाल के हाथ से मुक्ति पा जाय।"

नायब ने कहा—"यह काम मुश्किल है, लेकिन तेरी खातिर मैं ऐसी बात करूँगा, यदि तू अपने वादे पर कायम रहा, नहीं तो अदीना के साथ तुझे भी बंदी बनाऊँगा।"

"खुदा एक, बात एक! आप खातिर जमा रखें।" कहते हुए, सगीन ने शपथ खाकर, नायब का दिल भर दिया।

नायब ने अदीना की जबान से एक दरख्वास्त लिखी, जिसके अनुसार अरबाब कमाल के दावा को झूठ बतलाता है, और अरबाब ने जोरी आदेश से अदीना की ओर से जो कागज लिखवाया था, उसे वह स्वीकार नहीं करता। साथ ही अदीना ने अरबाब कमाल की तीन साल नौकरी की, जिसकी तनख्वाह उसे मिलनी चाहिये। अरबाब कमाल अदीना की तीन साल की तनख्वाह को देने की जगह उसे डराता-धमकाता है।

नायब ने कागज लिखकर, लोगों के सामने उसे पढ़ा। सभी आश्चर्य म पड़ गये। नायब ने कहा—"अब मामले का रग दूसरा हो गया है। अब अरबाब कमाल को भी अदीना के साथ हमें काजीखाना ले चलना होगा, जिसमें कि इन दोनों के बीच म पड़कर, स्वय इस्लाम के काजी साहब अपना फैसला दें और उसके लिये अरबाब से जो कुछ पूछ-ताछ करना हो, करें।"

अरबाब कमाल और गाँव के बुजुर्गों ने देखा कि काम खराब हुआ चाहता है। वे बीच में पड़कर, यह सलाह देने लगे कि अरबाब कमाल और अदीना के बीच का झगड़ा इस तरह निबटाया जाय कि दोनों अपने-अपने दावे को बिना किसी शर्त उठा लें, और नायब के खिदमताना और काजी के मुहराना को भी दोनों बराबर बराबर दें। इसके लिये अरबाब की तरफ से एक मोटी भेड़ उन्होंने नायब को भेंट के तौर पर दी, और अदीना के घर से भी एक थान छींट मँगवाकर नायब को दे दिया। फिर प्रार्थना की कि झगड़ा यहीं खतम कर दिया जाय। नायब ने पहिले "नहीं" "नहीं हो सकता" कहकर, कितनी ही बार इनकार किया, किन्तु अत में इमाम तथा बड़-बूढ़ों की बात मानकर राजी हो, फातेहा पढ़ा और कहा कि दोनों तरफ के दावों के फैसले का कागज काजी को मुहर करके उसी वक्त मिल जायगा जब कि भेड़

लेकर कोइ वहाँ जायगा। सगीन भी अपने वादे के मुताबिक बगल में पड़ी रूमाल को निकालकर, जिस वक्त नायब घोडे पर सवार होने लगा, रिकाब पकड़ने के बहाने नायब के नजदीक जाकर खुर्जी में डाल दिया। नायब ने सगीन के हाथ से कोड़ा लेते हुए— 'तेरी उम्र लम्बी हो, मेरे पुत्र'' कहकर अपना रास्ता लिया।

झगड़ा तो खत्म हुआ किन्तु, बेचारे अदीना के पास कुछ नहीं रह गया कि वह शादी का इतजाम कर सके। फरगाना से लाया गधा इतना दुबला पतला हो गया था कि पहाड़ में कोइ उसे किसी दाम पर खरीदने के लिये तैयार नहीं था। बाहर से लौटने पर रोटी तोड़ने का रिवाज है, लेकिन अदीना वह भी नहीं कर सकता था, क्योंकि उसके लिये गाँव के तीन-चार बड़े बूढ़ों को न्योता देना पड़ता और फिर उन्हें खाने के साथ एक एक रूमाल भा देना पडता। इसके लिये कम-से-कम बीस तकों की जरूरत थी और अदीना के पास एक तका भी नहीं था, और न कोइ चीज ही अब उसके पास रह गयी थी।

---

## यात्रा का निश्चय

अदीना के लिये इसके सिवा और कोइ चारा नहीं था कि वह फिर फरगाना की ओर रवाना हो। वहाँ जाकर कुछ दिनों मजदूरी और हम्माली करे, कुछ पैसा और सामान जमाकर, देश लौट भोज भाज करके गुल बीबी के साथ ब्याह करे और किसी तरह जीवन काटे। लेकिन इस बात को बीबी आइशा से कैसे कहे, यह उसकी समझ में नहीं आता था। बीबी आइशा हरगिज नहीं चाहती थी कि उसका एकलौता नाती दुबारा विदेश जाय और फिर उसे जुदाइ की आग में जलना पडे।

अरबाब कमाल के झगडे के खतम हो जाने के बाद उस रात अदीना ने अपनी नानी के साथ बात करते हुए चाहा कि यात्रा का जिक्र करे। लेकिन इस बात को वह एकाएक मुँह से निकाल नहीं सकता था। इसलिये उसने पहिले ब्याह की बात चलाइ और नानी से पूछा—"अब मेरे पास ब्याह के लिये कोइ चीज नहीं रह गयी है फिर भाज भाज कैसे किया जाय? इसके बारे में तेरा क्या विचार है?"

बीबी आइशा ने कहा—' हाँ, ठीक कह रहा है। भाज के बिना कैसे भोज किया जा सकता है? इस वक्त धीरज धरने की आवश्यकता है। खुदा मालिक है। जिस वक्त कुछ हाथ में आयेगा, तो शादी और भोज करेंगे।"

अदीना ने जवाब में कहा—"खुदा मालिक है, कहकर चुप बैठना बुद्धिमानी का काम नहीं है। पैसा और दूसरी चीजें कहीं भी आसमान से गिर कर किसी के हाथ में नहीं पहुँचतीं। अगर इस तरह फिजूल हाथ पर हाथ रखकर बैठेंगे, तो भूख से मर जायेंगे, भाज भाज की ता

बात ही दूर रही। यह हो सकता है कि लोगों को भोज दिये बिना ही निकाह कर लें। जब हाथ में कुछ आयेगा, तो देखा जायगा।"

बात करते हुए अदीना एक बडे ही नाजुक जगह पर पहुँच गया था, क्योंकि वह ७३ साला बुढ़िया, जिसके सारे बाल सफेद हो गये थे, हरगिज नहीं चाहती थी कि "बाप दादा के वक्त से चली आती रस्मों में से एक भी छोड़ा जाय, तमाम रस्मों को छोड़ने की तो बात ही क्या।"

नानी की बात का जवाब देते हुए बीबी आइशा ने कहा—"नहीं, बिना भोज के निकाह सभव नहीं है। ऐसा करने पर हम लोगों के सामने कैसे मुँह दिखायेंगे? क्या वह नहीं कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास चार घड़ी चावल पकाने की भी ताकत नहीं थी? अगर ऐसा था, तो क्यों बहू लाने और व्याह करने का लोभ किया? अगर लोगों की बात को कान न दें, तो भी बिना भोज के यह होना सभव नहीं है, क्योंकि खुद मेरे दिल में कितनी साध है। चाहती हूँ कि भोज में लोगों को बुलाकर आश ( खिचड़ी ) और रोटी तैयार करूँ। आज मेरी एक ही सतान है और मेरा साध भी एक ही है। वह साध यही है कि अपनी सतान के भोज और तमाशा को अपनी आँखों से देखूँ और कितने ही सालों से चली आती अभिलाषा को पूरी करूँ।"

"ऐसा ही सही" अदीना ने कहा—"लेकिन मैंने कहीं नहीं देखा कि बिना पैसे के भोज हुआ हो। बेकार आदमी कहीं से पैसा पैदा नहीं कर सकता। फिर तो भोज का ख्याल ही दिल से निकाल देने की जरूरत है। तू बहू लाने का ख्याल छोड दे और मैं भी बीबी लाने का विचार छोड़ दूँ।"

बीबी आइशा ने कहा—' मैं तुझे बेकार बैठने के लिये नहीं कह रही हूँ। किसी की नौकरी पकड़कर काम कर, कहीं मजूरी कर ले। इस प्रकार हम लोगों की रोज़ की रोजी चलेगी और भोज का भी इन्तजाम हो जायगा।"

अदीना ने बात को अपने मतलब की जगह पर पहुँचा दिया था। खुद नानी ने उसे नौकरी करने की सलाह दे दी। अब उसके लिये सम्भव था कि अपने असली अभिप्राय को प्रकट करे। उसने फिर बात की—"मैं नौकरी करने से जी नहीं चुराता। अगर नौकरी मिले तो इसी वक्त काम करने के लिये तैयार हूँ। किसकी नौकरी और कहाँ। यह हमारा वतन आज बुखारा के जालिम हाकिमों और खूँख्वार काजियों के हाथ से पामाल हो रहा है, सुनसान पड़े बयाबान की तरह वीरान हो रहा है। यह हमारा देश अमलों के जोर और जुल्म तथा मुल्लाओं की अँधेरगर्दी से ध्वस्त हो रहा है। अरबाब कमाल-जैसे लुटेरे बायों के जुल्म के कारण यह वतन मजूरों और गरीबों के लिये क़ैदखाना बना हुआ है। यहाँ कहाँ काम मिलेगा, जिसमें हम अपनी जीविका चला सकें और भोज का इन्तजाम कर सकें? *अरबाब कमाल की नौकरी मैंने* की थी। वहाँ मुझे क्या-क्या जुल्म नहीं सहने पड़े? क्या तू उन्हें भूल गयी? अगर फरगाना से लौटने के बाद एक थाल छींट और एक जोड़ा जूता तथा रूमाल न होता तो मुझे फिर अरबाब की गुलामी में फँसना पड़ता। *अब इसके सिवा कोई रास्ता नहीं है कि फिर फरगाना की यात्रा* करूँ और वहाँ मजूरी और कुलीगीरी करूँ। फिर कुछ पैसा जमा करके अपना काम ठीक करूँ और तेरी भी साध पूरी करने का उपाय करूँ। और हाँ यदि तू राजी हो कि बिना बीज के ही भोज करूँ अथवा बिना भोज की निकाह करूँ तो उसके लिए भी तैयार हूँ।"

बिना भोज के निकाह करने के लिए बीबी आइशा हरगिज राजी नहीं हो सकती थी और अदीना की बातों का जवाब भी उसके पास नहीं था। अन्त में वह भी इसी निश्चय पर पहुँची कि स्वयं भी गुल बीबी को भी लेकर अदीना के साथ फरगाना के लिये रवाना हो जाय, जिसमें दुबारा जुदाई की आग और गरीबी की मार सहने की नौबत न आये। यही ख्याल करके, बीबी आइशा ने अदीना से कहा—"अब परदेश जाने के सिवा और कोई चारा नहीं है तो मुझे और इस

अनाथ बच्ची को इस देश में अकेली न छोड़। हमें भी अपने साथ ले चल।"

यह बात अदीना को भी बहुत पसन्द आयी। वह फरगाना से लाये गधे को खूब खिलाने पिलाने लगा। उसने तय किया कि रास्ते में दोनों स्त्रियों में से एक एक को बारी बारी से सवारी पर और पैदल ले चलेगा। लेकिन ऐसे खतरनाक रास्ते में एक सुन्दर तरुणी का अकेले साथ ले जाना भारी खतरे की बात थी। उसके लिये एक और साथी का होना आवश्यक समझ, उसने जाकर सगीन से कहा—"अगर यात्रा करने का तेरा भी इरादा हो तो जल्दी तैयार कर, जिसमें दोनों साथ-साथ फरगाना चलें।"

सगीन ने कहा—"मैं एक हफ्ता बाद यात्रा करने के लिये तैयार हो जाऊँगा। लेकिन अपनी नानी को साथ ले जाने का ख्याल तू दिमाग से निकाल दे, क्योंकि इस विलायत (प्रदेश) का हाकिम हरगिज इसके लिये राजी नहीं होगा। कुछ साल पहिले मैंने भी चाहा था कि अपनी माँ को साथ ले जाऊँ और फिर लौटकर इन जालिमों का मुँह न देखूँ, लेकिन उन्होंने आज्ञा नहीं दी। यहाँ तक कि बुखारा जाकर, वहाँ के बड़े हाकिमों का भी हुक्म यहाँ के हाकिम के नाम लाया कि बुड्ढी माँ को अपने साथ ले जाने की आज्ञा मिले। लेकिन हाकिम ने उस बात से इन्कार ही नहीं कर दिया, बल्कि धमकाया, 'अगर दूसरी बार ऐसी चाराजोई की तो जेल में डाल दूँगा।'"

"वाह, अजब, अजब!" अदीना ने कहा—"क्या कारण है कि ये औरतों को यात्रा की इजाजत नहीं देते!"

सगीन ने हँसकर कहा—"दादार जान, अभी तू बच्चा है। तुझे तजुर्बा नहीं है। अपने देश के हाकिमों को तू पहिचानता नहीं। इसीलिये अचरज कर रहा है। मत ख्याल कर कि हमारे हाकिम बुद्धू हैं और बिना कारण ही हुक्म निकालकर, लोगों को परेशान करते हैं। नहीं, ऐसी बात नहीं है। ये हाकिम अपने लाभ को अच्छी तरह समझते हैं।

वह इसलिये मजदूरों को अपने परिवार के साथ इस विलायत में जाने की इजाजत नहीं देते, जिसमें कि उनके लाभ को हानि न पहुँचे। तुझसे साफ साफ कह रहा हूँ। जिस वक्त दूसरे मजदूरों के साथ हम फरगाना से लौटकर करातेगिन की सीमा पर पहुँचे, तो नकातची ने कितने का माल और नकद हमसे छीना?"

"कितने का? यह तो नहीं कह सकता", अदीना ने कहा—"किंतु इतना मालूम है कि उन्होंने बहुत ज्यादा नकद और माल हमसे छीना।"

"तेरी छींट, चाय, मिठाइ, जूती यह सब कहाँ गयी?" सगीन ने पूछा।

"लूट में चली गयी।"

"यदि हाकिम तुझे छुट्टी दे दे कि तू अपने परिवार के साथ ले जाय तो क्या फिर तू लौटकर इस इलाके में आयेगा?"

"नहीं, कभी नहीं। ऐसे मुल्क में हरगिज आना नहीं चाहूँगा जहाँ इतना जोर-जुल्म है।"

"इसीलिये हाकिम परिवार को साथ ले जाने की आज्ञा नहीं देता।" सगीन ने कहा—"क्योंकि इसी के कारण तो फरगाना और दूसरी जगहों की यात्रा करनेवाले मजदूर हर साल आकर हजारों तका इनको देते हैं। यदि ये परिवार के साथ जाने की इजाजत दें तो कोइ मजदूर दुबारा यहाँ लौटकर न आयेगा। ऐसी हालत में हाकिम, काजी, रईस और उनके नौकर-चाकरों का खीसा खाली रहेगा, उनका पेट खाली रहेगा। जैसे भी हो, अपनी नानी को राजी कर, जिसमें अगले हफ्ता हम यहा से रवाना हो जायँ।"

---

# यात्रा और जुदाई

●

दीना सगीन के पास से अपने घर आया। उसका दिल बहुत उदास था। जब उसने अपनी नानी को साथ ले जाने की बात तय की थी तो उस वक्त उसका दिल आनन्द के मारे वैसे ही उफन रहा था जैसे शराब का मटका। वस्तुत साथ ले जाने का विचार बहुत ही मधुर था। यदि उस तरह की यात्रा नसीब होती तो अदीना न केवल स्वय इस जुल्माबाद (अत्याचार-नगरी) से मुक्त होता, बल्कि इस प्रकार अपनी प्रेमिका और नानी को भी मुक्त करने म समर्थ होता।

किन्तु अब क्या हाल्त थी? अब उसे सफर करना था, रज और गम के काफिले के साथ जले हुए दिल, काँपती छाती और आँसुओं से भीगी आँखों के साथ। अब ऐसी हाल्त म उसे चलना था, जबकि वह भविष्य के बारे में कुछ नहीं कह सकता था। क्या वह सही सलामत लौटकर नानी को देख सकेगा? क्या उसे फिर अपनी प्रेमिका का प्रेम मिल सकेगा? सबसे बड़ी मुश्किल बात यह थी कि विदाई के वक्त पीछे छोड़ जानेवाले दुख और रज कैसे बरदाश्त कर सकेंगे?

इसी तरह के विचारों को लिये, अदीना अपने घर पहुँचा। पहिले उसने इधर उधर की बातें कीं, फिर सगीन की बात बतलायी। उसे सुनकर बेचारी बीबी आ२शा "हाय" कहकर गिर पड़ी और बड़ी करुणापूर्ण दृष्टि से अदीना की ओर देखने लगी।

*अदीना ने कहा—"मादरजान! और कोई रास्ता नहीं, सिवा इसके* कि सगीन के साथ सफर करूँ। मुझे उम्मीद है कि जल्दी लौट आऊँगा

और बुढापे और बीमारी के दिनों में तेरी खिदमत करूँगा। अब रोने-धोने से कोई फायदा नहीं। यदि अधिक रोना धोना करेगी, तो मेरा दिल, जो कि पहिले से पानी-पानी हो गया है, टूट जायगा। तब डर है कि मैं बीमार हो जाऊँगा और यात्रा पर न जा सकूँगा। यही बेहतर है कि धीरज धर के मेरे फटे कपड़ों की मरम्मत कर, मेरे लिए पाकदिल और आशापूर्ण हृदय से फातेहा पढ़ा, जिसमें कि मैं हर खतरे से सुरक्षित रहूँ। और इस वक्त जब कि यात्रा और जुदाई के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं, अपनी एक लालसा तुझे बतलाना चाहता हूँ। तू स्वयं जानती है कि मैं तुझे भूल नहीं सकता और तू भी मुझे भूल नहीं सकती। लेकिन मेरी लालसा यह है कि तू केवल मुझे ही याद न करना, बल्कि मेरी याद के साथ अनाथ गुल बीबी के दिल को प्रसन्न और सन्तुष्ट रखना।"

अदीना नानी से गुल बीबी के बारे में यह सिफारिश करते समय शर्म के मारे गड़ा जा रहा था, लेकिन और क्या करता? जल्दी ही वह यहाँ से प्रस्थान करनेवाला था और ऐसी हालत में जब कि नहीं जानता कि उसके और उसकी प्रेमिका के ऊपर क्या गुजरनेवाला है, बेचारी गुल बीबी के साथ सहानुभूति और संवेदना दिखानेवाला और कौन था? उसकी सहायता करनेवाली, सहारा देनेवाला, देखभाल करनेवाली अगर कोई थी तो केवल यही बुढ़िया थी। यदि उससे भी कुछ सिफारिश न करता तो मानो, वह गुल बीबी को भूल गया। इसीलिये लाज शरम को एक तरफ रखकर उसने अपने अभिप्राय को प्रकट किया।

यात्रा का दिन आ गया। अदीना के फटे कपड़े भी सिल चुके थे रास्ते के लिये कुछ रोटी और खाने की चीजें भी तैयार हो चुकी थीं वादे के अनुसार सगीन भी आ पहुँचा। इस दिन के लिये बीबी ने खास तौर से घी के साथ पुलाव पकाया था। उन्होंने मिलकर खाया, खुजा और थैले को गधे पर लादा। बीबी आइशा ने को अपनी गोद में दबा लिया। बेचारी में ताकत नहीं थी कि

कहती। वह केवल अपनी आँखों से छ छ पाँत आँसू बहाने लगी। सगीन दरवाने के बाहर गली मे एक घण्टा प्रतीक्षा करता रहा, किन्तु अदीना का कहीं पता नहीं था। इसलिये उसने आवाज दी—"जल्दी करो। अगर देर हुई तो हम आज रात को मंजिल पर न पहुँचेंगे और फरगाना जानेवाले कारवाँ का साथ न हो सकेगा।"

अन्त मे अदीना ने अपने को जोर से बीबी आइशा के गोद से अलग किया और उससे फातिहा पढने की प्रार्थना की। बीबी आइशा ने भी अपने काँपते हुए हाथ को फैलाकर, अदीना के लिये रास्ता साफ भाग्य और दौलत, आयु और पुण्य, खैर और बरकत, बिना खतरे का सफर आदि कितनी ही बातों के लिये दुआ माँगी। अदीना प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन लम्बी-चौड़ी दुआ खत्म होने को नहीं आ रही थी। अन्त में वह अपने हाथ को मुँह पर फेर, "फिर देखने तक खैरियत और खुशी के साथ सलामत रहो" कहते हुए बाहर निकला, लेकिन दरवाजे से अकेला बाहर नहीं निकला, बल्कि उसके साथ वेचारी बीबी आइशा की जान भी निकलकर चली आई। बीबी आइशा बचारी एकाएक मरे आदमी की तरह जमीन पर गिर पड़ी। अदीना तथा सगीन अपने गधों पर चढ़ चल पड़े।

गुलबीबी का क्या हुआ? इन दो-तीन दिनों म गुलबीबी की जो हालत हुई, उसका चित्र खींचना कलम की शक्ति के बाहर है। गुलबीबी एक अधखिली हुई कली थी, जिसके दिल म खिलने की चाह था। वह प्रेमी क प्रस्थान से, जैसे पतझड़ मौसिम की हवा का झोंका खा, मुझाकर जमीन पर आ पड़ी। गुलबीबी सचमुच वह कली थी, जिसने एक क्षण के लिये वसन्त को देखा और उसी समय पतझड़ आ धमका गया। उसके खिलते और मुरझाते देर नहीं लगी।

अदीना सगीन के साथ चला जा रहा था, लेकिन विदाई के वक्त घरवालों की जो हालत देखी थी, उसके कारण उसम बात करने की शक्ति नहीं रह गयी थी। कहा जा सकता है कि उसका होश ठिकाने

नहीं था। अदीना की हालत को देखकर, सगीन भी चुप था। इस तरह दोनों दोस्त पागलों की तरह रास्ता नाप रहे थे। कुछ घड़ी बाद पहले पहल सगीन एक गीत गाते हुए इस मौन का तोड़ा। सगीन के कंठ से जो शब्द और सुर निकले, मानो वह अदीना के दिल की ही ध्वनि थी, विशेषकर यह पद

'यह कैसी बेकसी है, यहाँ किसी को नहीं देख रहा हूँ।
ऐ दिलदार, तेरे दोस्त, शायद मेरी पुकार सुने।
यदि मेरी पुकार पहुँचे, तो मैं जिन्दा रहूँ,
नहीं तो दुनिया में मेरी धूल किसी के पास न पहुँचे।'

सगीन ने अपनी आवाज को ऊँचा करते हुए, पर्वतशिखरों को गुँजा दिया। अदीना में अब शक्ति नहीं रह गयी कि अपने क्रन्दन मिश्रित आवाज को सगीन के साथ न मिलाये। वह भी हर पद करुणापूर्ण स्वर में, दिल से आँसू बहाता, सगीन के साथ गाता रहा। जब तक कि सगीन ने अपने गीत को समाप्त नहीं किया, अदीना भी उसके साथ रोते-गाते हुए, अपने दिल के दर्द का कुछ कम करने में सफल हुआ। इसके बाद उसने स्वय भी एक गजल गाना शुरू की—

'गम व दर्द, जुदाई का दाग ‘
हाय, क्यों पैदा हुई मरे हजारों दुखों से भरी मुहब्बत ‘
हरेक चीज से जुदाइ होती है, किंतु
जुदाइ से किसके दिल की दोस्ती है?
प्रिया से जुदा रह कोई कैसे जिन्दा रहता है?
प्रियतमा से जुदाई है प्राणों से जुदाइ।
जुदाइ हर हालत में मुश्किल है, विशेषकर
मुहब्बत के बाद प्रिया से जुदाइ।
तेरे मिलन और वियोग से तुष्टि नहीं,
ऐ इश्क, तू मेरी जान पर एक बला है।
तू ऐ मिलन, धन है, किंतु अचिरस्थायी,

तू ऐ वियोग, दर्द है, किंतु तेरी कोइ दवा नहीं।
मैं दुखों की उपत्यका मे मारा मारा फिरूँ।
तू, ऐ प्रिय-पथ प्रदर्शक, कहाँ है?
मेरी यही पुकार है कि मरने के समय तक—
जुदाइ से चिल्लाता, जुदाइ से चिल्लाता रहूँ।'

हम इस सारे सफर का विवरण नहीं देना चाहते। वह सारा पथ दुख और रज से भरा हुआ था। सगीन के साथ अदीना इस तरह कुछ दिन इस पहाड़ और जगल म शाकपूर्ण गीत गाते और जुदाइ से आह भरते अदीजान पहुँचा। दानो ने अपने गधे का सराय मे बाँध दिया और पहले जिस कारखाने में काम किया था, वहाँ गये। कुर्बान अली सरदार को देखकर उन्होंने नौकरी के लिये नाम लिखाया। कपास की फसल और कारखाने के काम का समय भी आ चुका था। कुर्बान अली ने उनसे कहा कि "पहिली सितम्बर को जब कारखाना खुलेगा, आकर हाजिर हो जाना, नहीं ता तुम्हारी जगह किसी दूसरे को रख लिया जायेगा।"

अदीना और सगीन ने अपने गधे का बेच दिया और कारखाना खुलने के दिन तक का समय अपने पुराने दोस्तों और देश भाइयों से मिलने में बिताया।

---

# यूनानी शास्त्र की चिकित्सा

●

यह मालूम है कि पिछले सालों काम करते हुए अदीना को बहुत तकलीफ उठानी पड़ी थी। यहाँ पर उसे जो मजूरी मिलती थी, उससे वह कभी पेट भर रोटी नहीं खा सका। सोने के लिये उसके पास जगह नहीं थी। इस मेहनत मशक्कत का जो तजर्बा उसे हुआ था, उसके कारण अदीना ने निश्चय किया था कि अब वह फिर कारखाने में काम नहीं करेगा और कोई दूसरा काम ढूँढ़ेगा। लेकिन अब वहाँ फरवरी क्रांति हो चुकी थी। मालिक की जबान अब पहिले की तरह तेज नहीं चलती थी और उसका अभिमान भी कुछ टूट चुका था। अदीना ने सोचा, कि अब कारखाने का हरेक काम मजूरों के अनुकूल होगा और उन्हें आराम से रहने का मौका मिलेगा।

अदीना के ऐसा ख्याल करने का कारण था। सारे जुलूस, उत्सव, ताली पिटाई जो फरवरी-क्रांति के समय हुई थी, उसके करनेवाले साधारण लोग थे। सबके विचार इसी तरह थे, यद्यपि ये विचार बेबुनियादी थे। बादशाह जरूर तख्त से उतार दिया गया था, लेकिन पूँजीपतियों की हुकूमत चलाने के लिये पहिले ही जैसे जालिम दूसरे लोग आ गये थे। जैसे जार के जमाने में हुकूमत पूँजीपतियों, बड़े बड़े जमींदारों और कारखानेवालों के इशारे पर नाचती थी, उसी तरह फरवरी-क्रांति के बाद भी असली शासक पूँजीपति और कारखानेदार ही थे। पूँजीपतियों का जिसमें लाभ था, वही बात हाकिम करते, चाहे उसमें मजदूरों का कितना ही नुकसान क्यों न होता हो। पूँजीपति क्यों चाहते कि उनका खासा ख्याल हो, और भूखे मजदूरों का पेट भरे? मजूरों के नेता इसे

खूब जानते थे और इस बात की कोशिश में थे कि किस तरह पूँजी-पतियों की शक्ति को तोड़ा जाय। लेकिन अदीना की तरह बहुत-से मजदूर थे, जो पढ़े-लिखे नहीं थे, न जिनके पास कुछ ज्ञान था और वे इस बात को समझ नहीं पाते थे, न उसका अनुसरण कर सकते थे।

बड़ी आशा के साथ अदीना कारखाने में दाखिल हुआ था, लेकिन दो-तीन दिन के बाद ही उसने देखा कि मालिक का वही रोब दाब और डाँट फटकार अब भी है और मजूर परसाल तथा परियार साल की भाँति ही रक्त के आँसू बहा रहे हैं। यदि अन्तर है तो केवल नाम और उपाधि में ही। मुसलमान मजूरों की अब कमेटी क़ायम हो गयी है, लेकिन उसका अध्यक्ष और हर्ता-कर्ता वही कुर्बान अली सरदार है। मालिक भी वही परसालवाला है। अन्तर केवल इतना ही है कि पहिले अर्ज़ी देते वक्त जहाँ उसे 'जनाब मालिक' लिखना पड़ता था, वहाँ अब 'माननीय नागरिक' लिखना पड़ता है। दूसरे काम भी पहिले ही की भाँति चल रहे हैं।

अदीना अपने घर से निकला था अपनी प्रियतमा गुल बीबी को अपनी बनाने के लिये। उसका इरादा था कि फरगाना चलकर कारखाने में काम कर कुछ पैसा जमा करके ब्याह के लिये आवश्यक चीजों का जमा करेगा, फिर देश लौटकर अपनी प्रिया के साथ खुशी से जिन्दगी बसर करेगा, लेकिन जब कारखाने की यह हालत उसने देखी तो उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। उसका शरीर शिथिल हो गया, उसके दिल में मुर्दनी छा गयी। अन्त में वह बीमार पड़ गया।

बीमारी के दूसरे दिन कुर्बान अली सरदार ने मुसलमान मजूर कमेटी के नाम से उसे कारखाने के काम से छुड़ाकर बाहर कर दिया। इस जुल्म के खिलाफ किसी का आवाज उठाने की हिम्मत नहीं हुई। अदीना की बीमारी बढ़ती गई। कारखाने से निकाले जाने के बाद मगोन उसे एक सराय की कोठरी में ले गया, जिसका सरायवान एक ताजिक था। वहाँ कुछ दिनों तक वह पड़ा रहा, लेकिन उसकी हालत और बुरी होती

गया। सरायवान बेचारा बड़ी सहानुभूति रखता था। वह किसी दुआ पढ़नेवाले को बुला लाया, जिससे कि वह अपनी दुआ से अदीना को अच्छा कर दे। इस दुआख्वान की दुआ से सरायवान को लाभ हुआ था, लेकिन अदीना की बीमारी पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। उसके बाद एक स्थानीय हकीम को वह बुला लाया।

हकीम ने "बिसमिल्ला" कहते सरायवान की कोठरी में आ बीमार के सामने बैठ एक लम्बी दुआ पढ़कर दम फूँकी, फिर सरायवान की ओर नजर करके पूछा—"क्यों, ऊका (आका), क्या खिदमत है?"

सरायवान ने वहीं लेटे हुए अदीना की ओर इशारा करके कहा—"यह हमारा भाई कुछ दिनों से बीमार है। एक दुआ पढ़नेवाले को बुलाकर दुआ करवाया, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अब मेरी आशा पहिले खुदा पर फिर आपके ऊपर है। शायद आपके चरणों की कृपा से यह अच्छा हो जाय। बेचारा परदेशी जवान है। जो कुछ सेवा होगी, मैं करूँगा। इसका तरुण जीवन है। यह चंगा हो जाय और मैं भी पुण्य का भागी होऊँ।"

हकीम ने कहा—"दुआ पढ़ना भी मैं जानता हूँ। तुमने बेकार ही पैसा बरबाद किया। आजकल के दुआ पढ़नेवाले मूर्ख होने से उसे पढ़ना नहीं जानते। दुआओं को वह तावीज पर खोदकर या कागज पर लिखकर देते हैं, जिससे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि न उसके पीर (गुरू) होते हैं, न उस्ताद। फिर उनकी दुआ से कैसे लाभ हो सकता है? हम अल्लाह की कृपा से अक्षर जानते हैं, अपने पिता स्वर्गीय इशान (गुरू) हकीम कलाँ से फातेहा भी सीखा है। पीछे खुदा की मेहरबानी से हज के लिये काश्मीर नामक शहर में पहुँचे। वहाँ के दुआ पढ़नेवाले बड़े वली-अल्लाह (सिद्ध) होते हैं। उनसे दुआ सीखी और फातिहा ग्रहण किया। वहाँ से दुआ की एक किताब भी लाये हैं, जिसे कि हमारे काश्मीरी गुरु ने दुनिया से आँख मूँदते वक्त मुझे दिया था।

सरायवान ने इस लम्बे-चौड़े व्याख्यान का अन्त न देख, ऊबकर बीच में ही बात काटते हुए कहा--"अच्छा, तक़सीर ( माफ़ हो ), इस वक़्त कृपा करके बीमार को देखिये।"

हकीम ने सरायवान की ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा--"कभी अपने हाथ को दीजिये। मैं आपकी नब्ज़ ( नब्ज़ ) देखूँ।"

'नहीं, तक़सीर मैं बीमार नहीं हूँ। यह मेरा ऊका ( आक़ा ) बीमार है।" कहते हुए सरायवान ने दुबारा अदीना की ओर संकेत किया।

हकीम ने "अच्छा, अच्छा" कहते, अदीना की कलाई को अपने हाथ में ले, जैसे शैख लोग हाथ पकड़ समाधि में बैठते हैं, उसी तरह अपनी आँखों को मूँद सिर को झुका लिया। थोड़ी देर बाद आँख खोलकर अदीना के हाथ को छोड़ अपने हाथ को खींचकर बड़े इतमीनान के साथ मानों वह बीमार की भीतरी-बाहरी सभी बीमारियों को जान गया है, कहा--"कोई डर नहीं है। इस बच्चे को कोई खतरनाक बीमारी नहीं है। केवल इसका पेट खराब है और हड्डियों के जोड़ में थोड़ा वात पैदा हो गया है। हकीम लुकमान के चिकित्सा विज्ञान के अनुसार इसे थोड़ी-सी दवा पिलाता हूँ। सब अच्छा हो जायगा।'

सरायवान ने हकीम को आने के लिए दो तंका और लुकमानी दवा के लिए दो तंका देकर जल्दी ही दवा भेजने के लिये कहा। हकीम फिर एक बार बीमार और सरायवान के लिये दुआ पढ़कर, घर से बाहर चला गया। फिर एक घड़ी बाद पानी जैसी एक बड़ी कड़वी दवा लाकर, "बिसमिल्ला, बिसमिल्ला" कहते हुए अदीना को पिलाई। फिर खुद भी दवा के प्रभाव को बढ़ाने के लिये अपनी तस्बीह ( माला ) लेकर कुछ बुदबुदाता बैठा रहा।

दो घड़ी बाद बीमार को पाखाना लगा। अदीना सरायवान की सहायता से पाखाने गया। लेकिन दवा ने तो जुलाब कर दिया था। जब अदीना पाखाने से लौटता, तो हकीम यह कहते हुए प्रसन्नता प्रकट

करता, "बीमारी का दसवाँ हिस्सा चला गया, नवाँ हिस्सा चला गया, आठवाँ हिस्सा चला गया। " वह खुद ही खुश नहीं होता था, बल्कि अदीना और सरायबान को भी प्रसन्न करने की कोशिश करता था। हकीम की बात सुनकर, सरायबान को विश्वास होने लगा और उसने भी प्रसन्नता प्रकट की। लेकिन अदीना के पास प्रसन्नता प्रकट करने के लिये शक्ति नहीं थी। धीरे-धीरे पचिश जोर पकड़ती गयी और बीमार चिल्लाने लगा। हकीम के दुआ बुदबुदाने से कोइ लाभ न देख, अंत में जोर जोर से "याशाफी, योशाफी" कहकर मारने लगा।

पाखाने में जोर की आवाज सुन, हकीम ने इसे भी अपनी दुआ का असर समझकर कहा—"या मुर्सल र् रियाह (ओ हवाओं के भेजनेवाले)!" और अपनी दुआ-पाठ को और तेजी से करना शुरू किया। वह बहुत प्रसन्न था कि बीमार पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। लेकिन अदीना के ऊपर क्या गुजर रही थी, इसे वही जानता था। हाँ, पेट के भीतर अब कुछ नहीं रह गया था, इसलिये दस्त आना बंद हो गया। हकीम "सारी बीमारी दूर हो गयी। कल आकर फिर देखूँगा" कहकर चला गया। लेकिन अदीना में हिलने डोलने की भी ताकत नहीं रह गयी थी। उसे भूख भी नहीं था। हकीम के कहे अनुसार सरायबान ने भेड़ के सिर के गोश्त का शोरबा तैयार किया था। उसम से अदीना ने थोड़ा-सा पिया। लेकिन तुरन्त ही दर्द के मारे वह मुर्दे की तरह गिर पड़ा। साँसों के सिवा बीमार में जीवन का कोइ चिह्न नहीं रह गया था। बाद म हकीम के आने की फीस एक तका और दवा का दाम एक तका कर दिया गया। वह एक हफ्ते तक रोज आता और माजूने-तुर्बुत, जवारिशी जीरा, गुल्कंद, शर्बत-बनफ्शा, शर्बत निलोफर और जाने क्या-क्या लाकर बीमार को पिलाकर चला जाता।

अंत में हकीम से बीमार और सरायबान दोनों ऊब गये। बीमार दिन-पर दिन कमजोर होता जाता था। बीमारी बढ़ती जा रही थी।

इसलिये इस खर्च को फजूल समझकर हकीम से सरायबान ने कहा—"दवा दारू तो एक हीला है। यदि इसकी उम्र बाकी है, तो इसी तरह तन्दुरुस्त हो जायगा। आपने बहुत कमजोर उपचार किया और कम पैसा लिया। सलामत रहें ! अब न आने से भी काम चल सकता है।"

हकीम ने कहा—"अच्छा-अच्छा। मेरी दवाओं के बारे में दिल में शक न पैदा करना। यदि शक करोगे, तो लाभ की जगह हानि पहुँचेगी। जिन दवाओं को मैंने दिया है उसे 'सनाय-मक्का' कहते हैं। इसे स्वर्गीय पिता इशान हकीम कलाँ ने मक्का की हज की यात्रा में प्राप्त किया था और स्वय अपने हाथों से चुरा लाये थे। माजून तथा शर्बत जो मैंने दिये, वह उन जड़ी-बूटियों से तैयार किये हैं जिन्हें मैं हज से लौटते वक्त हिन्दुस्तान के नामी शहर में पहुँचने पर वहाँ के सरनदीप नामक मजार से खोदकर लाया था। वहीं पर हजरत आदम की कब्र है। सुलेमान शेख अफगान भी सदा इन्हें माजून और शर्बतों को इस्तेमाल करते हैं। सुलेमान शेख छोटे आदमी नहीं हैं। उन्होंने अभ्यास करके 'कसफे-कबूर' (कब्र खोलना) का दर्जा हासिल किया है। मैं यूनानी शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करता हूँ। मेरे गुरु हकीम लुकमान तथा उनके शागिर्द हकीम अफलातुन और हकीम सुकरात हैं। ये सारे पवित्र मुसल्मान थे। उन्होंने हिकमत (चिकित्सा) की विद्या को गैब से सीखा था, हम काफिर डाक्टरों की तरह जैसी-तैसी दवाइयाँ नहीं देते फिरते। "

सरायबान ने देखा कि बात खत्म होने को नहीं आ रही है। उसने कहा—"अच्छा तकसीर, अब आप जा सकते हैं, जिसमें बीमार थोड़ा आराम ले सके। मुझे भी जरा काम करना है।" कह, हाथ को आगे करके उसने हकीम से छुट्टी लेनी चाही।

हकीम अपनी आँखों को सरायबान के हाथ और जेब से हटाये बिना, "अच्छा-अच्छा" कह बाहर आया। फिर सिर को दरवाजे के भीतर करके बोला—"उका (आका), एक बात की याद नहीं रही।

शायद फिर कभी इस उका या खुद तुम्हें कोइ बजमारी हो तो मुझे न भूलना।"

सरायवान ने हकीम की तरफ बिना निगाह किये, मुँह पिचकाकर ललाट पर शिकन लाके कहा—"भगवान रक्षा करे।"

हकीम सराय से निकलकर चला गया।

---

## अचानक-अकारणबन्धु

काम के हाथ से छूटने के एक सप्ताह बाद अदीना को फिर कुछ भूख लगने लगी। अब वह पहिले से बेहतर था, किन्तु तो भी अभी पाचन शक्ति नहीं थी और न शरीर में ताकत ही थी। विशेषकर खाँसी बहुत बढ़ गयी थी, जिससे उसे बहुत तकलीफ थी। सगीन जैसे उसके दोस्तों को बड़ा डर होने लगा।

अदीजान में ताजिकों में से कुछ कारखाने में काम करते थे, कुछ हम्माली करते थे, कितने ही चौकीदारी करते थे, और कुछ खराबखानी (होटल) या किसी की नौकरी में लगे थे। उन्होंने सगीन से अदीना की हालत सुनी तो आपस में सलाह करके निश्चय किया कि हवा बदलने के लिये उसे ताशकंद भेजा जाय। खर्च के लिये आपस में उन्होंने थोड़ा थोड़ा चंदा भी कर दिया। दूसरे दिन उनमें से कुछ सगीन के साथ आकर अदीना को रेल स्टेशन पर ले गये, और एक टिकट ताशकंद का खरीदकर, अदीजान-ताशकंद की गाड़ी में उसे बैठा दिया, जिसमें कि उसे रास्ते में गाड़ी बदलने की जरूरत न पड़े। बाकी बचे हुए पैसे को अदीना को देकर उन्होंने "खुश रहो" कहते हुए बिदाई ली।

एक रात दिन चलने के बाद अदीना ताशकंद पहुँचा। ट्रेन से उतरा। लेकिन कहाँ जाना है, यह उसे मालूम नहीं था। वह किसी आदमी को वहाँ न पहचानता था, न कोई जगह उसे मालूम थी। यात्रियों के साथ हो, स्टेशन से बाहर निकल ट्राम ठहरने की जगह पर पहुँचा। मुसाफिरों में से कुछ ट्राम द्वारा रवाना हुए और कितने ही

## अचानक-अकारणबन्धु

काम के हाथ से छूटने के एक सप्ताह बाद अदीना को फिर कुछ भूख लगने लगी। अब वह पहिले से बेहतर था, किन्तु तो भी अभी पाचन शक्ति नहीं थी और न शरीर में ताकत ही थी। विशेषकर खाँसी बहुत बढ़ गयी थी, जिससे उसे बहुत तकलीफ थी। सगीन जैसे उसके दोस्तों को बड़ा डर होने लगा।

अदीजान में ताजिकों में से कुछ कारखाने में काम करते थे, कुछ हम्माली करते थे, कितने ही चौकीदारी करते थे, और कुछ सरायखानी (होटल) या किसी की नौकरी में लगे थे। उन्होंने सगीन से अदीना की हालत सुनी तो आपस में सलाह करके निश्चय किया कि हवा बदलने के लिये उसे ताशकंद भेजा जाय। खर्च के लिये आपस में उन्होंने थोड़ा-थोड़ा चंदा भी कर दिया। दूसरे दिन उनमें से कुछ सगीन के साथ आकर अदीना को रेल स्टेशन पर ले गये, और एक टिकट ताशकंद का खरीदकर, अदीजान-ताशकंद की गाड़ी में उसे बैठा दिया, जिसमें कि उसे रास्ते में गाड़ी बदलने की जरूरत न पड़े। बाकी बचे हुए पैसे को अदीना को देकर उन्होंने "खुश रहो" कहते हुए बिदाई ली।

एक रात दिन चलने के बाद अदीना ताशकंद पहुँचा। ट्रेन से उतरा। लेकिन कहाँ जाना है, यह उसे मालूम नहीं था। वह किसी आदमी को वहाँ न पहचानता था, न कोई जगह उसे मालूम थी। यात्रियों के साथ हो, स्टेशन से बाहर निकल ट्राम ठहरने की जगह पर पहुँचा। मुसाफिरों में से कुछ ट्राम द्वारा रवाना हुए और कितने ही

शायद फिर कभी इस उका या खुद तुम्हें काइ रजमारी हो ता मुझे न भूलना।"

सरायवान ने हकीम की तरफ विना निगाह किये, मुँह निचकाकर ल्लाट पर शिकन लाके कहा—"भगवान रक्षा करे!"

हकीम सराय से निकलकर चला गया।

---

## अचानक-अकारणबन्धु

काम के हाथ से छूटने के एक सप्ताह बाद अदीना का फिर कुछ भूख लगने लगी। अब वह पहिले से बेहतर था, किन्तु तो भी अभी पाचन शक्ति नहीं थी और न शरीर में ताकत ही थी। विशेषकर खाँसी बहुत बढ़ गयी थी, जिससे उसे बहुत तक्लीफ थी। सगीन जैसे उसके दोस्तों को बड़ा डर होने लगा।

अदीजान में ताजिकों में से कुछ कारखाने म काम करते थे, कुछ हम्माली करते थे, कितने ही चौकीदारी करते थे, और कुछ सरायखानी ( होटल ) या किसी की नौकरी में लगे थे। उन्होंने सगीन से अदीना की हालत सुनी तो आपस में सलाह करके निश्चय किया कि हवा बदलने के लिये उसे ताशकंद भेजा जाय। खर्च के लिये आपस में उन्होंने थाड़ा थोड़ा चंदा भी कर दिया। दूसरे दिन उनमें से कुछ सगीन के साथ आकर अदीना को रेल स्टेशन पर ले गये, और एक टिकट ताशकंद का खरीदकर, अदीजान-ताशकंद की गाड़ी में उसे बैठा दिया, जिसम कि उसे रास्ते में गाड़ी बदलने की जरूरत न पड़े। बाकी बचे हुए पैसे को अदीना का देकर उन्होंने "खुश रहो" कहते हुए बिदाई ली।

एक रात-दिन चलने के बाद अदीना ताशकंद पहुँचा। ट्रेन से उतरा। लेकिन कहाँ जाना है, यह उसे मालूम नहीं था। वह किसी आदमी का वहाँ न पहचानता था, न कोई जगह उसे मालूम थी। यात्रियों के साथ हो, स्टेशन से बाहर निकल ट्राम ठहरने की जगह पर पहुँचा। मुसाफिरों म से कुछ ट्राम द्वारा रवाना हुए और कितने ही

पैदल ही शहर की ओर चल पड़े। अदीना आशा भरी दृष्टि से जानेवालों की ओर देखता रहा। लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। किसी ने नहीं समझा कि यह बेयार-मददगार, कमजोर बीमार आदमी सहायता की इच्छा रखता है। अंत में स्टेशन के कुलियों के सिवा और कोई यहाँ नहीं रह गया। वे भी नये मुसाफिरों के असबाब को लेने के लिये स्टेशन में चले गये और अपने काम में लग गये। उन्हें अदीना नाम के बेचारे नौजवान की कोई खबर नहीं रह गयी। जब अदीना ने देखा कि कोई उसकी सहायता और पथ प्रदर्शन करनेवाला नहीं है, तो वह धीरे धीरे ट्राम की सड़क को पार कर, दूसरी ओर के फुटपाथ पर आया, जहाँ कुछ लम्बे वृक्ष खड़े थे। वहाँ पेड़ के नीचे वह लेट गया। कमजोरी के कारण वह बेहोश हो गया या थकावट से नींद ने आ दबाया। जो हो, इस तरह वह कई घण्टे पड़ा रहा। जब उसने आँख खोली तो देखा कि शाम नजदीक है। अब भी ट्राम 'जरंग जरंग' करती इधर से उधर चक्कर काट रही थी। अब भी किसी की नजर अदीना की ओर नहीं पड़ी। सब अपने-अपने रास्ते चले जा रहे थे। यह शाम वह पहिली शाम थी, जब कि अदीना न घरबार को नहीं जानता था कि उसे कहाँ जाना है, न उसके पास वहाँ से उठने की ताकत थी। यह शाम गरीब अदीना के लिये सचमुच शामे-गरीबाँ थी।

"क्या ताजिक है?"

अदीना की आँखों में सारी दुनिया अँधेरी हो चुकी थी। उसे कोई आशा न रह गयी थी। इसी समय दूसरी भाषावाले देश में अपनी भाषा में बोले गये इन शब्दों को सुनकर उसका दिल खिल उठा। उसने अपने सिर के पास एक जवान को खड़े देखा।

"हाँ, एक अभागा ताजिक हूँ" कहकर उसने जवाब दिया।

"यहाँ क्या काम करता है?"

"नहीं जानता।"

"तेरा निवास-स्थान कहाँ है?"

"यही जगह है।"

'यहाँ निवास-स्थान नहीं हो सकता। रात को यहाँ सोना भी संभव नहीं है। पुलिसवाले रहने नहीं देंगे। कहीं दूसरी जगह तुझे जाना चाहिये।"

"मैं कोई जगह नहीं जानता, न किसी को पहचानता हूँ।"

"तो क्या इस शहर में कभी नहीं आया? अच्छा, आ मेरे साथ।"

'उठने की भी मुझमें ताकत नहीं है।"

जिस जवान ने अदीना से बात की थी, वह उसे उठाकर बगल में दबाये, ट्राम गाडी पर चढ़ा, अपने साथ ले चला।

जवान ने अदीना को वहाँ पड़ा देखकर सिर्फ एक नजर भर उसे देख लेना चाहा था। लेकिन उसकी उस हालत को देखकर सहायता करना आवश्यक समझा, क्योंकि वह भी उसी की तरह एक ताजिक था। जवान का नाम शाह मिर्जा था। वह कुछ सालों से नया-ताशकन्द शहर के एक समावार-खाने (चायखाने) में काम करता था। इस समय समावारखाने में कम फायदा देखकर मालिक ताशकन्द और अकतेप्पा के बीच के स्टेशनों में फेरी करने लगा था। शाह मिर्जा अपने मालिकों को ट्रेन पर सवार कराने आया था। लौटते वक्त उसकी नजर एकाएक अदीना पर पड़ी और उसकी शक्ल-सूरत से मालूम हुआ कि वह ताजिक है। इसलिये देशवासी की मुहब्बत से प्रेरित होकर, तथा दोनों मजदूर हैं, इस ख्याल से भी वह हाल पूछने के लिये मजबूर हुआ। और इस सवाल जवाब का परिणाम यह हुआ कि उसने अदीना को ले जाकर अपने समावारखाने में जगह दी।

शाह मिर्जा अदीना की देख भाल करने लगा। खासकर उसके लिये एक प्याला शोरबा पकाकर दिया। उसके सोने के लिये चारपाई पर बिछौना और तकिया लगा दिया। यद्यपि यात्रा के कारण अदीना बहुत थका हुआ था और उसकी बीमारी की हालत पहिले से बदतर हो गयी थी, लेकिन शोरबा पीने के बाद उसने अपनी हालत कुछ अच्छी

देखी। उस निराशा की हालत में एक अपरिचित आदमी की इस दया को अदीना सारे जीवन भर भूल नहीं सकता था। उसने किसी को ऐसा करते नहीं देखा था, इसलिये उसकी खुशी असाधारण थी। मन की इस अवस्था ने भी उसके स्वास्थ्य के लिये लाभ पहुँचाया। आज रात को उसे जितने आराम से नींद आयी, वैसी नींद उसे कभी नहीं आई थी। वह उस रात को खूब अच्छी तरह सोया। और सबेरे उठते वक्त उसे अपने शरीर में शक्ति मालूम हुई और बिना किसी के सहारे ही चारपाई से उठकर उसने हाथ-मुँह धोया।

शाह मिर्जा समावार के पास बैठा, चायनिक (केतली) को कपड़े से मलकर साफ कर रहा था। अदीना को उसने अपने नजदीक जगह देकर, हाल-चाल पूछे, प्याले में चाय और तश्तरी में रोटी रखके, उसे पीने के लिये कहा। फिर पूछा—"तेरा ताशकंद आने का क्यों इरादा हुआ?"

अदीना ने अपनी सारी जीवनी तो नहीं बतलाई, लेकिन बीमारी तथा कारखाने से निकाले जाने की कथा, दुआ पढ़नेवाले और हकीम की बात एक एक करके कह सुनाई। फिर यह भी बतलाया कि देश भाइयों ने सलाह करके हवा बदलने तथा स्वास्थ्य-लाभ के लिये उसे ताशकंद भेजा।

शाह मिर्जा ने कहा—"भले आया। ताशकंद बड़ा शहर है। स्वस्थ हो जाने पर यहाँ काम भी मिल सकता है। कारखाना छोड़ने की चिंता मत कर। यहाँ दवा दारू करना भी आसान है, क्योंकि यहाँ अच्छे-अच्छे डाक्टर हैं। उनमें से एक मेरा परिचित है। आज तुझे ले चलकर उसे दिखलाऊँगा। आशा है कि उसकी दवा से तुझे फायदा होगा। जब तक तू अच्छा न हो जाय, तब तक यह घर तेरा है। किसी बात की चिंता मत कर। आराम से यहाँ रह।"

अदीना सारी उम्र किसी डाक्टर के पास नहीं गया था, और न जाने की इच्छा रखता था। उसे विश्वास था कि डाक्टर की दवा

खानेवाले बीमारों में से बहुतेरे मर जाते हैं। यह विश्वास अदीना को कारखाने में पैदा हुआ था। कारखाने के मजूर जब टायफायड तथा दूसरी कठोर बीमारियों में फँसते तो पहिले दुआ पढ़नेवालों तथा ऐरे-गैरे हकीमों की दवाइ करते फिरते। जब बचने की आशा न रह जाती, तब उनके साथी डाक्टरों को दिखलाते। भला ऐसी हालत में डाक्टर की दवा क्या फायदा करती? बीमार के मर जाने पर लोग यही कहते कि डाक्टर की दवा बीमारी को अच्छा नहीं करती, बल्कि मौत को नजदीक लाती है। डाक्टर का इसमें कसूर नहीं था। वस्तुत मरने का कारण यही होता था कि बीमार को दवाइ करने का समय बिताकर डाक्टर के पास लाया जाता था। अदीना को डाक्टर के खिलाफ विश्वास था, लेकिन जब शाह मिर्जा ने जोर दिया, तो उसने जवाब दिया—"बहुत अच्छा। लेकिन मैं डाक्टर से डरता हूँ। अगर मेहरबानी करके हकीम की दवा कराओ, तो अच्छा हो। इसके लिये किसी मुसलमान हकीम को दिखलायें। कहते हैं कि ताशकंद बहुत बड़ा शहर है। शायद यहाँ बड़-बड़े होशियार हकीम मिल जायँ।"

शाह मिर्जा ने उत्तर दिया—"तू भूल मत कर। मैं भी पहिले तेरी ही तरह डाक्टरों को बुरा समझता था लेकिन इस कारखाने में आने के बाद मैंने देखा कि डाक्टर कितने होशियार हैं और मानव पुत्रों को कितना लाभ पहुँचाते हैं। प्रतिवर्ष बुखारा, समरकंद, फरगाना तथा तुर्किस्तान के दूसरे इलाकों और शहरों से हजारों बीमार ताशकंद आते हैं। कितने सिर्फ डाक्टर को दिखलाने के लिये ही आते हैं। बीमारों में से कितने ही हमारे समावार खाने में ठहरते हैं। उनमें से कितनों को डाक्टर के पास ले जाने का काम मैं करता हूँ। मैंने अपनी आँखों देखा है कि डाक्टर की दवा से अधिकांश रोगी तन्दुरुस्त हो गये। उन रोगियों से मैंने सुना कि उन्होंने कितने ही दुआ पढ़नेवालों और हकीमों के पीछे बहुत पैसा खर्च किया, किंतु सब बेकार गया। बीमारी हटने का कोइ रास्ता न देखकर, वह डाक्टर के पास आये। हाँ, ठीक

है, उनमें से किसी-किसी को डाक्टर की दवा से फायदा नहीं हुआ, या उनमें से कुछ डाक्टर को दिखलाने के बाद मर गये, लेकिन यह इस कारण नहीं हुआ कि डाक्टर ने दवा नहीं की, या दवा ने नुकसान पहुँचाया बल्कि इसका कारण यही था कि वह वक्त पर डाक्टर के पास नहीं आये। इसलिये उन ख्यालों को दिल से निकाल दे। तैयार हो जा। आज दोपहर बाद मैं तुझे डाक्टर के पास ले चलूँगा।"

शाह मिर्जा की दलीलों को सुनकर, अदीना को और कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई, और उसने जीभ दबाकर साथ चलना स्वीकार किया। तो भी अभी उसका दिल चंचल था। अब भी वह डरता था कि डाक्टर की दवा खाने से मर जायगा और गुल बीबी के मिलने से सदा के लिये महरूम हो जायगा। फिर उसने सोचा, 'शाह मिर्जा को आज तक मैं नहीं जानता था, फिर कैसे कह सकता हूँ कि वह मुझसे दुश्मनी रखता है? जो मेहरबानी उसने मेरे साथ दिखलाई है, उससे मालूम होता है कि वह भला आदमी है। भला आदमी कभी किसी को खतरनाक रास्ते में नहीं ले जाता। इसलिये हो सकता है कि डाक्टर के बारे में मेरा ख्याल गलत हो। शायद उसकी सहायता और पथ-प्रदर्शन से मैं बीमारी से छूट जाऊँ।'

इस तरह सोचने के बाद, दिल को मजबूत करके अदीना ने फिर कहा—"अच्छा, डाक्टर के पास चलूँगा। जिस वक्त तू चाहे, उसी वक्त मैं चलने के लिये तैयार हूँ।"

---

# डॉक्टर

क्टरखाने में बीमारों की पाँत में शाह मिर्जा के साथ अदीना भी बैठा हुआ था। डाक्टर ने एक बीमार को देखकर, खिड़की से सिर बाहर निकाल, बीमारों में से एक एक के ऊपर नजर दौड़ाई। जब उसने वहाँ शाह मिर्जा को देखा, तो उसे बारी से पहिले ही भीतर बुला लिया। शाह मिर्जा अदीना को साथ लेकर भीतर चला और वहाँ बैठे रोगियों ने "यह कैसी बेतरतीबी है? डाक्टर अपने पसंद के लोगों को बिना बारी ही के बुला लेता है', कहकर कुर-कुर करना शुरू किया।

डाक्टर ने शाह मिर्जा के पीछे पुरानी पोशाक पहिने रंग-उड़े अदीना को देखकर कहा—"क्या यही तेरा बीमार है?"

शाह मिर्जा ने डाक्टर को खातिरजमा कराते हुए जवाब दिया—"हाँ, यही है। यह बेचारा एक गरीब, बेकस आदमी है। इसकी हालत पर रहम खाकर, मैं अपने खर्चे से दवा कराने के लिये इसे लाया हूँ।"

डाक्टर शाह ने मिर्जा की बात को सुनकर, कुछ लज्जित होकर भी, अनसुने की तरह बीमार को देखना शुरू किया। शाह मिर्जा के संदेह को दूर करने के लिये, अदीना के अंग प्रत्यंग को खूब अच्छी तरह देखा। फिर मेज पर बैठ दवा लिखते हुए कहा—"बीमार का नाम क्या है?"

शाह मिर्जा अभी तक मेहमान का नाम भी नहीं जानता था, इसलिये अदीना की ओर मुँह करके पूछा—"हाँ, तेरा नाम क्या है?"

"अदीना।"

इस वक्त डाक्टर को स्वयं बहुत लज्जा आयी और उसने अपने

दिल में कहा, 'एक गरीब आदमी आदमी दूसरे गरीब की हालत को देखकर इतना दयार्द्र हो जाय, जब कि वह उसका नाम तक नहीं जानता। उसकी दवा के लिये यह पैसा भी खर्च करना चाहता है। और दूसरी ओर हम पढ़े लिखे लोग हैं जो समझते हैं कि हम मानवता की सेवा कर रहे हैं। किन्तु बीमार को देखते समय सबसे पहिले पैसेवाले का ख्याल करते हैं और बेपैसेवाले को दूर रखते हैं।'

डाक्टर जिस वक्त दवा का पुर्जा लिख रहा था, उस वक्त ये ख्याल उसके दिमाग में चक्कर काट रहे थे। उसने पुर्जा लिखकर, दवा खाने का ढंग बतलाया।

शाह मिर्जा ने अपनी जेब में हाथ डाला और चाहा कि उसकी फीस दे पर डाक्टर ने कहा—"नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। जिसके ऊपर तुझे दया आयी है, मुझे भी उस पर दया है। बेपैसेवाले बीमारों की दवा करने में जरा भी हर्ज नहीं है। इसमें हमारा क्या पैसा खर्च होता है?" लेकिन स्वभावत वैसी सहानुभूति न होने के कारण, उसने फिर कुछ सोचकर कहा—"दूसरे यह भी बात है कि तू बहुत से पैसेवाले बीमारों को मेरे पास लाता है। अगर उनके बीच एक बेपैसेवाला भी हो, तो कोई हर्ज नहीं। कहावत है कि 'एक बोरे खरबूजे में दो कच्चा भी।' इसी तरह यह गरीब भी पैसेवाले बीमारों के बीच 'कच्चा' की तरह है।" कहते हुए, वह हँस पड़ा।

डाक्टर ने शाह मिर्जा को छोड़ते समय हिदायत की—"कल खाना खाने से पहिले बीमार का थोड़ा सा थूक एक बर्तन में रखकर लाना।"

डाक्टर के कहने के मुताबिक दूसरे दिन शाह मिर्जा अदीना का थोड़ा-सा थूक ले आया। डाक्टर ने उससे कहा—"इसकी बीमारी का कारण यक्ष्मा (टी० बी०) है। मालूम होता है कि एक साल पहिले यह इस बीमारी में फँसा। लेकिन उसकी कोई दवा दारू नहीं की और न आवश्यक भोजन ही खाया, जिससे कि स्वास्थ्य बना रहता। यह बीमारी बहुत आगे बढ़ गयी है। अभी मुझे यही मालूम हो रहा है,

पीछे थूक का रसायनिक विश्लेषण करने के बाद बात और भी साफ होगी। बेचारा बीमार ऐसी हालत में पैसे से भी तंगदस्त है। इन सब बातों के ऊपर हाल में इसने ऐसी चीज खायी है, जिसकी वजह से हालत और बुरी हो गयी है। इसकी पाचनशक्ति चली गयी है, भूख नहीं लगती। शरीर में खून कम है। कल दवा जो मैंने लिखी थी, वह इसी कम-खूनी के लिये है। अगर दवा ने ठीक काम किया तो उम्मीद है कि इसकी पाचन शक्ति ठीक हो जायेगी। लेकिन यक्ष्मा की दवा थूक को अच्छी तरह देखकर लिखूँगा।"

शाह मिर्जा ने कहा—"आपने ठीक पता लगाया। बीमार के अपने कहने से मालूम होता है कि आने से कुछ दिन पहिले अन्दीजान में एक मुसलमान हकीम ने उसे जुलाब की दवा दी थी।"

"खैरियत हुई कि वह मरा नहीं", डाक्टर ने कहा—"इस तरह के बीमार के लिये जुलाब मौत का रास्ता है, विशेषकर पुराने हकीमों की ऐसी दवाइयाँ, जिनकी एक बूँद भी पेट में पेचिश पैदा कर देती हैं। यह तो अच्छे, हट्टे कट्टे आदमियों को भी पटक देती है। यही कारण है, जो बेचारा ऐसी हालत में है।"

डाक्टर ने बात समाप्त करते हुए कहा—"जो कुछ मैंने उस बीमार के बारे में कहा, उसे उसके सामने प्रकट न कर, यह कहते हुए तसल्ली देता रहा, कि 'डाक्टर कहता है कि तुम चंगे हो जाओगे?' नहीं तो भय के मारे उसकी आयु क्षीण हो जायगी।"

दूसरे दिन शाह मिर्जा डाक्टर के पास थूक की जाँच के बारे में पूछने गया। डाक्टर ने पिछले दिन की बात दुहराते हुए कहा—"उसके थूक ने भी मेरी बात को पुष्ट किया।" फिर उसने दवा लिख कर हिदायत की—"उसे ऐसा भोजन मिलना चाहिये जो सुपच हो और शक्तिवर्धक भी। रोज उबला हुआ दूध देना और आधा उबला अंडा भी। यदि हो सके, तो बीमार स्वच्छ हवा में कुछ देर टहले और धूप में सूरज के सामने बैठे। कीमिज (घोड़ी के दूध की ताड़ी) के

मौसिम मे यदि यह एक डेढ़ माह कौमिज पिये, तो उससे बहुत लाभ होगा। अगर मेरी बातों पर चलेगा, तो पूरी तरह चङ्गा न होने पर भी मौत के मुँह से जरूर छूट जायगा और ज़िन्दगी बड़ी कर पायेगा। यदि ऐसा न किया, तो थोडी सी बदपरहेजी से भी जिन्दगी खतरे म पड़ जायगी। यह भी जान रखा कि इस बीमारी के बीमार की खाँसी छूतवाली होती है और थोड़ी सी असावधानी से भी बीमारी दूसरे का लग सकती है। इसलिये इसके प्याले, तश्तरी, चायनिक, कटोरा आदि को दूसरों के बर्तनों से अलग करके रख। खा लेने के बाद बर्तनों का उबलते पानी में धोकर कपड़े से अच्छी तरह सुखा लेना चाहिये। हो सके, तो धूप में डाल देना चाहिए। इसके थूक और बल्गम के लिये अलग थूकदानी रख दे। हर रोज थूक और बल्गम को ज़मीन में गढ़ा खादकर दबा दे। फिर थूकदानी को गरम पानी से धोकर धूप में सुखा ले। ऐसा ध्यान रख, जिसमें इसकी चीजें में दूसरों के हाथ न जायँ, और इसका किया हुआ भोजन दूसरा न खाय, नहीं तो उसको भी बीमारी पकड़ लेगी।"

---

## अक्तूबर क्रान्ति

शहर की सड़कों पर बन्दूक और मशीनगन चलने की आवाज आ रही थी। लोग हर तरफ भाग रहे थे। दुकानें बन्द थीं। दरवाज़े और खिड़कियाँ गोलियों के लगने से टूटी फूटी और सूराखों से भरी थीं। शाह डरता-काँपता, गलियों से बेरास्ते होकर, अपनी दुकान में पहुँचा। यह स्वाभाविक ही था कि दूसरी दुकानों और हाटों की भाँति इस समय शाह मिर्जा का समावार-खाना भी बन्द होता। पीछे का दरवाजा खोल, उसने दुकान में आकर देखा कि वहाँ १५–२० अपरिचित आदमी इकट्ठा होकर बैठे हैं। उनमें से हर एक बार-बार अपनी जगह से उठकर, हाल जानने के लिये छेदों और दरारों से बाहर सड़क की ओर देखता है। यह वह लोग थे, जिन्होंने गड़बड़ी शुरू होने के समय ही भागकर इस दुकान में शरण ली थी।

अदीना में इतनी शक्ति और हिम्मत न थी कि उठकर सूराख से सड़क की ओर झाँकता, लेकिन वह अपने स्थान पर आधे उठे तकिये के सहारे बैठा था। इसी समय अदीना की नजर शाह मिर्जा पर पड़ी और उसने "सकुशल आ गया? इस बलवे में तू कहाँ था? यह क्या बात है?" कहते, सवालों की झड़ी लगा दी।

"जरा दम लेने दे", शाह मिर्जा ने कहते हुए कुर्त का हाथ से हिलाकर हवा देने की कोशिश की। और फिर वह कहने लगा—"मैं सालारपुल के ऊपर था और इस तरफ आने के लिये ट्राम की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु वह न मिली। लाचार पुश्किन सड़क से होकर

पैदल ही आने लगा। इसी समय एकाएक इसक्वेर (चौरस्ता) की ओर से बन्दूक की तड़-तड़ आवाज होने लगी। मैंने समझा कि सिपाही चाँदमारी का अभ्यास कर रहे हैं और आगे बढ़ता गया। लेकिन जितना ही चौरस्ते के नज़दीक पहुँचता जा रहा था, उतना ही बन्दूकों की आवाज़ और लोगों का हल्ला अधिक ऊँचा होता जा रहा था। मैं अभी तक इस बात को सैनिकों की चाँदमारी ही समझता था। चन्द कदम और आगे आने पर, मेरे सामने भागनेवाले दिखाई पड़े। जैसे बिल्ली से चूहे भागते हैं, उसी तरह वह बड़े भयभीत और परेशान हो भाग रहे थे। उनमें से हर एक से "क्या बात है, क्या हुआ?" कहकर पूछा, किंतु किसी ने कुछ जवाब न दे, इशारे से "मैं क्या जानूँ" प्रगट किया। फिर मैं चलने लगा। इसी समय एक गोली सनसनाती हुई मेरे कान के पास से चली गई। मैं "हाय मरा" कहते, जमीन पर पड़ गया और अपने हाथों को कानों पर रखकर मलने लगा। वहाँ कुछ-कुछ गरम सा पानी बहता मालूम हुआ। मुझे निश्चय हो गया कि गोली लग गयी है। "हाय, मुफ्त में मारा गया" कहते, अफसोस करके छटपटाने लगा। लेकिन जब अपने हाथ को आँखों के सामने करके देखा, तो देखा कि वह पानी-जैसी चीज़ खून नहीं है, बल्कि मेरे शरीर का पसीना है।"

वहाँ छिपे लोगों में से एक "शाबाश, शेर! बिना गोली खाये ही अपने को मरा समझ लिया!" कहते हुए, शाह मिर्ज़ा की हँसी उड़ायी।

"तुम भी कैसे मैदान के शेर मर्द हो कि भागकर यहाँ छिपे हो!" कहते हुए शाह मिर्ज़ा ने सभी छिपनेवालों पर कटाक्ष किया।

"आ बैठ। बात बतला।" अदीना ने कहा।

शाह मिर्ज़ा ने अपनी कहानी जारी रखते हुए कहा—"हाँ, देखा कि खून नहीं है। भगवान् को धन्यवाद दिया। फिर मैं अपनी जगह से उठा। मुझे निश्चय हो गया कि यह सिपाहियों का चाँदमारी का अभ्यास नहीं है, बल्कि जान देने और जान लेने का अभ्यास है। फिर

मैंने सड़क का रास्ता छोड़ा और तंग गलियों में चल पड़ा। वहाँ से हवेलियों, बागों आदि के भीतर से होता गुजरा। बाद में भी कई बार मेरे सिर पर से गोली सरसराती चली गयी, लेकिन मैं पहिले की तरह भयभीत नहीं हुआ, बल्कि दीवारों के पीछे छिपता, गोली जिधर से आ रही थी, उधर की ओर बढ़ा।"

"अच्छा, इस झगड़े का कारण क्या है? यह बात क्या है?"—अदीना ने फिर, अपनी बात को दुहराते हुए पूछा।

"जैसा कि मैंने अभी बतलाया," शाह मिर्जा ने कहा—"पहिले मैंने समझा कि सिपाही अभ्यास कर रहे हैं। फिर मालूम हुआ कि यह कोई भारी घटना है। लेकिन यह न मालूम कर सका कि वह है क्या।"

जिस वक्त शाह मिर्जा अदीना से आखिरी बातें कह रहा था, उसी समय एक अपरिचित आदमी दुकान के भीतर आया। उसने बात में शामिल होते हुए कहा—"इस गड़बड़ी का कारण मैं जानता हूँ।"

यह सुनकर, सबकी नजरें उसके चहरे पर गड़ गयीं। अदीना ने पूछा—"अच्छा, तो क्या बात हुई?"

अपरिचित व्यक्ति ने कहा—"निकोलाई जार को हटाकर, करेन्स्की खुद उसकी जगह बादशाह बना था। मजूरों और मूजिकों (गरीब किसानों) ने उसे भी हटाकर सरकार की बागडोर अपने हाथ में ले ली है। इस समय करेन्स्की के आदमी निकोलाई के आदमियों से मिलकर मजूरों और मूजिकों के खिलाफ खड़े हुए हैं। यही इस बखेड़े का कारण है।"

"झूठी, बेकार की बात", कहकर एक-दूसरे आदमी ने अपरिचित आदमी को मिथ्या भाषी बतलाया।

"क्यों बेकार की बात?" कहते अपरिचित ने सवाल किया।

दूसरे आदमी ने कहा—"करेन्स्की ऐसा बहादुर है कि उसने निकोलाई-जैसे बादशाह को, जो कि दुनिया के चार महान् बादशाहों

म मे एक है, गद्दी से उतार दिया। फिर कौन ऐसी बात हुइ कि वह मुट्ठी भर नगे भूखों से हार बा गया?"

"मैं इस बात को खुद गढ़कर नहीं कह रहा हूँ। अपने दोस्त से मैंने ऐसा ही सुना है। वह कई साल से पियान बाजार म फेरी करता है। यद्यपि वह पढ़ा लिखा नहीं है, लेकिन रूसी भाषा जानता है और कितने ही कायदा कानून का भी ज्ञान रखता है। उसी से सुनकर मैं यह बात बतला रहा हूँ।" कहकर अपरिचित ने अपनी बात का समर्थन किया।

अपरिचित आदमी राजनीति और राज काज की बातों से बिल्कुल अपरिचित था और अपनी सुनी बातों को बहुत सीधी सादी भाषा म कह रहा था, लेकिन उसकी सीधी-सादी बातों से भी उस समय की राजनीतिक गम्भीर घटना का पता लग जाता था। यद्यपि करेन्स्की ने 'बादशाह' का नाम नहीं धारण किया था, लेकिन बादशाही और पूँजा शाही को उसने पहिले ही की तरह कायम रखा था। यहाँ तक कि महायुद्ध को भी उसने सभी तरह चलाये रखा यद्यपि रूस के मजूर और किसान उसके कारण बरबाद हो गये थे और सारे देश का सत्या नाश हो चुका था। मजूरों और गरीबों ने बादशाह को इसीलिये हटाना चाहा था, जिसम कि इस सत्यानाशी युद्ध को बद किया जाय।

मजूरों के नेता और पथ प्रदर्शक साथी लेनिन ने अपने ज्ञान और अनुभव द्वारा इस बात को बहुत पहिले ही जान लिया था। इसलिये फरवरी-क्रांति को उसने अंतिम लक्ष्य नहीं स्वीकार किया, बल्कि महान् क्रांति का दरवाजा समझकर, दूसरी क्रांति को सामने आते देखा। इसीलिये अस्थायी सरकार से सन्तुष्ट नहीं था। जनता के भावों को लेकर, लेनिन ने आवाज लगाइ—"सरकार सोवियतों (पचायतों) की?" यही बात थी, जिससे कि २५ अक्टूबर (७ नवम्बर, नये पचाग के अनुसार), १६१७ की वह महाक्रांति आयी, जा कि इतिहास में 'अक्टूबर क्रांति' के नाम से प्रसिद्ध हुइ।

जैसा कि ऊपर सीधे सादे शब्दों में राजनीतिक बात को कहा गया, हर जगह मजूरों और अक्टूबर क्रांति के विरुद्ध निकोलाइ और करेन्स्की के पक्षपाती उठ खड़े हुए थे।

एक ताशकन्दी ने अपरिचित आदमी से जिज्ञासा करते हुए पूछा—"शोराय इस्लाम ( इस्लामी पचायत ) किस ओर है?"

उस आदमी ने इस नाम को सुना नहीं था, इसलिये "नहीं जानता" कहके जवाब दिया।

अदीना ने पूछा—"शोराय इस्लाम क्या है?" अदीना ने समझा था कि शोराय इस्लाम नाम का कोई आदमी है।

वहाँ बैठे आदमियों में से एक ने कहा—"जब निकोलाइ को गद्दी से उतार दिया गया तो यहाँ के सेठों ( बायों ), बड़े आदमियों और मुल्लाओं ने एक होकर एक सभा खड़ी की। वहीं आज तक पुराने-ताशकन्द शहर में शासन कर रही है। इसी सगठन का नाम शोराय-इस्लाम है।"

दूसरे आदमी ने कहा– "शोराय इस्लाम ने खूब काम किया है। सारे शहर को उसने मुसलमानाबाद बना दिया है। लोग खूब नमाज पढते हैं। जो कोई नमाज नहीं पढता, उस मुहल्ले के इमाम सजा देते हैं और शोराय इस्लाम के नाम से जुर्माने में पैसा वसूल करते हैं। "

अदीना ने बीच में पड़कर कहा– "अगर शोराय इस्लाम से अर्थ है मुल्लों, बायों और बड़े लोगों की जमात तो अवश्य यह मजूरों और गरीबों के खिलाफ होगा।"

अदीना अपने वर्ग की चेतना के अनुसार वर्ग स्वार्थ को देखते हुए जानता था कि कौन वर्ग किस पक्ष की ओर होगा। वह बचपन से लेकर आज तक की अपनी जीवनी और अपने अनुभव के बल पर अच्छी तरह जानता था कि बाय ( सेठ ) और मुल्ला गरीबों के दुश्मन हैं। अरबाब कमाल बहुत ही छोटा बाय था, लेकिन उसने उसे कितनी तक्लीफें दीं। मुल्ला खाकबाह और गाँव के बड़े लोगों ने अरबाब के

हरेक जुल्म और अन्याय में उसकी सहायता की। अखबार और मुल्ला खाक्शाह के बर्तावों से शायद अदीना के दिल में यह वर्ग भावना न जागती, लेकिन तीन साल तक उसने कारखाने में भी काम किया और मजूरों के साथ रहा था, उसके ही कारण अपनी जीवनी और अनुभव से वह निष्कर्ष पर पहुँचा था।

तिक् तिक् तिक् तिक् !

गुम-गुम-गुम-गुम-गुम !

अदीना ने अभी अपनी बात खत्म नहीं की थी कि बाहर की ओर से समावारखाने में थपथप की आवाज आयी। सभी दम साध गये और उनमें से अधिक 'दूरदर्शी' जाकर सन्दूक, मेज या किसी और चीज के पीछे छिप गये। शाह मिर्जा का जिस आदमी ने मजाक उड़ाया था, वह भेड़िये से डरे गधे की तरह जाकर चूल्हे के पीछे अपने सिर को छिपा लिया। बाहर के आदमी ने दो-तीन चार बार दरवाजे को जोर से थपथपाकर, "शाह मिर्जा, "शाह मिर्जा" कहकर आवाज दी।

डरता काँपता, धीरे से दरवाजे के पास जाकर दरार से बाहर की ओर झाँककर शाह मिर्जा बोला—"इवान् तू है? मैंने समझा कि कोई पराया आदमी है, इसलिए दरवाजा नहीं खोला। क्या कहता है?"

"दरवाजा खोल। प्यास से मर रहा हूँ।"

"पीछे के दरवाजे से आ।"

"किससे डरता है? दरवाजा खोल दे।"

"अगर पानी-पीना चाहता है तो पिछले दरवाजे से आ, नहीं तो मेरा पिण्ड छोड़ और अपना रास्ता पकड़।"

"चार्तृ (मूर्ख शैतान)!" कहकर इवान् ने गाली दी। और वह पिछले दरवाजे से समावारखाने में आ गया।

उसके हाथ में तमचा देखकर वहाँ बैठे लोग डर के मारे काँपने लगे। *शाह मिर्जा ने उनको धीरज धराते हुए कहा—"मत डरें, यह* मेरा पुराना दोस्त है। बुरा आदमी नहीं है।"

लोगों की जान म जान आयी, और चूल्हे की आड़ में छिपा बहादुर भी उठकर पास म आ बैठा। चूल्हे की राख से उसका चेहरा काला हो गया था। शाह मिर्जा "वाह, घर के शेर। क्या चूल्हे के भीतर जाकर गाली खायी कि तेरा मुँह स्याह हो गया ?" बोलते हुए हस पड़ा।

इवान ने बेंच पर बैठकर तमचे का एक ओर रख दिया और वह फिर शाह मिर्जा से "जल्दी कर! एक कटोरा ठडा पानी पिला", कहते, अपने मूछें बालों पर हाथ फेरते हुए उनकी ओर देखने लगा।

शाह मिर्जा ने कहा—"गरमी से पसीना पसीना होकर आया है। ठडा पानी शायद नुकसान करेगा। चाय कैसी रहेगी ?"

इवान् ने अपने हाथों और बाँहों की ओर इशारा करते हुए कहा—"यह हाथ और बाँह आग की ढेर और बर्फ का चट्टानों के भीतर बढ़ा है। हम मजूर बड़ी तकलीफ म पले ह, गरमी और सरदी के भीतर से तप कर पक्के हुए हैं। हम न सरदी से परहेज है और न गरमी से। ऐसा सलाह उन आदमियों को दे, जिन्होंने कि अपने हाथ से कभी काम नहीं किया और सदा दूसरों की कमाइ खाते, मुलायम गद्दी पर सोते रहे ह।"

शाह मिर्जा ने पानी से भरे कटोरे का लाकर इवान् के हाथ मे देते हुए कहा—"अच्छा ले, बहुत बात न बना। जल्दी पानी पी और बतला कि क्या बात हुइ है, जो सारे शहर म उथल पुथल हो रही ह ?"

इवान् ने कहा—"शहर में कोइ उथल पुथल नहीं हुइ है और न कोइ बड़ी बात हुइ है। यदि मान लो कि इस शहर या दूसरे सारे शहर यहाँ तक कि सारी दुनिया म भी उथल पुथल हो जाय, तो इसमें आश्चर्य क्या है, डर की बात क्या है ?" आज नइ दुनिया खड़ी हो रही है। उसके लिये पहिले पुरानी दुनिया का बरबाद करने की जरूरत है और वह बरबाद होके रहेगी। यदि तू अपने समावारखाने के लिये नया इमारत बनाना चाहता है, तो पहिले पुरानी जीर्ण शीर्ण इमारत को ध्वस्त करना होगा। फिर वहाँ पर नयी इमारत के लिये नयी नींव

डालनी होगी। फिर तू पुरानी इमारत के ध्वस्त होने की बात कहकर अफसोस भी नहीं करेगा।"

"तेरी इन बातों से मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा है", शाह मिर्जा ने कहा—"मालूम होता है कि तू खुद भी कुछ नहीं जानता, ऐसे ही बातें बना रहा है। कहीं शराब तो नहीं पी है, जो मतवाले की तरह बातें बनाये जा रहा है?"

"ठीक कहता है, थोड़ी सी शराब पी है। लेकिन जो बात मैं कह रहा हूँ, उसे खूब सोच-समझकर कह रहा हूँ।"

"ऐसा ही सही। लेकिन जरा बात ऐसी भाषा में कह, कि हम भी समझें", शाह मिर्जा ने कहा—"हमें यह पहेली न बुझा।"

"अब जो कुछ कहूँगा वह जो मैंने अभी कहा उसी की टीका होगी। कान धर के सुन। अब बात बतलाता हूँ।"—कहते हुए इवान् ने एक कटोरा और पानी पीकर, आरम्भ की—"हम लम्बे अरसे से मजूरी कर रहे हैं, और धनियों तथा जार की हकूमत के अत्याचार से पिसते पीड़ित होते चले आ रहे हैं। हम और हमारे-जैसे लाखों ने उनकी गुलामी में भुखमरी से जान दी। हमने कारखानों, रेलवे, कोयला-खानों और तेल की खानों में काम किया, लेकिन सारा नफा मालिकों की जेब में गया। वह हमेशा ऐश करते रहे। जब हम पेट भर रोटी माँगते, तो रोटी की जगह वह हमें बादशाही हुकूमत से गोली दिलवाते, या हमसे नाराज हो जेल या सायबेरिया के काला-पानी में भिजवाते, अथवा फाँसी पर चढ़वाते।

"अन्त में मजूरों के नेता इस निश्चय पर पहुँचे कि जब तक समाज की बनावट दूसरी नहीं होगी, जब तक पूँजीशाही का उखाड़ फेंका न जायगा और जब तक काम की उपज मजूरों के हाथ में नहीं आ जायगी, तब तक अधिकांश लोगों की जो कि श्रमिक और गरीब हैं, हालत बेहतरीन न होगी। इसीलिये मजूरों के पथप्रदर्शकों ने बहुत सालों से पूँजीवाद का ध्वंस करने और जीवन के नये ढंग को तैयार करने

का प्रयत्न किया। इसी का यह परिणाम हुआ कि पिछले फरवरी महीने में निकोलाइ को गद्दी से उतारा गया, और उसके शासन को हटाया गया। लेकिन इससे हमारा मतलब पूरा नहीं हुआ, क्योंकि फिर भी हमारे दुश्मन, अथात् बहुसंख्यक जनता के दुश्मन, पूँजीपतियों के आदमियों ने राज-काज सँभाल लिया। यह अस्थायी सरकार, करेन्स्की की सरकार ऐसी ही थी।'

वहाँ बैठे लोगों में से किसी ने करेन्स्की की तरफदारी करते हुए कहा—"सुना तुमने? मजूरों ने निकोलाइ को भी हटाया। करेन्स्की भी एक प्रकार का मालिक था क्या?

'चुप रहो! बोलो मत! बात सुनने दो!'—कहते हुए, अदीना ने उस आदमी को चुप करा दिया।

इवान ने फिर अपनी बात चालू की—"मजूर, सैनिक, किसान, मेहनतकश इस काम के लिये राजी नहीं हो सकते थे और न राजी हुए। दुनिया के श्रमिकों के एकमात्र नेता और पथ-प्रदर्शक साथी लेनिन ने बाल्शेविक पार्टी की ओर से श्रमिक-वर्ग के लाभ पर दृष्टि रखकर, सारे श्रमिकों को एकताबद्ध किया। मजूरों ने करेन्स्की की सरकार तथा पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ उठकर उसे निकाल बाहर किया, और शासन मजूरों और सैनिकों की सोवियतों के हाथ में दे दिया।"

वहाँ बैठे 'राजनीतिज्ञ" ने अपने को रोकने में असमर्थ हो अपनी जगह से उठकर कहा—"मालादेश (शाबाश)! ज़िन्दाबाद लेनिन!" और इवान की तरफ निगाह करके पूछा—"तवारिश (कामरेड), टूए करेन्स्की का क्या हुआ?"

"वह भाग गया", इवान ने कहा।

"अफसोस, हाथ में नहीं आया! कहाँ भागा होगा?"

"चोर्तू (शैतान) जानता होगा। इवान ने फिर कहा—किसी क़ब्र में होगा।"—कहकर उसे जवाब दे, "करेन्स्की के भागने या हाथ में

जाने से कोई बात नहीं। वह अब ऐसा आदमी है, जिसका मरना या जीना बराबर है। बात असल में उसके पक्षपातियों और उस वर्ग के बारे में है, जिन्होंने कि करेन्स्की को मैदान में ला खड़ा किया। अब इसी वर्ग तथा उसके हिमायतियों को पकड़कर बरबाद करने की आवश्यकता है।"

"लेकिन यह काम आसान नहीं है।"

"हा (हाँ)", कह ईमान थोड़ी देर चुप रहा। उस सीधे सादे आदमी के जोश और प्रसन्नता के कारण उसका दिल थोड़ा बिखर गया था। उसे इकट्ठा करके, ईमान ने अपनी बात को छोड़ी जगह से फिर आगे कहना शुरू किया—"ठीक, यह काम आसान नहीं है। वह वर्ग जो कि सालों, नहीं शताब्दियों और युगों से शासन करता आया, सारे मेहनतकशों के खून को पीता रहा, अपने नफे के लिये मजूरों के सिर पर आग उछालता रहा, आसानी से हार न मानेगा, और अपने हाथों अपनी जान लेने के लिये राज़ी न होगा। बात भी ऐसी ही हुई है। सभी जगह इस वर्ग ने गुप्त रूप से या खुल्लम खुल्ला मेहनतकशों और उनकी हुकूमत के खिलाफ बगावत की, उसके खिलाफ लड़ाई की। यह स्वाभाविक ही था कि मेहनतकश भी उसके मुकाबले में डटकर लड़ने से बाज नहीं आये। अब आज जब यह अधिकार हमारे हाथ में आया है, हम मजबूती से उसकी रखवाली कर रहे हैं। यह अब जरूरी है कि दुश्मन का ऐसा मारा और बरबाद किया जाय कि वह फिर उठने लायक न रह जाय। वस्तुतः ऐसा ही हुआ भी। सभी जगह यह युद्ध आरम्भ हो गया। आज जो घटना ताशकन्द में घटी, वह उन्हीं नहीं देशव्यापी घटनाओं में से एक है। लेकिन यह घटना अन्तिम घटना है। हो सकता है कि यह मुकाबिला और संघर्ष तब तक जारी रहे, जब तक कि पूँजीपति जड़ से खत्म न हो जायँ—उनके पक्षपाती बरबाद न हो जायँ, मजूरों सैनिकों किसानों की सरकार मजबूत न हो जाय और जीवन का नया रास्ता शुरू होकर,

सुदृढ न बन जाय। हम सब बातों से पहिले यह चाहते हैं कि पूँजी-पतियों की सभी धन-सम्पत्ति को, जो वस्तुत हमारी ही है, अपने हाथ में ले लें। मैंने अपनी पहिली बातों म इसी अभिप्राय को 'पुरानी दुनिया का बरबाद करने की जरूरत है। आज नयी दुनिया खड़ी हो रही है, कहकर सक्षेप मे समझाना चाहा था। लेकिन तूने नहीं समझा, या समझना नहीं चाहा। अब शायद तूने समझ लिया होगा कि मैंने जो बात कही, वह न शराब की बहक थी और न पहेली थी, बल्कि वह एक गम्भीर बात का सक्षेप और सार था।

इवान की सीधी सादी बातों और उपमाओं से केवल शाह मिर्जा ही नहीं, बल्कि वहाँ बैठे सभी लोग प्रभावित हुए और इवान को ऊँची आवाज में यह कहते हुए, उन्होंने मुबारकबाद दी—

"उर्रा! ज़िन्दाबाद लेनिन! जिन्दाबाद मजूर और इन्कलाब अक्तूबर! मुर्दाबाद पूँजीपति! जिन्दाबाद इवान!"

वहाँ बैठा सिर्फ एक आदमी, जिसने कि केरेन्स्की की तारीफ की थी, इस सार्वजनिक प्रसन्नता में शामिल नहीं हुआ। उसने अपने मन म, 'हाय, अफसोस' सौ अफसोस! चमड़े का कारखाना क्या मेरे हाथ से निकल जायगा?' कहते अफसोस किया। ईवान भी रेल की आवाज सुनकर, मजूरों को इकट्ठा करने के लिये आवाज देने का, एक कटोरा और ठडा पानी पीकर, वहाँ से निकल कर चला गया।

अदीना म इतनी ताकत नहीं थी कि वह ताली पीटता और 'उर्रा' कहता। लेकिन इवान की बातों से प्रभावित हो, वह इन्कलाब की तारीफ म निम्न भाव के शेरों को अपने दिल म दुहराने लगा—

'कुछ समय अफसोस म बूढे जवान फँसे थे।
बूढ़ा घबराहट म, जवान रजो-गम में।
जुल्म और अन्याय की अब जड़ें खुद गयीं।
छातियाँ खून से भरीं, आँखें आँसू से भरीं।
वह दम जो अशरण ख्यामा और एदा म था।

वह वर्ग जो बेगुनाह बला और आफ्त म था।
वह वर्ग जा शासक था, अशान्त दुनिया म।
वह वर्ग जो हुक्मी बन्दा था, बिना सवाल और जवाब के।
वह वर्ग, जो रात दिन था, सताप और रज म,
वह वर्ग जा सुबह और शाम मस्त था शराब के प्याले में,
इन विरोधी वर्गों से देश तबाह था,
इन विरोधी फिर्कों से देश पीडित था।
अब ऐसा हुआ कि उठा एक तूफान,
किया बाग्मियों का खाना-खराब,
मेरा अचरज चला गया कि यह क्या हुआ?
आठों तरफ से ऐसा ही आया जवाब।
इन्कलाब, इन्कलाब, इन्कलाब, इन्कलाब!
इन्कलाब, इन्कलाब, इन्कलाब, इन्कलाब!"

---

## उन्नीस सौ अट्ठारह

सन् १६१८ तुर्किस्तान के मेहनतकशों (जाँगर चलानेवालों) के लिये बहुत बुरा आया। सन् १६१७ में मध्य एशिया में पानी न बरसने के कारण अकाल और सूखा पड़ गया। उस साल के अन्त तक साल का जमा किया हुआ ज़खीरा भी खत्म हो गया। कोने कोने में जहाँ कुछ भी खाने की चीजें मिल सकीं, उनको जमा किया गया। भूखे लोगों को एक कौर रोटी दी जाती। इस साल की सर्दियों में देश रेगिस्तान सा दिखाई पड़ता था। किसान, भिखमंगे और मजूर बेबस हो गये थे। वह बेघर बार के झुंड के झुंड भेड़ों के रोसा या गायों के गल्ले (झुंड) की तरह रोटी की तलाश में शहरों की ओर दौड़ रहे थे। हजारों भूखे कहीं रास्तों में, कहीं बरफ के टीलों पर, कहीं नदियों और नहरों के भीतर मरे पड़े थे। यह करुणा पूर्ण दृश्य जंगलों, रेगिस्तानों और शहर के बाहर ही उपस्थित नहीं था, बल्कि शहरों के भीतर भी भूख से मरे बहुतेरे मुर्दे दिखायी पड़ते थे।

यह हालत थी, जब कि सन् १६१८ आरम्भ हुआ। जितना ही बसन्त नजदीक आता गया, उतना ही अन्न का ज़खीरा भी कम होता गया, और भूखों तथा भूख से मरनेवाले लोगों की संख्या बढ़ती गया। ऊपर से टायफायट और इन्फ्लुएंज़ा (जो कि अकाल और भूख की सन्तानें हैं) ने भी गजब ढाया और बहुत बड़ी संख्या में लोगों को मारकर मिट्टी में मिला दिया। इसी समय खोकन्द में बलवा हो गया। ऐरगश और बासमाची (लुटेरे) पैदा हो गये, जिन्होंने और भी गड़बड़ी पैदा कर दी। इसके कारण मध्यएशिया का बगीचा कहा जानेवाला फरगाना बरबाद हो गया। कालीसोफ कांड के अमीर बुखारा ने जुल्म और

हत्या का वह खेल खेला जिसके कारण भूखे मरते मेहनतकशों के सिर पर और भी आफ़्त का पहाड़ ढाया जाने लगा।

हां, यह ठीक है कि जिन जगहों सोवियत शासन क़ायम हो चुका था, वहाँ इस आफ़्त के तूफ़ान का मुक़ाबला करने की तैयारी की गयी थी। हर जगह कमीटियाँ और सभायें क़ायम की गयी थीं, जिनका काम था भुखमरी को रोकने का प्रबंध करना। यह कमीटियाँ-सभायें देश के अनाज के जखीरों को इकट्ठा करतीं और हरेक आदमी के राशन के मुताबिक़ एक ख़ास परिमाण में अनाज देतीं। इन्होंने न केवल अन्न बाँटने का इन्तज़ाम किया था, बल्कि रसोई घर और खाने की जगह भी तैयार की थीं। जहाँ तक हो सकता था, वह लोगों में खुराक और पोशाक बाँटतीं, तथा इन्फ्लुएन्ज़ा और टायफायड की चिकित्सा और देख भाल का प्रबंध करती थीं। लेकिन काम केवल ऐसे ही शहरों और स्थानों में हो सका था, जहाँ सोवियत शासन की स्थापना हो चुकी थी। दूसरी जगहों में, विशेषकर गाँवों में, मानव पुत्र ने अपने आपको केवल भाग्य पर छोड़ दिया था। यह हालत तब तक रही, जब तक कि १९१८ की फ़सल तैयार नहीं हो गयी। जब गल्ला लोगों के पास आने लगा, तो धीरे-धीरे हालत बेहतर होने लगी। लेकिन अब सारे रूस और तुर्किस्तान में भी गृह-युद्ध शुरू हो गया था। विदेशी पूँजीपतियों ने उधर भीतरी क्रांति विरोधियों को सहायता दे, देश के अधिक भाग को आग लगाने और कसाईखाने में बदल दिया था। ओरेनबुर्ग (रूस) से तुर्किस्तान का रास्ता कट गया था, इसलिये तुर्किस्तान के मेहनतकशों को बाहर से कोई सहायता मिलने की आशा नहीं रह गयी और उन्होंने सोवियत शासन की रक्षा का काम अपने ऊपर लिया। इसी समय अश्काबाद के सफ़ेदों (क्रांति विरोधियों) ने अंग्रेजों की मदद से बाकू का रास्ता काट दिया जिससे मिट्टी का तेल आना बन्द हो गया और घरों में चिराग़ जलाना मुश्किल हो गया। क्रांति विरोधियों ने चारों ओर तरफ़ों से घेरकर तुर्किस्तान की सोवियत सरकार और मेहनतकशों

के ऊपर चारजूइ के पास जमा हो, आक्रमण किया। इसके कारण आने जाने के साधन बेकार हो गये। स्थानीय कारखाने बन्द हो गये। रेलों को मजबूर हो, लकड़ी के ईंधन से चलाते हुए लाल तुर्किस्तान की रक्षा का काम करना पड़ा।

यह स्वाभाविक ही था कि ऐसी हालत में हमारे अदीना की बीमारी और भी बुरी हो जाती। कीमिज पीना और स्वास्थ्य-लाभ करना तो अलग, उसे गुल्बीबी तक का ख्याल भुलाना पड़ा। यह अदीना का सौभाग्य था, जो शाह मिर्जा मौजूद था, नहीं तो देश पर जो आफत आई थी, उसमें सबसे पहिली बलि वही चढ़ता। शाह मिर्जा का समावार-खाना पहिले की तरह नहीं चल रहा था। देश की बिगड़ी आर्थिक दशा का प्रभाव उसके ऊपर भी पड़ा था। यात्री कोई आता नहीं था। अगर कोई एक प्याला चाय पीना चाहता, तो बहुत खर्च करके ही पा सकता था। इन सारी कठिनाइयों की परवाह न कर शाह मिर्जा जब कभी एक रोटी पाता, तो सबसे पहिले अदीना को खिलाता। डाक्टर ने जो बतलाया था, उसी के अनुसार अदीना के बिस्तरे और कपड़ों को जहाँ तक हो सकता साफ रखता। विशेषकर जब कि इन्फ्लुएन्जा की महामारी फैल गयी, तो डाक्टर ने ताकीद करते हुए कहा था—"होशियार रहना, अगर एक भी इन्फ्लुएन्जावाला अदीना के शरीर के पास आ गया तो उसी समय उसको इन्फ्लुएन्जा की खाँसी शुरू हो जायगी और उसकी रही सही ताकत नष्ट हो जायगी। फिर मौत के आने में देर न होगी।"

शाह मिर्जा को डाक्टर की सभी बातों पर विश्वास था, क्योंकि उसकी बातों की सचाई को वह कई साल से अपनी आँखों देख रहा था। अदीना के साथ उसे असाधारण मुहब्बत हो गयी थी इसलिये भी डाक्टर की एक एक बात के अनुसार वह चलने की कोशिश करता था। यद्यपि इस सावधानी के कारण अदीना मरा नहीं, लेकिन वह अत्यन्त बूढ़ा और दुर्बल हो गया था और बिना किसी के सहारे उठ-बैठ नहीं

मक्ता था। खाँसने में अब उसके मुँह से कफ के साथ खून निकलता था। सबसे कठिन और असह्य बात उसके लिये यह थी कि एक साल से अधिक हो गया पर उसे अपनी प्रियतमा की कोई खबर नहीं मिली। वह नहीं जानता था कि उसके ऊपर क्या बीती। कमजोरी से अब प्राण उसके ओठों पर आ चुके थे। मालूम होता था कि गुल बीबी की खबर सुनने ही के लिये अभी तक वह रुके हुए थे।

---

## कोहिस्तान

खारा का कोहिस्तान ( पहाड़ी प्रदेश ) अमीर के हाथ में पड़ने के बाद भलाई की कैसे आशा रख सकता था? १९१८ में उसकी हालत और भी बुरी हो गयी थी। एक तो १९१७ के साल में बारिश न होने के कारण सूखा पड़ना ही आफत ढा रहा था, लोग भूख से मर रहे थे। ऊपर से अमीर की हुकूमत का अत्याचार कोहिस्तान के गरीब निवासी अच्छे सालों में भी पैसा कमाने के लिये तुर्किस्तान की ओर आशा लगाये रहते थे। इस साल इसलिये उनकी हालत और बुरी हो गयी कि बुखारा की सरकार ने वहाँ के लोगों का तुर्किस्तान जाने से मना कर दिया था, जिससे कोई कोहिस्तानी सीमा पार नहीं कर सकता था। वह डरते थे कि अगर लोग तुर्किस्तान जायँगे, तो बोल्शेविकों और बुखारा से भागे हुए लोगों की बात में आकर, अमीर की हुकूमत के खिलाफ विद्रोह कर देंगे। कालिसोफ-काण्ड में जब अमीर-बुखारा को बहुत मुसीबत में पड़ना पड़ा, तो कड़ाई और भी ज्यादा कर दी गयी। इस सबके ऊपर यह कि इस साल अमीर ने पहिले से बहुत अधिक कर और लगान लगा लिया था। अमीर की ओर से जो हाकिम कोहिस्तान में शासन करते थे, वह बादशाही कर और लगान को कई गुना करके लोगों से जबरदस्ती वसूल करते थे, जिसका बहुत सा भाग उनकी जेब में जाता था। जो लोग इस महसूल और लगान को नहीं दे सकते थे, उन्हें बन्दीखाना में डाल दिया जाता था, या बागी कहकर बुखारा भेज दिया था। इस अत्याचार और जुल्म में स्थानीय अमले तथा मुल्ला हाकिमों की मदद और पथ प्रदर्शन करते थे। बेचारी गरीब जनता का सर्वनाश करके जो कुछ धन इन हाकिमों

की जेब में जाता उसमें से थोड़ा इनाम और भेंट उनको भी दे दिया जाता था।

कालिसोफ़-काट के समय जबकि अमीर मेहनतकशों के आक्रमण से बाल-बाल बच गया, तो उसने कोहिस्तान के अमलों और सरकारी नौकरों को बुखारा बुला भेजा। जब यह काण्ड खतम हो गया और किजिल्तेप्पा के सुलहनामे पर हस्ताक्षर हो गये, तो अमीर-बुखारा ने अपनी शक्ति बढ़ाने की कोशिश करना, भविष्य के लिये सजग रहना चाहा। इस काम में सहायता देने के लिये उसने कोहिस्तान से भी आदमियों को बुलाया। यद्यपि तनख्वाह खानेवाले तथा बड़-बड़े अमले अमीर की सहायता करने के लिये तैयार थे लेकिन उसे उतने से संतोष नहीं था। उसने चाहा कि कोहिस्तान की आर्थिक और मानवी शक्तियों से मदद लेकर अपने तख्त और ताज की रक्षा का उपाय करे। इस काम के लिये बड़-बड़े अमले तथा कोहिस्तानी मुल्ले भी लोगों में प्रचार कर रहे थ। एक तरफ उनका प्रचार और दूसरी तरफ सरकारी अत्याचार, दोनों ने मिलकर कुछ लोगों को अमीर की मदद करने के लिये मजबूर किया सही, लेकिन अधिकांश जनता, विशेषकर गरीब लोग, जिनका कि अमीरी दरबार के साथ पैसा या जान देने के सिवा और कोई संबंध नहीं था, इस काम के लिये राजी नहीं हुए। मौका पाकर वह अमीर और उसकी हुकूमत की सहायता करने से भाग निकलते थे। धीरे धीरे वह अमीर की सरकार के खिलाफ कार्रवाई भी करने लगे। ऐसा करने के लिये कोहिस्तान के पुराने इतिहास में कम उदाहरण नहीं थे। ये कोहिस्तानी ताजिक अपने बाप दादों से ऐसे कितने ही विद्रोह की कथायें और पँवारे सुनते चले आये थे। हम सरकार के खिलाफ इस तरह के हुए विद्रोहों में से बहुतों को छोड़ देते हैं, और केवल मंगात खानदान के अमीरों के समय जो विद्रोह हुए उनमें से एकाध का उदाहरण देते हैं—

जिस वक्त अस्तराखानी राजवंश खतम हुआ, और बुखारा में

मकीत खानदान ने अपना शासन आरंभ किया, उस समय सारा कोहिस्तान स्वतंत्र था। यद्यपि उस समय वहाँ के जीवन का रंग ढंग बिल्कुल सीधा-सादा था और शासन का तरीका भी अक्सकाली (बड़े-बूढ़ों) का था, लेकिन तो भी उस समय वहाँ के किसान और पशुपाल अपने काम में अच्छी तरह लगे हुए थे। उनके पुत्र कलत्र तथा सम्मान और प्रतिष्ठा सुरक्षित थी। अपने घर में रहते हुए वे आराम से जिन्दगी बसर करते थे। रहीमखान मकीत ने जब बुखारा में अपनी सल्तनत मजबूत कर ली, तो उसने कोहिस्तान (ताजिकिस्तान) पर चढ़ाई की। उसका पहिला मुकाबिला हिसारियों ने खुर्द किले के पास किया। तग-देवा के किले में ११६६ हिजरी (१७५५ ई०) में भयंकर युद्ध हुआ। रहीम खाँ इस युद्ध में विजयी हुआ। उसने लोगों को बड़ी बेदर्दी से मरवाया, और उनकी स्त्रियों और लड़कियों को बन्दी बनाकर, करसी में ला, बाजार में डुगडुगी पिटवाकर, उन अभागियों को बेंचवाया। इस युद्ध में जो अपार लूट की सम्पत्ति हाथ में आयी थी उसे उसने छ रोज़ में खर्च कर दिया।

रहीम खाँ अपनी दूसरी चढ़ाई के लिये जब कोहिस्तान की ओर आया तो शेराबाद किले के पास हिसारियों और दूसरे कोहिस्तान के स्वतंत्रता प्रेमियों के साथ लड़ाई हुई। इस युद्ध में विजयी होकर रहीमखाँ ने हाथ आये सभी मर्दों को मरवा डाला और उनके सिरों को चुन-कर एक मीनार खड़ा किया और उनकी स्त्रियों और लड़कियों को अपने सिपाहियों में बाँट दिया। यह घटना ११७० हिजरी (१७६० ई०) की है।

जब कोहिस्तान के बाकी लोगों ने इस आतंक और जंगलीपन को देखा और उन्हें अपने जान माल की रक्षा की कोई आशा न रह गयी, तो उन्होंने बिना लड़ाई के ही अपने किलों को रहीम खाँ के आदमियों के सिपुर्द कर दिया। किला करातेगिन भी इसी तरह समर्पित हुआ। हिसार का शासक मुहम्मद अमीर भागकर, अफगानिस्तान चला गया।

रहीम खाँ ने काहिस्तान पर अधिकार कर लेने के बाद, वहाँ के लोगों के बीस हजार परिवारों को बुखारा की तरफ भिजवाया। उसने कोहिस्तान से बीस हजार सोने की मुहर, तीन हज़ार घोड़े और पाँच सौ ऊँट लिये और अपनी ओर से कोहिस्तान के हर एक इलाके में शासक नियुक्त किये। इन्हीं शासकों में शहर तुर्शाबे का शासक नासिर शाह बेग का पुत्र गुल्लाम बेग था। रहीम खाँ कोहिस्तान के लोगों को बरबाद करने तथा उनके गले में गुलामी का तौक बाँधने के बाद बुखारा लौट गया। उसके हाकिमों ने अपने अमीर से भी ज्यादा अत्याचार लोगों पर करना शुरू किया। लोग इस ज़ुल्म से तंग आकर तीन साल बाद विद्रोह करने के लिये मजबूर हुए। चुरजक के किले को मजबूत बनाकर वहाँ उन्होंने अपनी रक्षा का इन्तज़ाम किया। जब रहीम खाँ के आदमियों ने चुर्जक पर आक्रमण किया, तो स्वतन्त्रता-प्रेमियों ने उसे छोड़, सीना के किले में शरण ली। फिर वहाँ से भी निकलकर, दरा निहाँ में जा सारे मुल्क में बलवे की तैयारी शुरू की। जब उनकी ताकत काफी मजबूत हो गयी, तो उन्होंने तारीख २२ रमज़ान, ११७१ हिजरी ( ३० मई, १७६१ ई० ) को देहनवी के किले पर आक्रमण करके शहर पर अधिकार कर लिया। रहीम खाँ के आदमी देहनवी के अर्क ( दुर्ग ) के भीतर घिर गये। उस समय रहीम खाँ के अधिकतर सैनिक बाग हिसार में थे। जब उन्होंने यह खबर सुनी तो और भी सेना जमा करके, आकर देहनवी शहर को घेर लिया। इस समय स्वतन्त्रता-प्रेमियों ने दोनों ओर के आक्रमण के खिलाफ लड़ाई लड़ी। भीतर अर्क के लोग गोलाबारी कर रहे थे, और बाहर से नये आये आक्रमणकारी। यह लड़ाई ४० रात दिन जारी रही। अंत में रहीम खाँ खुद आया, तब जाकर शहर पर विजय प्राप्त हुई। रहीम खाँ स्वतन्त्रता-प्रेमियों के नेता [illegible] को गिरफ्तार कर [illegible] लटका, ऐंठ गया। दूसरे [illegible] हाथ में आग [illegible] को पकड़कर, [illegible] शहर के [illegible] फाटक के बाहर मीनार की [illegible] चुनवा दिया

गया। इसके बाद मरेजुर, गेजर, दुशाम्बे ( आधुनिक स्तालिनाबाद ) तथा दूसरे किलों और शहरों पर अधिकार करके जिन लोगों को मारा गया, उनके सिरों को भी देहनवौ भनकर उसी मीनार में चुना गया, या सोनन्द के हाकिम फाजिल्बे के हुक्म से उस समय ४०० सोजन्दी और उरातेपी हिसारियों की मदद के लिये आ रहे थे, उन्हें दर्रा निहान में रहीम खाँ के आदमियों ने घेरकर मार डाला और उनके सिर भी देहनवौ के मीनार को ऊँचा करने के काम आये।

ऐसी घटनायें केवल हिसार या कोहिस्तान ही में नहीं हुई थीं, बल्कि पजकेन्त, यारी किश्तुत, उरमेतन, भागीयान फाराब और फल्गार में भी उसी तरह के अत्याचार और खूँरेज़ी ११६६ हिजरी ( १७५२ ई० ) में रहीम खाँ के हाथों से हुई। यह बातें काजी मुहम्मद वफा ( सुरद ), पुत्र काजी जुहेर करमीना-वासी ने अपनी किताब 'ताफये-खानी' में दर्ज किया है, जिसे कि अमीर दानियाल के हुक्म से उक्त काजी ने लिखा था।

रहीम खाँ के बाद अमीर दानियाल के समय भी वही बातें दोहराई गयीं। काहिस्तानी लोग स्वतंत्रता चाहते थे और यह भी कि अपने धन दौलत के स्वयं मालिक हों, अपनी खेती और पशुपालन से प्राप्त धन और सम्पत्ति का खुद भोगें। दानियाल चाहता था उनको गुलाम बनाना, उनके सर्वस्व का हरण करना जिसके लिये उसने छल-बल, मार-काट और मीनार चुनाई आदि के सभी तरीके इस्तेमाल किये।

अमीर हैदर नसरुल्लाह ( बतुरखान ) और मुजफ्फर ने फिर उन्हीं अत्याचारों को दुहराया था। विशेषकर मुजफ्फर के शासन काल में रहीम खाँ के तरीके को पूरे तौर पर बरता गया। याकूब कुशबेगी के नायकत्व में रूसी तोप और तोपखाने से लैस एक सेना कोहिस्तान भेजी गयी। लोगों के सर्वस्व को हरण किया गया और देहनवौ शहर को जलाकर खाक कर दिया गया। 'तारीख-तवारीख' के शब्दों में अमीर मुजफ्फर ने कुर्बानी की गायों की भाँति सिरों को काटा। रहीम खाँ और मुजफ्फर खाँ, दोनों बहादुरों की एक खास विशेषता देखी जाती

है। रहीम खाँ ने जिस तरह अपनी नादिरशाही तोपों और तफगों की मदद से ईरान, अफगानिस्तान, हिन्दुस्तान ,एशिया और मध्य एशिया को एक केन्द्रीय सल्तनत के नीचे लाने की कोशिश की और छोटे-छोटे राज्यों को बड़ी निर्दयता के साथ बर्बाद किया, उसी तरह मुज़फ्फर खाँ ने मारूसी जार से हार खाने के बाद रूसी तोपों और बन्दूकों को लेकर यही काम करना चाहा।

अमीर अब्दुल अहमद और आलिम खाँ के शासनकाल में कोहिस्तान के लोगों में हिलने डोलने की ताकत नहीं रह गयी थी। उनका धन-माल, बीबी-बच्चे, इज्जत-सम्मान, सब कुछ अमीर के आदमियों के हाथों बरबाद हो चुका था।

मकात राजवंश के यह कारनामे कोहिस्तानियों के लिये भूलने की बात नहीं थी। और अब अमीर आलम खाँ ने फिर चाहा कि इन्हीं लोगों की शक्ति से मदद लेकर अपनी सल्तनत और अत्याचारी शासन को मजबूत करे। जिनका खून बुखारा के अमीरों ने पानी की तरह बहाया, वही अब अपने खून को उनके लिये बहायें! हाँ, जिनका लाभ अमीर के लाभ से बँधा हुआ था, उन्होंने जरूर सहायता करना चाही और अन्य लोगों को वैसा करने के लिये भी प्रेरित किया, लेकिन कोहिस्तानी जनसाधारण अपनी खुशी से इसके लिये राजी नहीं हुए। अमीर के हाकिमों ने राजी या बराजी, जैसे भी हो सका, लोगों को पकड़कर जमा किया और बड़े विशेष प्रबन्ध के साथ बुखारा भेजा। इन लोगों में वे भी शामिल थे, जो कि कोहिस्तान के जेलखानों में बन्द थे। बुखारा में उन्हें बादशाह के चारबागों तथा लोगों के घरों में रखा गया। 'शेरदस्ता' के नाम से बन्दियों की पलटन संगठित की गयी। कोहिस्तान के ठंडे इलाके के रहनेवाले लोग बुखारा की गर्म हवा को बर्दाश्त नहीं कर सके। उनमें से कितने ही मर गये, कितने ही मारे गये और जो बच-बचे, अन्त तक रोते पीटते अमीर की सहायता में लगे रहे।

# अपरिचित पुरुष

अदीना दो साल से आफत में फँसा हुआ था। डाक्टर के कहने के मुताबिक अधिकतर वह धूप में बैठा रहता। गरमी के दिनों में, कन्या (सितम्बर) के महीनों में सवेरे और शाम के थोड़े से समय को छोड़कर गरमी के कारण धूप में बैठना सम्भव नहीं था। तुला (अक्तूबर) महीने में वह अधिकतर धूप में बैठा रहता, क्योंकि उस समय उतनी गरमी नहीं थी कि आदमी बर्दाश्त न कर सके। इस समय शाह मिर्जा खाट को सवेरे ही बाहर निकाल के रख देता और अदीना को उस पर लिटा देता। वह इसी तरह शाम तक लेटा रहता। एक दिन जब कि अदीना अपनी चारपाई पर धूप में आधी नींद में लम्बा पड़ा था और शाह मिर्जा आने जाने वालों को चाय और चिलम तैयार करके दे रहा था एक अपरिचित पुरुष ने आकर समोवार खाने में मेज के किनारे बैठे शाह मिर्जा से चाय माँगी। यद्यपि इस आदमी का रंग ढंग ताजिक जैसा मालूम होता था, लेकिन उसकी पोशाक थी एक पुरानी कपड़ाजी टोपी सैनिकों की फटी जर्सी और लाल पायजामा। अपनी पोशाक से वह दासुन्दा (कोहिस्तानी, ताजिक) जैसा मालूम नहीं होता था।

यद्यपि उसकी पोशाक बेगानी थी, लेकिन उसकी शक्ल-सूरत से शाह मिर्जा को निश्चय हो गया कि वह ताजिक है। इसलिये हालत जानने के लिये उसने एक चायनिक चाय गरम करके लाकर सामने रख, प्याले में चाय डालनी शुरू की। पहिले चाय को खुद पीकर उसने प्याला अपरिचित पुरुष के हाथ में दिया। फिर चाय पान के मध्य में

"नहीं, करातेगिन और फरगाना का रास्ता बन्द है। करातेगिन के हाकिम उधर से जाने नहीं देते, इसलिये कोई फरगाना नहीं पहुँच सकता।"

"अगर ऐसा है, तो तुम कैसे और कौन रास्ते से आये ?"

"मैं पहिले करातेगिन से बुखारा आया। सच्ची बात यह है कि वे मुझे बुखारा लाये, जहाँ से कुछ समय बाद में इस ओर भाग आया।"

"बिरादर !" अपनी और अदीना की ओर संकेत करते हुए शाह मिर्जा ने कहा—'हम भी ताजिक हैं। तुम्हारे बारे में अच्छी तरह जानना चाहते हैं। इसलिये हमारे बार-बार पूछने का बुरा न मानना।"

"मैं भी जानता हूँ कि तुम ताजिक हो। जब से मैं ताशकन्द आया, हर रोज हरएक आदमी से 'इस शहर में कोई ताजिक है कि नहीं' कहके पता लगाता रहा। कल एक आदमी ने तुम्हारी और तुम्हारी दुकान का पता बताया। इसलिये जान-पहिचान करने के लिये मैं यहाँ आया हूँ।"

"बहुत अच्छे आये। अपनी बात कहो। करातेगिन से कैसे आये और बुखारा में क्या करते रहे ?"

"मैं करातेगिन के जेलखाने में बन्दी था। इस साल अमीर ने बन्दियों का भी नौकरों के साथ बुखारा बुलाया। वहाँ के हाकिम ने मुझे दूसरे बन्दियों के साथ बुखारा भेज दिया। यहाँ चोरों की एक पल्टन सगठित की गयी, जिसका नाम 'शेरबचा' रखा गया। मुझे भी उसमें शामिल कर दिया गया। इस पल्टन में हमारे-जैसे थोड़े लोग चाहे चोर कहकर बदनाम किये गये हों, लेकिन अधिकतर खूँख्वार, नामी डाकू और चोर थे। पल्टन के साथ बुखारा और उसके आस-पास कुछ समय तक मैंने देख-भाल का काम किया। लेकिन वह ऐसी देख भाल थी, जिसके लिये लोग पनाह माँगते थे। हमारी पल्टन और अफसर जिस किसी गाँव में जाते, वहाँ निरीह बच्चों, बेटियों और औरतों को जबरदस्ती पकड़वा-कर जल्सा रचाते, मार-पीट करते और लोगों के माल को उनकी आँखों

को कत्ल कर डाला। जब हमने मजूरों को मारना शुरू किया, तो उन्होंने कहा, "हम ताजिक हैं। हम मुसल्मान हैं। क्यों हमें मार रहे हो? हमारा कसूर यही है कि रूसी मजूरों के साथ चलने के लिये कहने पर भी हमने उनकी बात न मान, इस्लामी बादशाह की शरण में रहना पसन्द किया। क्या उन लोगों के साथ यही न्याय है, जिन्होंने इस्लाम के बादशाह से लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि उसके साये में रहना चाहा, और रूसियों के साथ नहीं भागे?" उन्होंने बात बना कर हमें धोखे में रखना चाहा और चाहा कि हम उनकी हत्या न करें।"

"लेकिन क्या उन्होंने झूठ कहा था? या सचमुच युद्ध में शामिल हुए थे?" मैंने अपने साथी से पूछा।

"नहीं, वह सच बोलते थे। वह अमीर के खिलाफ जंग में शामिल नहीं हुए थे और हमेशा इस्लामी बादशाह की हिमायत करके बैठे रहने का दावा कर सकते थे। लेकिन जिन लोगों ने जार-जैसे एक बड़े बादशाह को तख्त से उतार दिया था, क्या वह मजूर नहीं थे? जिन लोगों ने बुखारा में जदीदों की सहायता करते हुए, जनाब आली अमीर के खिलाफ तल्वार उठायी थी, क्या वह मजूर नहीं थे? यह भी आज न सही, तो कल जनाब आली के खिलाफ तलवार उठायेंगे। इसीलिये हमने उन काफिरों की बात को कान में न ला, आँख मूँदकर सबों का काट-काटकर उसी कुण्ड में डाल दिया, जिसमें कारखाने के लिये पानी जमा रखा जाता था। फिर कारखाने में जो कीमती चीजें मिलीं, उन्हें लेकर कारखाने के मकान और गोदाम में आग लगा, उसे जलाकर खाक कर दिया। कारखाने के जलते समय यह मुर्दे पानी के भीतर थे, इसीलिये जल नहीं सके, नहीं तो इनकी राख भी कारखाने की राख के भीतर एक होकर न दिखाई पड़ती। पीछे दूसरे भगोड़े यहाँ पहुँचे, जिन्होंने पानी पीकर कुण्ड को सुखा दिया, और मुर्दे दिखलायी पड़ने लगे। पशु-पक्षियों ने इनका गोश्त खा लिया और अब यहाँ हड्डियों का ढेर भर बचा हुआ है।

के सामने लूट लेते। यदि कोइ उनके कामों के लिये नाराजगी प्रकट करते, तो उन्हें हाथ-पैर-बाँध के 'जदीद' कहकर बुखारा भेज देते। वहाँ उनमे से जिनके पास पैसा काफी होता और वह घूस रिश्वत दे सकते, उन्हें छुट्टी मिल जाती थी। छुट्टी मिलने पर भी वह अपने गाँव को नहीं लौट सकते थे, क्योंकि लौटने पर दुबारा उन्हीं हत्यारों के हाथ में पड़ना पड़ता। जो रिश्वत नहीं दे पाते थे, उन्हें बुखारा के 'आबखाना' नामक जेल में डालकर मार डालते। उनकी लाश उगलान दरवाजे की नहर मे फेंक दी जाती। यह बात उस वक्त की है जब कि राज्य में कोइ गड़बड़ी नहीं हुइ थी। लेकिन जब कारोलेफवाली लड़ाइ हुइ, तो उसके दो सप्ताह बाद तक लोग बतलाते हैं कि आदमियों को कीड़े-मकोड़े की तरह मारकर उनकी लाशों को गलियों में छोड़ दिया गया था। खैरियत हुइ कि मैं उस वक्त बुखारा में नहीं था, नहीं तो इस सारी खूँरेजी और हत्याकांड को देखकर अपने को न रोक, बेकार ही मारा जाता। उस समय लोगों को अकेले-अकेले ही नहीं, बल्कि झुंड के झुंड मारा गया। जब कि जिल्तप्पे की ओर हम आ जा रहे थे उस समय से मैंने एक कपास के जले हुए कारखाने को देखा। वहाँ एक कुण्ड में आदमियों के हड्डियों का ढेर देख, मैंने अपने साथियों में से एक से पूछा, जो कि वहीं का रहने वाला था—

"क्या यह हड्डी जंग के शहीदों की है? ओह, इनको कब्र में दफनाया क्यों नहीं गया? इन्हें इस हालत में क्यों छोड़ दिया गया?"

"यह जंग के शहीद नहीं" उसने जवाब दिया-बल्कि बरबरी और ताजिक परदेशी थे, जो कि इस कारखाने में रूसी मजूरों के साथ काम करते थे। यह कारखाना बुखारा के एक जदीद की मिल्कियत था। जब जदीद और बोल्शेविक हार खाकर कागान से भागे, तो मजूरों ने भी अपने कारखाने को छोड़कर समरकन्द का रास्ता लिया। लेकिन परदेशी ताजिक यहीं रह गये। इसी समय हम यहाँ आ पहुँचे। हमारी पल्टन के अफसरों ने हुक्म दिया और हमने इस कारखाने के आदमियों

को क़त्ल कर डाला। जब हमने मजूरों को मारना शुरू किया, तो उन्होंने कहा, "हम ताजिक हैं। हम मुसलमान हैं। क्यों हम मार रहे हो? हमारा क़सूर यही है कि रूसी मजूरों के साथ चलने के लिये कहने पर भी हमने उनकी बात न मान, इस्लामी बादशाह की शरण में रहना पसन्द किया। क्या उन लोगों के साथ यही न्याय है, जिन्होंने इस्लाम के बादशाह से लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि उसके साये में रहना चाहा, और रूसियों के साथ नहीं भागे?' उन्होंने बात बना के हम धोखे में रखना चाहा और चाहा कि हम उनकी हत्या न करें।"

'लेकिन क्या उन्होंने झूठ कहा था? या सचमुच युद्ध में शामिल हुए थे?' मैंने अपने साथी से पूछा।

"नहीं, वह सच बोलते थे। वह अमीर के खिलाफ़ जंग में शामिल नहीं हुए थे और हमेशा इस्लामी बादशाह की हिमायत करके बैठे रहने का दावा कर सकते थे। लेकिन जिन लोगों ने ज़ार-जैसे एक बड़े बादशाह को तख्त से उतार दिया था, क्या वह मजूर नहीं थे? जिन लोगों ने बुखारा में जदीदों की सहायता करते हुए, जनाब आली अमीर के खिलाफ़ तलवार उठायी थी, क्या वह मजूर नहीं थे? वह भी आज न सही, तो कल जनाब आली के खिलाफ़ तलवार उठायेंगे। इसलिये हमने उन काफ़िरों की बात को कान में न ला, आँख मूँदकर सभी को काट-काटकर उसी कुण्ड में डाल दिया, जिसमें कारखाने के लिये पानी जमा रखा जाता था। फिर कारखाने में जो कीमती चीजें मिलीं, उन्हें लेकर कारखाने के मकान और गोदाम में आग लगा, उसे जलाकर खाक कर दिया। कारखाने के जलते समय यह मुर्दे पानी के भीतर थे, इसीलिये जल नहीं सके, नहीं तो इनकी राख भी कारखाने की राख के भीतर एक होकर न दिखाई पड़ती। पीछे दूसरे भगोड़े यहाँ पहुँचे, जिन्होंने पानी पीकर कुण्ड को सुखा दिया, और मुर्दे दिखलायी पड़ने लगे। पशु-पक्षियों ने इनका गोश्त खा लिया और अब यहाँ हड्डियों का ढेर भर बचा हुआ है।

अपरिचित पुरुष ने अपनी बात को समाप्त करते हुए कहा—"अगर यह कहानी किसी के मुँह से सुनता तो विश्वास नहीं करता, लेकिन उन हड्डियों को अपनी आँखों देख, और उन हत्यारों में से एक के बयान को सुनकर विश्वास करने के लिये मैं मजबूर हुआ। यह देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि ज़ुल्म और अत्याचार इस सीमा तक पहुँच सकता है, इसलामी बादशाह के नाम से इसलामी सरकार के शासन में गरीब बेगुनाह मुसल्मानों को इतनी बेदर्दी से मारा जा सकता है।"

अदीना इस भीषण कथा को सुनकर, बदला लेने के जोश के कारण गुस्से से पागल हो गया। उसकी आँखें अंगारे की तरह लाल थीं। उसने अपने सूखे हाथों को हिलाते हुए कहा—"ऐ बिरादर, वे ताजिक वस्तुतः अपराधी थे। उनका सबसे बड़ा गुनाह था अज्ञान। उनका बड़ा गुनाह यही था कि उन्होंने नहीं समझा कि दीन और धरम, जाति और कौम का नाम एक हथियार है, जिससे उनको धोखे में रखा जाता है जिसमें वह अपने दुश्मन को बरबाद करके उनका किस्सा खत्म न कर दें। अगर गाँव के किसान तथा गरीब इस बात को नहीं जानते, तो उनका दोष नहीं। लेकिन मजूर तो कारखाने में इकट्ठा होकर काम करते हैं, उन्हें अपने वर्ग के शत्रुओं के धोखे फरेब को जानना चाहिये था। आखिर उनके बीच में भी कोई समझदार रहे होंगे। यदि उनमें नहीं, तो रूसियों से समझदारी सीख सकते थे। अवश्य ये समझदार मजदूर अपने साथ काम करनेवाले मुसल्मान मजदूरों को समझा सकते थे कि अरबाबों और दौलतमन्दों की धार्मिकता, पूँजीपतियों की जाति भक्ति का धोखा किसके वास्ते है। दुखियों, गरीबों, मजूरों को मुक्ति पाने का यही रास्ता है कि चाहें वह किसी धर्म और जाति के हों, उन्हें चाहिये कि सब एक होकर बादशाह और उसके अत्याचारी आदमियों के खिलाफ, ज़ुल्म और अत्याचार के खिलाफ, पूँजीवाद और अमीरी के खिलाफ खड़े हो जायँ, और अपने वर्ग के शत्रुओं का कभी विश्वास न करें, उनकी बात को ठीक न

समझें। ऐसा होने पर भी 'हम एक दीन के और एक जाति के हैं' कहकर, उन्होंने भेड़ों की तरह अपने को आदमखोर दुश्मनों के हाथ में दे दिया। क्या यह अपराध नहीं था? यह अपराध और दंड बीत चुके। लेकिन हम इन बातों से शिक्षा लें, और याद में जानें कि हमारे दुश्मन कौन हैं, और अपने भाइयों के खून का बदला लेने के लिये तैयार हो जायँ, तो उन बेगुनाहों का खून बेकार नहीं जायेगा।"

शाह मिर्जा ने अदीना की ओर देखते हुए कहा—"खैर, रहने दो। अपने को बहुत तकलीफ में मत डाल। तेरे ही कहने के अनुसार यह बातें गुजर चुकीं। शायद इस घटना से शिक्षा लेने के लिये गरीब और मजूर लोग सजग रहकर काम करेंगे। अब आगे की कहानी सुन। (अपरिचित पुरुष की ओर निगाह करके बोला) फिर क्या हुआ?"

अपरिचित पुरुष ने कहा—"क्या हुआ? मैंने देखा कि अगर गरीबों के खून को बहाने में जरा भी हिचकिचाहट की तो मुझे भी मार डालेंगे, इसलिए चुपके से चल देने का इरादा किया। इसके बाद हमारी पलटन को एक योकातची-तुकशाबा की अधीनता में करमीना भेज दिया गया। योकातची अमीर के पुराने साथी समाजियों में से था। उसका काम था यूरोप की बदचलन औरतों से लेकर देश के कलन्दर बच्चों तक को अमीर के पास भेजना। करमीना सीमा पर बाल्शेविकों के इलाके के समीप था, इसलिये योकातची को उस जगह भेजा गया। जब हम करमीना पहुँचे तो हमारी पलटन ने लूट मार का बाकायदा इन्तजाम किया। हर रोज पलटन की अलग अलग टुकड़ियाँ समरकन्द के रास्ते की देख भाल और जूले-मलिक की रखवाली के लिए घूमती फिरतीं। कोई आदमी रास्ते में मिल जाता तो 'तू जदीद और बोल्शेविक है' कहकर उसे पकड़ लेते। पूछ-ताछ के बाद यदि सन्देह हुआ तो उसे बन्दी बनाते, नहीं तो छोड़ देते। जो उनका विरोध करता या नाराजी प्रकट करता, उसे मार डालते। बन्दियों के हाथ और गर्दन को बाँधकर करमीना में योकातची के पास भेज देते। वह अगर उचित समझता

तो नन्दी को बुखारा भेज देता, नहीं तो चन्द रोज जेल में रख, सख्त तकलीफ देकर रिश्वत ले, किसी विश्वास के आदमी की जमानत पर छोड़ देता।

"पकड़े हुओं में से कुछ जब तक चोरों के हाथ में रहते, तब तक मुँह न खोल, करमीना में जा योकातची के पास शिकायत करके इन्साफ पाने की दरख्वास्त देते। वह कहता, "कौन जानता है कि तुम्हारे माल को हमारे आदमियों ने लिया? शायद तुम बोल्शेविक या जदीद हो और हमारे जनाब आली पर जान न्योछावर करनेवाले इन सिपाहियों को बदनाम करना चाहते हो। मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाओ, नहीं तो अभी जेल में भेजूँगा।"

"लूट-खसोट करना, बच्चे-बीबियों पर हाथ साफ करना इन नौकरों का आम काम था। इन घटनाओं को देखते हुए मैं अपने को जरा भी रोकने की शक्ति नहीं रख पाता था। मेरी यही इच्छा हुई कि जैसे ही मौका मिले, इन जल्लादों के गिरोह से निकल भागूँ। लेकिन मैं नहीं जानता था, कहाँ जाऊँ और कैसे भागूँ। अपने देश को भाग सकता था, लेकिन अगर रास्ते में पकड़ा जाता तो मुफ्त में मारा जाता या फिर से जेल में पड़ना तो निश्चय ही था। समरकन्द और ताशकन्द की तरफ भागने की हिम्मत नहीं होती थी, क्योंकि मुझे लोगों ने बतलाया था कि जो कोई बुखारा से उधर भागता है उसे बोल्शेविक मार डालते हैं और वहाँ के बाशिन्दे स्वयं बाल्शेविकों के हाथ से बहुत बुरी तरह सताये जा रहे हैं। बाल्शेविकों के इलाके से जो बाय और मुल्ला भाग कर बुखारा की ओर गये थे, उनकी झूठी झूठी बातों को एक का चार करके अमीर के आदमियों को सुना, उन्हें पक्का करते थे। अगर बुखारा से भागे हुओं की बात चलती, तो कह देते, 'यह काफिर बागी मुर्दे हैं, जो यहाँ से भाग गये हैं। अब इन काफिरों के लिये दुनिया में कोई नामो-निशान नहीं रह गया।"

"इसी समय एक आदमी को कत्ताकुरगान की ओर से बन्दी बनाकर ले आये। योकातची ने उस बन्दी से पूछा, 'ऐ मुर्तिद (पतित), अब जब कि तू मेरे हाथ में आया है, कुत्ते या गधे की मौत मरेगा। यदि सच बता दे कि बुखारा से भागे हुए आदमी समरकन्द और ताशकन्द में जाकर क्या काम करते हैं और जनाबआली (अमीर बुखारा) के विरुद्ध क्या कार्रवाई कर रहे हैं, बोल्शेविकों के साथ उनका कैसा सम्बन्ध है, तो जनाब आली से प्रार्थना करके हम तेरी जान बख्शवा देंगे।"

बन्दी ने कहा—'व्यर्थ का मुझे धोखा मत देने की कोशिश कर। मैं उन बेवकूफों में नहीं हूँ कि तेरे जैसे झूठों की बात पर विश्वास करूँ। अच्छी तरह समझ ले कि मैं मरने से नहीं डरता। जिस वक्त मैं या मेरे दूसरे साथी अमीर के विरुद्ध उठ खड़े हुए उसी समय हमने मौत को अपनी गर्दन पर उठा लिया। अब जब कि मैं तेरे हाथ में पड़ा हूँ, अवश्य मारा जाऊँगा, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है। लेकिन यह अच्छी तरह समझ रख कि मेरे मारे जाने से तुझे और तेरे अमीर को कुछ भी नफा नहीं होगा। केवल मैं ही नहीं, बुखारा से भागे यदि सारे हो लोग मारे जायँ, तो भी तुम्हारे प्राण बचने के नहीं। मेरे पीछे आनेवाले तुम्हें दुनिया से नष्ट कर देंगे, भूमण्डल को तेरे जैसे मुर्दारों के अस्तित्व से पाक कर देंगे। बुखारा के भगोड़ों की बात क्या पूछता है? उनकी कोई बात छिपी नहीं है, जिसे कि मैं कहूँ। दुनिया जानती है कि वह रात दिन इस दिन के लिये तैयारी कर रहे हैं, जब कि आकर तुमसे बदला लेंगे। वह शुभ दिन भी बहुत नजदीक है। अगर विश्वास नहीं करता तो जल्दी ही अपनी आँखों से उसे देखेगा। बुखारा के भगोड़ों का बोल्शेविकों के साथ क्या सम्बन्ध है, इसे भी सब लोग जानते हैं। जिस समय वह भागकर बोल्शेविकों की छाया में गये, उसी समय से उन्होंने अपने भाग्य को उनके भाग्य के साथ बाँध दिया।'

"यीमातची ने जब यह आग भड़कानेवाली, निर्भीक बात सुनी, तो उसने गुस्से में लाल होकर उसी वक्त चाहा कि बन्दी को टुकड़े-टुकड़े करके, उसकी लाश को आग में जला दे, लेकिन इस शिकार को बड़ी मुश्किल से वह पकड़ पाया था, इसलिये उचित समझा कि उसे अमीर के पास भेंट के तौर पर भेजे। अपने गुस्से को शान्त करने के लिये उसने उसकी गर्दन पर चंद कोड़ों की मार से ही सन्तोष किया। उसने बन्दी को सिपाहियों के साथ तुरन्त बुखारा भेज दिया। अमीर ने उस बन्दी के मुंह से जब उसी तरह की निर्भीक बातें सुनीं, तो तलवार से टुकड़े टुकड़े करवा कर उसे मरवा डाला। पीछे पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि यह बन्दी मिर्जा उसमान नामक एक जदीद था, जो कि बुखारा भागकर ताशकन्द जा, वहाँ बोल्शेविक बन गया था। और इसी समय कत्ता कुरगाना के नबरदारों में से एक ने उसे ताशकन्द से अपने यहाँ बुलवाया और फिर पकड़कर यामातची के पास शेरबच्चों के साथ भेज दिया।"

"मुझे इस घटना से पता लग गया कि तुर्किस्तान में शरण लेने की जगह है और वहाँ गये भगोड़े काम को आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं। मैंने समरकन्द और ताशकन्द की ओर भागने का इरादा कर लिया। एक दिन सवेरे के वक्त करमीना के रेल्वे स्टेशन पर गया, और अपने दिल की हालत को रेल्वे मजूरों से कहा। उन्हीं की मदद से मैं भागकर यहाँ आ सका।"

अदीना ने दूसरी बार करातेगिन की बात को लेकर, उस आदमी से पूछा—"करातेगिन में किस अपराध के लिये बन्दी हुआ था?"

उस पुरुष ने कहा—"वह बात भी बड़ी विचित्र है। मैं फरगाना से लौटते ताजिक मुसाफिरों के साथ करातेगिन जा रहा था। सीमा पर अमीर के आदमियों ने मुझे जदीद कहकर "

अपरिचित पुरुष अभी अपनी बात को खतम न कर पाया था कि

अदीना ने अपने शरीर को सीधा कर, बड़े ध्यान से उसकी आँखों की ओर देखते हुए चिल्लाकर कहा—'बाय, तू शरीफ नहीं है क्या ?"

अपरिचित पुरुष एकाएक इस बात को सुनकर, बड़े अचरज में पड़ गया और उससे सवाल जवाब करने की जगह बड़े ध्यान से उसकी ओर देखकर बोल उठा—"बाय, तू अदीना नहीं है क्या ?"

दोनों पुराने दोस्त अब सवाल जवाब कैसे करते ! उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया, मुँह को चूमा और फिर अपनी जगह बैठकर, दुबारा हाल-चाल पूछना शुरू किया ।

---

ह दृश्य बड़ा ही विचित्र था। एक दो क्षण ही पहिले अदीना उस अपरिचित पुरुष का हाल-चाल जानने के लिये कोशिश कर रहा था, और अब वह उसका पुराना मित्र निकल आया। अब संकोच करने की आवश्यकता नहीं थी। और वह उससे हर एक बात पूछ सकता था, और आपबीती को भी सुना सकता था। सबसे ज्यादा प्रसन्नता थी शाह मिर्जा को। एक घंटा पहिले उसने अपनी आँखों से देखा था कि यह आदमी अदीना को नहीं पहिचानता और अदीना को उसका कोई परिचय नहीं था। क्या बात हुई कि वे दोनों अपरिचित एकाएक इतने मित्र हो गये, और एक दूसरे को नाम और पता देने लगे। इस विचित्र घटना ने शाह मिर्जा को भी अचरज में डाल दिया। उसे बड़ी इच्छा हुई कि इसी क्षण रहस्य का जान ले, लेकिन अदीना ने शाह मिर्जा की इच्छा पूरी नहीं होने दी। वह बीच में बोल उठा—"अका, शरीफ मेरा बहुत ही प्यारा मित्र है। अगर तक लीफ न हो, तो भोजन तैयार कर लो। पुलाव पके, तो बेहतर हो। मैं भी आज परहेज को छोड़कर तुम्हारे साथ आश पुलाव खाऊँगा।"

वस्तुत शरीफ के साथ परिचय होना या पुराने परिचित शरीफ से मिलना अदीना के लिये बड़ी प्रसन्नता की बात थी। वह खुशी के मारे फूला नहीं समाता था और उसे मालूम हो रहा था कि उसकी बीमारी चली गयी है। वह अपने में शक्ति अनुभव कर रहा था, इसीलिये समझता था कि इस समय परहेज तोड़ने में कोई हर्ज नहीं।

शाह मिर्जा ने अदीना से कहा—"दो देग मेरे पास हैं। एक में तेरे लिये मुर्ग का एक कटोरा शोरबा पकाऊँगा। जब तक तू अच्छी तरह स्वस्थ न हो जाय, तब तक परहेज मत छोड़।"

"मेरे लिये तकलीफ न करो। रहने की जगह पर भोजन तैयार है। एक दूसरे का कुशल आनंद मालूम हो गया, यही बहुत है। अभी मैं भोजन नहीं करना चाहता।" कहते हुए, शरीफ ने क्षमा माँगनी चाही।

"स्वयं भी हमें भूख लगी है। भोजन पकाना मेरे लिये जरा भी तकलीफ की बात नहीं है। अगर तुम न होते तब भी कोई चीज पकाकर खाते ही।" कहते, शाह मिर्जा चायनिक मे ताजी चाय बनाकर ले आया, और खुद देग के नीचे आग जलाने चला गया।

अदीना और शरीफ दोनों चायनिक की चाय को अपने बीच में रखकर, निकालकर पीते हुए, फिर बात करने में लग गये। अदीना ने समझा कि शरीफ उसकी सारी बातों से परिचित नहीं है। इसलिये पहिले उसने बाच के समय में जो कुछ अपने ऊपर बीती थी उसे कहा। फिर अपने घरवालों की खबर जानने के लिये बोला—"भाई, मैंने इस जमाना और थोड़ी सी जिन्दगी में ही दुनिया में बहुत कुछ देख लिया है। तू जानता है कि पहिली बार कितनी मुश्किल से अरबाब कमाल के हाथ से भागकर फरगाना आया था। जब हम देश लौट रहे थे, उस वक्त दूसरे मुसाफिरों की तरह मेरी चीजों का भी जकातचियों ने कैसे लूटा, यह भी तुझे मालूम ही है।" इस तरह उसने आज तक जो उसके सिर पर बीती थी, एक एक करके सब कह डाला। और अन्त में कहा—"एक साल से अधिक हुआ कि नानी की कोई खबर नहीं मिली। अगर तू उनके बारे में कुछ जानता हो, तो बतला।"

"जिस वक्त मुझे सीमान्त पर बाँधकर ले गये", कहते हुए शरीफ ने बात शुरू करनी चाही, किन्तु उसे बीच में ही काटकर अदीना ने कहा—"सीमान्त पर तुझे बंदी बनाया गया, यह मैंने खुद देखा था इसलिये उसके बारे में और दुहराने की जरूरत नहीं। अपने परिवार की खबर न मिलने के कारण मेरा चित्त बड़ा व्याकुल है। अगर उनके

बारे में कुछ जानता हो तो जल्दी कह जिसमें मेरी व्याकुलता कम हो।"

'उतनी खबर तो नहीं मालूम है', शरीफ ने कहा—'जिस वक्त बन्दी बनकर तुझसे विदा हुआ उस वक्त से लेकर तुम्हारा भेजे जाने के समय तक मैं बन्दीखाने में ही रहा', यह कहते शरीफ ने बात को टालना चाहा।

लेकिन 'उतनी खबर भी नहीं मालूम है', इस वाक्य को सुनकर अदीना के दिल में कुछ सन्देह पैदा हो गया। और उसने शरीफ का बात से हटने न देकर फिर पूछा—'यदि थोड़ा ही मालूम है, तो भी जल्दी कर। बतला वह बुरी है या अच्छी, जिसम कि मेरे दिल को धीरज मिले।'

शरीफ को भागने का कोई रास्ता नहीं था। जिस बात का वह कहना नहीं चाहता था उसे अब कहना आवश्यक हो गया। लेकिन वह कोशिश करता रहा कि बात को थोड़ी और हल्की करके कहे। उसने कहानी शुरू करते हुए कहा—'थोड़ा-सा धीरज धर। जो मुझे मालूम है वह बतलाता हूँ, जो बात मैं तुझसे कहने जा रहा हूँ, उसी म तेरा भी मतलब पूरा हो जायगा। जब मुझे बन्दी बनाकर करातेगिन ले गये तो कुरगान के फाटक पर मेरे सभी कपड़ों को उन्होंने उतार लिया और मुझे एक छोटी कोठरी में रखकर बाहर से ताला बन्द कर दिया। एक घड़ी बाद कुछ आदमियों के साथ मीर गजब ( कोतवाल ) खुद कोठरी म आया। उसने मेरा और मेरे बाप का नाम, रहने की जगह और परगाना म क्या काम करता हूँ, इत्यादि इत्यादि बातें पूछीं। उसने जो जो बातें पूछीं, मैंने उनका ठीक ठीक जवाब दिया।

मीर गजब ने पूछा—'जदीददी ( जदीदबाद ) को कहाँ म सीखा ?'

"मैं जदीद मदीद को नहीं जानता" मैंने कहा।

"मीर गजब ने मेरे पास खड़े अपने दो आदमियों को हुक्म दिया। उन दोनों प्रेत-जैसे आदमियों ने मेरे मुँह पर खींचकर थप्पड़ मारना शुरू किया, जिससे सिर से धुआँ निकल पड़ा, आँखों के सामने अँधेरा छा गया। दो-चार बार मारने के बाद उन्होंने मुझे पट के बल जमीन पर गिरा दिया। दोनों ने मेरी बाँहों को पकड़कर सीधा किया, और फिर मीर गजब के सामने उकडूँ बैठा दिया। मीर गजब ने गुस्सा म आकर कहा—'बादशाही एकबाल को देखा? अब जल्दी कर, सच-सच बता, जिसम साँसत से छुट्टी पाये!"

मैंने कहा—"जिस चीज के बारे म मैं नहीं जानता, उसे कैसे बताऊँ? मेरे सिर पर जो भी पड़गी यही समझूँगा कि मेरे भाग्य म यही बदा था।"

"बेतें ले आ", कहकर मीर गजब ने अपने एक आदमी को हुक्म दिया।

वह 'बहुत अच्छा, तक्सीर' कहके गया और बीरी की कमचियों का एक मुट्ठा जिसम तीस चालिस कमचियाँ होंगी, लाकर घर के भीतर पटक दिया।

मीर गजब ने कहा—'बतला नहीं तो इन बेतों की मार से तेरे शरीर के टुकडे-टुकड़े उड़ जायेंगे, और तू बड़ी बुरी मौत मरेगा।'

"क्या कहूँ?"

"जदीदवाद के बारे म जो कुछ जानता है।"

"मैंने कहा, नहीं मुझे कुछ भी मालूम नहीं?"

मीर गजब ने आँखें लाल-लालकर, अपने आदमियों का ओर नजर करके कहा—'बात से काम नहीं चलेगा। थोड़ा ठहरो। इस पतित को पछाड़ो।'

उन्होंने पेट के बल मुझे जमीन पर लिटा दिया। फिर एक ने मेरी गर्दन पर सवार होकर मजबूती से दबाये रखा। दूसरे ने पैरों की ओर खड़े हो, मेरे पैरों का खूब अच्छी तरह पकड़ा। दो आदमी हाथ म

कमची लेकर दो तरफ खड़े हो कन्धे से लेकर जाँघ तक अनगिनत बेंत मारने लगे। कुछ देर पीटने के बाद, मीर गजब ने फिर कहा—'ठहर, अभी क्या हुआ है? अभी और साँसत होगी। तब देखेगा!'

इसके बाद उन्होंने फिर मुझे खड़ा कर दिया। मुझमें बैठने की भी शक्ति नहीं रह गई थी।

मीर गजब ने कहा—"कैसा है तू! अभी एक लकड़ी भी तेरे ऊपर टूटी नहीं है, लेकिन देख रहा हूँ कि तेरी क्या हालत हुई! क्यों सच-सच नहीं बतलाता? यह बादशाही हुकूमत है। इसके बाद तेरी जाँघ और नखों में सपाचियाँ ठोंकी जायँगी। सारे शरीर से खून बहने लगेगा, फिर नमक छिड़का जायगा। तेल गरम करके सिर पर डाला जायगा। फिर तू सब स्वीकार करेगा और एक एक करके सारी बातें उगल देगा। अब भी तेरे लिये मौका है कि अपनी जवानी पर रहम खा। अपने को इस अजाब में मत डाल और जदीद होकर जो कुछ काम किया है, उसे बतला दे।"

"मैं "

मीर गजब ने अपने एक चपरासी से कहा—'अब थोड़ा गरम हुआ। आज नहीं कहा, लेकिन कल जरूर कह देगा। आज रात तक ठहर जाओ। इसे खूब सोचने विचारने का मौका दो। यदि कल भी नहीं बोला, तब उपाय करेंगे। आज देर भी हो गयी। जो कुछ करना होगा, कल करेंगे। इसकी गर्दन में जंजीर और पैरों में कुन्दा डाल दो। अच्छी तरह ध्यान रखना, कहीं भाग न जाय।' कहकर वह चला गया।

"सिपाहियों ने गर्दन में जंजीर डाली और पैरों में कुन्दा किया। कुन्दा करने के समय पैरों को जो तक्लीफ हुई थी, उसे याद करने से आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।" कहते हुए, शरीफ ने अपने पैर अदीना को दिखलाये। अब भी उसके पैरों में सफेद दाग पड़े हुए थे।

शरीफ ने फिर अपनी बात आरंभ करते हुए कहा—"हाँ, उस रात को सुबह होने तक मैं सो नहीं सका। एक तरफ पैरों का दर्द नींद आने नहीं देता था, दूसरी ओर अगले दिन की साँसत का ख्याल आता, तो पलक पर पलक कहाँ पड़ सकती थी? सवेरा हुआ। सूर्य उग आया। नाश्ते का वक्त आया। दिन बहुत चढ़ आया। अब भी मीर गजब का कहीं पता नहीं था। दो रोज़ हो गये थे, किंतु बेंत खाने के सिवा और कुछ खाने को मिला नहीं था। तो भी भूख का कहीं पता नहीं था। लेकिन क्या होनेवाला है, इस डर ने मेरी हालत को बहुत तंग कर दिया था। मेरा गला सूख-सूख जाता था। कुछ देर बाद कोई मेरी कोठरी का दरवाजा खोलने लगा। मैं दूसरी साँसत के लिये अपने को तैयार करने लगा। द्वार खुल गया। इस समय एक बन्दीबान (जेल का सिपाही) एक हाथ मे पानी का गड़वा (आफ्ताबा) औ दूसरे मे रोटी लिये मेरे पास आया और बिना कुछ बात किये हुए ही कुन्दे से मुझे निकालकर, कोठरी के कोने मे मौजूद गढ़े की तरफ इशारा करके कहा—'पाखाना जाने की जरूरत हो तो वहाँ कर।'

मेरे फरागत होने के बाद उसने फिर पैरों को कुन्दे में डाल दिया। लेकिन इस बार उसे उतना कड़ा नहीं किया। फिर उसने मुझसे कहा—'मैंने तेरे पैरों को आराम से रहने दिया है। इस खिद-मत को भूलना नहीं। अगर तेरा कोई सगा सबंधी आये, तो उसे बतला देना, जिसमे मुझे वह अच्छा खिदमताना दे।"

मैं कुछ न बोला। उसके बाद वह आफ्ताबे के पानी और रोटी के टुकड़ों को मेरे सामने रख दरवाजे मे दुबारा ताला बन्दकर चला गया।

बन्दीबान हफ्ता भर प्रतिदिन एक बार आता मुझे फरागत के लिये खोलता, फिर दुबारा बन्द करते हुए खिदमताने की बात करता और वही रोटी-पानी सामने रखकर चला जाता। आठवें दिन कुछ सवेरे ही खुला। दो बन्दीबानों ने आकर, मेरे गर्दन से जेल (जंजीर) और पैरों से कुन्दे को अलग किया और मेरे हाथों को पीठ पर बाँधा।

इस हालत में जब मुझे दूसरी कोठरियों के बन्दियों ने सूराख से देखा तो उन्होंने मुबारकबादी दी। मैंने पूछा—'भाइयो, यहाँ मुबारकबादी का कहाँ जगह है? अगर मैं मुक्त होनेवाला होता, तो मेरे हाथों को न बाँधते। इन्होंने हाथों को बाँध दिया, जिससे मालूम होता है कि मेरी कैद सदा के लिये है। फिर क्यों मुबारकबाद दे रहे हो?'

बन्दियों में से एक ने कहा—"तेरे हाथों को पीठ पर बाँधा गया है, जिससे स्पष्ट है कि तू मारा नहीं जायेगा। अगर मारना होता तो सामने की ओर बाँधते। मारे जाने से तू छुट्टी पा चुका है। इसके लिये तू मुबारकबादी के लायक है। तेरी चाहे जो साँसत हो, वह मौत से कम ही होगी।'

मैंने अपने दिल में कहा, 'यह ढंग मृत्यु से छुट्टी पाने का निशान बुरा नहीं है। इसलिये आम रिवाज के मुताबिक मैं भी मरने से छुट्टी पाने की बात को अमीर की सरकार का इन्साफ कह सकता हूँ।'

'बाद मुझे उसी तरह हाथ बाँध हाकिम के सामने ले गये। यसावुल्बाश हाथ में डण्डा लिये वहाँ पास में खड़ा था। हाकिम ने उससे पूछा—'शरीफ जदीद यही है?'

'यही है।'

'ले जाओ, कहकर हाकिम ने इशारा किया।'

'मुझे खींचते हुए कुरखान के फाटक के नीचे ले गये और वहाँ मेरी पीठ को नगी करके चालीस बेंत मारा। फिर यसावुल्बाश ने कहा—'जनाब आली के नाम से अब दुआ माँग!'

लेकिन जनाब आली के लिये दुआ करने की बात तो अलग, मुझमें उसे गाली देने की भी ताकत नहीं थी। इसके बाद यसावुल्बाश ने बन्दीखाना ले जाने के लिये मुझे मीरशब के हाथ में दे दिया। मीरशब ने मुझे ले जाने के लिये अपने आदमियों को कह दिया। यद्यपि बन्दीखाने में भी मेरे गले में जेल और पैरों में जजीर रही, लेकिन पैरों को कुन्दे में नहीं डाला गया। बन्दीखाने में मेरे सिवा और भी कितने

ही बन्दी थे। उनमें से हर एक ने मुझसे बन्दी बनने का कारण पूछा। मैंने उन्हें अपनी कथा कह सुनायी।

एक दिन यशाबुलबाश का एक आदमी जेल में आया और उसने मुझसे मेरे सगे-सम्बन्धियों का नाम पूछा। बूढ़ी माँ के सिवा मेरा कोई नहीं था कि मैं उसे बतलाता। उसने कहा— 'अगर तू चाहता है और मुझे अच्छा खिदमताना देने का वादा करता है, तो मैं तेरी माँ को खबर देकर उसे देखने के लिये बुलवा भेजता हूँ।"

मैंने कहा—'अभी ज़रूरत नहीं है। बल्कि उसे न बतलाना ही ठीक है।' यदि बेचारी माँ मुझे इस हालत में देखेगी, तो दुख के मारे मर जायगी।

लेकिन मेरे ऐसा कहने के बाद भी खिदमताना पाने की आशा से मा को उन्होंने खबर दी। चार दिन बाद बेचारी बुढ़िया आयी। मेरे लिये अपने साथ एक कुत्ता, एक मुर्गा यखनी के लिये, थोड़ी-बहुत रोटी और एक कटोरी घी लेती आयी। बन्दीखाने के दरवाजे पर बन्दीखाना ने मुर्गा और घी को खिदमताना कहकर, उसके हाथ से ले लिया और रोटी तथा कपड़ा मेरे हिस्से मे रखा था। माँ जेलखाने के भीतर आकर मेरे पास आयी। उसने मुझे उस हालत में देखा, जिसमें कि वह अपने दुश्मन को भी देखना न चाहती। मेरे बाल बिखरे हुए थे, मुँह पर झुर्रियाँ पड़ी थीं, बहुत रोने के कारण आँखें लाल हो गयी थीं, आवाज भी बहुत सुस्त और करुण थी, जिसको मुँह से निकालने में भी मुझे बड़ी तकलीफ होती थी। वह बेचारी भी बहुत कमजोर और कृश हो गयी थी और चिल्लाने की उसमें ताकत नहीं था। मुझे देखकर रोते हुए उसने मेरे सिर और मुँह को चूमा, फिर बेहोश होकर गिर पड़ी। बहुत कोशिश की कि वह होश में आवे और आँखों को खोले, लेकिन एक बार फिर वह मेरी ओर चिल्लाकर पुकारा बेहोश हो गयी। मुझे निश्चय हो गया कि अब उसके प्राण नहीं बचेंगे। दूसरे बन्दी भी मेरी सहायता के लिये आ गये। थोड़ा ठण्डा पानी लाकर उसके मुँह

पर छींटा दिया गया। वह होश में आ, मेरे सामने उठ बैठी। मेरी हालत और बन्दी होने के कारण के बारे में भी पूछा।

'यही मेरा भाग्य, तेरा दुर्भाग्य है' कहकर मैंने उसे जवाब दिया।

एक घंटा बैठी रहने के बाद हर हफ्ता एक बार देखने के लिये आने का वादा करके वह चली गयी। बाहर जाते वक्त जेलखानेवालों ने उससे कहा कि यदि देखने के लिये आते वक्त हर बार एक कटोरी घी खिदमताना नहीं लायेगी तो अपने बेटे को नहीं देख सकेगी। बेचारी माँ अपने बेटे का देखने का लालच छोड़ना नहीं चाहती थी और खिदमताना के लिये हर बार एक कटोरी घी लाना भी उसकी शक्ति से बाहर था। शरीर में उसके इतनी ताकत नहीं थी कि कहीं मजूरी करती। अन्त में वह भीख माँगने पर उतारू हुई और घर घर जाकर मेरे बन्दी होने और अपनी बदबख्ती की कथा सुनाकर कैदखाने वाला को घी देने तथा अपने पास गाय या भेड़ न होने की बात कहते हुए प्रार्थना करती। अगर घर के मालिक के पास घी होता और उसकी हालत पर उसे रहम आता तो वह थोड़ा-सा घी दे देता। इस तरह कितने ही घरों में फिर कर कटोरी घी जमा करके मुझे देखने के लिए आती। इस प्रकार घी के लिये भिखमगी करती, वह शाम सवेर कोहिस्तान में इधर उधर घूमा करती। जब तक मुझे बुखारा नहीं भेजा गया, माँ का यही काम था। उसके बाद उस बेचारी के सिर पर क्या पड़ा, सो मुझे मालूम नहीं। जो हो, आशा यही है कि वह अब तक जीवित होगी।'

यह कहकर शरीफ ने अपनी आप-बीती को समाप्त किया। कहानी के अंतिम हिस्से पर पहुँचने के वक्त उसकी आँखों से कुछ आँसुओं की बूँद गालों पर से बहने लगी थी। रुमाल निकालकर उसने अपने आँसुओं को पोंछकर मुह बन्द कर लिया।

शरीफ की राम-कहानी सुनने से अदीना बहुत प्रभावित हुआ था और करीब करीब अपनी उत्सुकता भी भूल चुका था समझने लगा था कि उसने जो तकलीफें आज तक सही हैं, शरीफ की तकलीफें उनसे

कहीं ज्यादा थीं। अब शरीफ अदीना की नजर में एक अपरिचित व्यक्ति नहीं था या कि वही सरायबान था, बल्कि वह मानवता की एक भव्य मूर्ति था। वह ऐसा रत्न था कि इतने जोरजुल्म की आग में भी मलीन नहीं हुआ, इसलिए अदीना को हिम्मत नहीं हुई कि स्वार्थ के खयाल से अपने परिवार की हालत के बारे में खासतौर से जानने की इच्छा प्रकट करे। उसने शरीफ को तसल्ली देते हुए कहा—'बिरादर, रंज मत कर, अफसोस न कर, दुनिया में और विशेषकर कोहिस्तान में हमारे-तेरे जैसे तकलीफ में पड़े ताजिक ही केवल नहीं हैं, बल्कि न जाने कितने शरीफ कितने अदीना और कितने सगीन जेलों में पड़ अन्याय के शिकार हुए, मिट्टी में मिल गये। अगर ऐसे दुख और तकलीफ में पड़े मैं और तू मर गये होते तो हो सकता है कि हम दुनिया से बेनामोनिशान ही मिटकर चले जाते। चूँकि अत्याचारियों से पीड़ितों की संख्या बहुत है, तकलीफ में पड़े लोग अनगिनत हैं, इसलिये आज न सही, कल वह जरूर उठ खड़े होंगे और जिन्होंने आज हम बरबाद कर रखा है, उन्हें नेस्तोनाबूद करके छोड़ेंगे। विशेषकर इस जमाने में जब कि रूस के मेहनतकशों ने मैदान में आकर जार के तख्त और ताज को उसके रोब दबदबे का उसके सरदारों सहित मिट्टी में मिला दिया। ऐसे समय में अगर ताजिक गरीब भी उसके पथ-प्रदर्शन पर चले तो कभी मुमकिन नहीं है कि इस क्रान्ति के तूफान के सामने अरबाब कमाल, मुल्ला, शाकराह हाकिम और अमीर खड़े होने की ताकत रख सकेंगे। देर हो या जल्दी, ताजिक मेहनतकश भी अपने लक्ष्य को पायेंगे और कोहिस्तान के उत्पीड़ित जन भी आजाद होंगे। ऐसी हालत में मेरे और तेरे खत्म होने से कोई डर नहीं, बल्कि इस रास्ते में अपने आपको कुर्बान करना मेरे और तेरे लिये एक बड़ी इज्जत की बात है। तेरी रामकहानी सुनकर मेरी हालत ऐसी हो गई है कि यद्यपि नानी का प्यार और गुल बीबी की मुहब्बत मेरे लिये बड़ी कीमत रखती है, लेकिन उसके बारे में भी कुछ पूछने की इच्छा नहीं रह गई है।"

## गुल अन्दाम

शरीफ ने अदीना को उसके परिवार के बारे में क्या बतलाया, इसे कहने से पहिले जरूरी है कि हम अदीना के दूसरी बार फरगाना जाने के समय के बाद जो बातें करातेगिन में हुई थी, उन्हें बतला दें। यह मालूम ही है कि अदीना ने बीबी आइशा और गुल बीबी को बड़ी बुरी हालत में छोड़, फरगाना की यात्रा की थी। उनके पास खाने पीने की कोई चीज नहीं थी और न कोई उनकी पूछ-ताछ करनेवाला ही था। बेचारी दोनों वस्तुत बेकस और अनाथ थीं। सबसे बुरी बात यह थी कि अरबाब कमाल सदा बदला लेने की ताक में रहता था। वह चाहता था कि गुल बीबी का ब्याह अपने बेटे इबाद से करा दे। इस प्रकार उसका पुराना हिसाब भी बेबाक हो जायगा और अदीना तथा बीबी आइशा से बदला भी ले लिया जायगा। अरबाब की बुरी नीयत को जहाँ-तहाँ से सुनकर, बीबी आइशा को बड़ी चिन्ता हुई। लेकिन उसे यह भी मालूम था, जिस तरह एक बार उसने अरबाब को डरवाया था, उसे याद कर वह दूसरी बार उसे परेशान करने की हिम्मत नहीं करेगा। सचमुच अरबाब कमाल बीबी आइशा से डरता था, इसलिये सीधे बीबी आइशा पर प्रहार करने की बात छोड़कर उचित समय की प्रतीक्षा करके उसने धोखा फरेब का रास्ता पकड़ना पसन्द किया।

फरगाना और करातेगिन के बीच का रास्ता जाड़ों में बन्द हो गया, और आना जाना भी रुक गया। इस समय अरबाब की आशा पनपी और उसके पूरा करने का इरादा अधिक मजबूत हो गया। उधर उसी परिमाण में बीबी आइशा का भय भी बढ़ गया। अरबाब

कमाल ने सोचा कि रास्ता बन्द हो जाने से दूर-गत अदीना मुर्दा-सा है। अब जैसे भी हो, अपने मतलब को पूरा करना चाहिये। बीबी आइशा डरने लगी थी। अदीना को गये बहुत समय हो गया था। उसके आने की आशा क्षीण होती जाती थी। उसे डर था कि इच्छा या अनिच्छा से, जैसे भी हो लड़की को दुश्मनों के हाथ में पड़ना पड़ेगा। वह कैसे एक सयानी लड़की का ऐसे दीन हीन घर में सालों रखके रक्षा कर सकती थी? यहाँ हर तरह के आक्रमण और जोर जबरदस्ती की सम्भावना थी। और फिर बुढ़िया भी ७४ साल से ऊपर की हो चुकी थी। मौत किसी घडी भी सामने आकर खड़ी होने के लिये तैयार थी। अगर आज वह दुनिया से आँख मींच ले तो इसी समय गुल बीबी के ऊपर दुश्मन टूट पड़ेंगे, यह निश्चित था कि जिस बात ने बीबी आइशा को तसल्ली दी थी, वह इबाद की रुचि थी। इबाद बिल्कुल नहीं चाहता था कि गुल बीबी से अपना ब्याह करे, क्योंकि उसका दिल एक दूसरी जगह बँधा हुआ था। इबाद अपनी समवयस्क गुलन्दाम से बहुत मुहब्बत करता था। गुलन्दाम का बाप शाह नजर गाँव के बड़े लोगों में था। धन दौलत और इज्जत मरतबे में वह अरबाब कमाल से कम नहीं था। दोनों बच्चे एक-दूसरे के लँगोटिया यार थे। इबाद की माँ और गुलन्दाम की माँ भी आपस में बहुत दोस्त थीं। इसके कारण दोनों परिवारों में बहुत आवा जाही रहती था। जिस वक्त इबाद और गुलन्दाम अभी दूध पीनेवाले बच्चे थे, उसी समय दोनों के माँ-बाप उन्हें बहू और दामाद कहकर पुकारते थे। इबाद और गुलन्दाम दौड़ने और बातचीत करने लायक हुए तो वह बहू और दामाद का खेल खेलते थे और उनकी मातायें इस खेल को बड़े आनन्द के साथ देखा करती थीं। जब उनकी उम्र कुछ और बढ़ी, जो यद्यपि माँ-बाप के सामने शरमाते हुए, इस तरह का खेल नहीं खेलते थे, लेकिन एक दूसरे से मिलने का आनन्द लेते थे। धीरे-धीरे खेल और मजाक का दृढ़ प्रेम के रूप में बदलकर दोनों आशिक और माशूक हो गये। लेकिन अब

दानों के पिताओं के विचार बदल गये थे। अरबाब कमाल सोचता था कि अगर गुलन्दाम से ब्याह करेंगे, तो खर्च बहुत ज्यादा होगा, क्योंकि शाह नजर अपने को अपने समय का बड़ा आदमी समझता है, इसलिये सस्ते में अपनी लड़की का ब्याह करने के लिये राजी नहीं होगा। वह भारी मेहर (स्त्री धन) माँगेगा और भोज-समारोह में भी बड़ी रकम खर्च करने के लिये कहेगा।

यदि अरबाब कमाल गुलन्दाम की जगह गुल बीबी को बहू बना के लाये तो एक तरफ खर्च से बच जायगा और दूसरी तरफ बीबी आइशा और अदीना से बदला लेकर लोगों के बीच में अपना सिर ऊँचा करेगा। लोग कहेंगे कि 'अरबाब के पंजे से निकलना आसान नहीं है। देखा नहीं कि उसने अदीना के साथ कैसा बदला लिया? उसे बेनाम और बेनिशान करके देश से निकाल दिया और उसकी मंगेतर को अपनी कनीज (लौंडी) बना लिया!'

'मैं शाह नजर की लड़की को बहू नहीं बनाऊँगा, क्योंकि उसका सौन्दर्य मेरे लड़के के लायक नहीं है। गुल बीबी यद्यपि अनाथ है, किंतु अपने रूप-गुण के कारण वह मेरी बहू होने लायक है।' अरबाब कमाल ऐसा अपने मन में सोचता था और कितनी ही बार उसने दूसरे लोगों के सामने भी इसे कह डाला था। धीरे धीरे यह बात शाह नजर के कानों तक पहुँची। उसने अपनी बड़ी बेइज्जती समझी और बिना किसी से सलाह किये अपनी लड़की की सगाई अमान बाकी नामक एक आदमी से कर दी।

अमान बाकी की उम्र ५० साल से अधिक हो चुकी थी। वह तीन बार ब्याह कर चुका था और अब अकेले जिन्दगी बसर कर रहा था। उसकी अधिकांश औरतें मर गयी थीं, इसलिये उसे 'जनकुश' (स्त्री-मार) और 'अभागा' कहकर कोई अपनी लड़की नहीं देता था। अब जबकि शाह नजर ने स्वयं उसे अपना दामाद बनाना चाहा तो अमान बाकी ने भी उसको जेब भर के खुश कर दिया। शाह नजर ने अपने

ंस काम द्वारा मानो अरबाब से कहा, 'यदि तूने मेरी लड़की को बहू न बनाया, तो दूसरा ऐसा आदमी मिला, जिसने तुझसे तीन गुना अधिक पैसा खर्च करके मेरी और मेरी लड़की की इज्जत को ऊँचा किया।' लेकिन लड़के-लड़की की मातायें इस काम से बिल्कुल प्रसन्न न हुईं। इबाद की माँ ने अरबाब कमाल से प्रार्थना करके, गुलन्दाम को लेने की बात कही। गुलन्दाम की माँ भी शाह नजर से रो रोकर अपनी फूल-जैसी लड़की को उस ५० साला 'जनख़ुश' मरदुये के गले न बाँधने के लिये बड़ा प्रार्थना की। लेकिन इस सारे रोने धोने और मिन्नत प्रार्थना का दोनों मर्दों पर कोइ असर नहीं हुआ। जो होना था वही हुआ। तो भी इबाद और गुलन्दाम का प्रेम सम्बन्ध टूटा नहीं।

———

## बहू लाना

ल्दी ही अरबाब को अपनी मनोकामना पूरी करने का अवसर मिला। निराश और बेबस, दुखों की मारी बीबी आइशा एक हफ्ता बीमार रहकर मर गयी। इस खबर को सबसे पहिले गाँव के तमाम मुल्ला रफाकशाह ने कमाल अरबाब के पास पहुँचा दिया। मुबारकबादी देते हुए कहा—"यह बीबी आइशा के लिये गमी नहीं है, बल्कि तेरा उत्सव है। शुक्रवार बीतने के बाद गुल बीबी का निकाह कर देना चाहिये। लेकिन मेरी दक्षिणा अच्छी होनी चाहिये।"

अरबाब ने कहा—"मुल्लाजी, आप निश्चिन्त रहें, खुदा आपको खुश करेगा। दक्षिणा कोई बड़ी बात नहीं है। हम दोनों को सलामत रहना चाहिए। अब लोगों को सूचित करें। जल्दी मुर्दे को गुसुल करके और दफन करके इससे छुट्टी पायें, ताकि गुल बीबी को जल्दी अपने घर ला सकें।"

अर्थी उठाने के लिये जाने से पहिले अरबाब अपने घर में जाकर बीबी से बोला—"बीबी आइशा मर गयी। उसे दफनाने के बाद बहू को अपने घर लायेंगे। तू इबाद और बहू के लिये कुछ जरूरी पोशाक तैयार कर दे। इसी सप्ताह के भीतर निकाह पढ़ायेंगे।"

बीबी ने कहा—"दादेश, तुमको क्या हो गया है? क्या ब्याह-भाज और बहू लाना इसी तरह होता है? लोग क्या कहेंगे? मैं कभी ऐसी अनाथ, बेकस लड़की को अपनी बहू नहीं बनाऊँगी। हम ऐसी बहू चाहिये, जो हमारे योग्य हो। वह उसके पास जेवर कपड़ा भेजेंगे, आना जाना करेंगे। जो दुनिया का रीति रिवाज है, उसको पूरा करेंगे,

अपनी लालसाओं को भी पूरा करके बहू को लायेंगे। यह नहीं हो सकता कि मुर्दाखाने से एक लड़की को बाल घसीटते लाकर अपने घर में बैठा लें और लोगों से कहें कि यह हमारी बहू है। क्या इसी लालसा से मैंने तुम्हारे साथ एक बालिश्त ऊपर सिर रखा था? क्या इसी उम्मीद पर लड़के का सयाना किया था?"

जरबाब ने कुपित होकर कहा—"मेहरिया, बड़ी बातें न बना। जरबाब कमाल जो कुछ करता है, उसमें वह अरबाब कमाल है। लोग मेरा दोष नहीं दिखलायेंगे। जब तक मेरे पास धन दौलत है, तब तक मेरी सभी इज्जत करेंगे। मैं बेवकूफ नहीं हूँ। लोग मेरी निन्दा करेंगे, इस ख्याल से मैं पैसा लुटाकर बहू लाऊँ, जब कि मुफ्त में मिलनेवाली यह लड़की मौजूद है?"

"मैं कभी भी इस काम के लिये राजी नहीं हूँगी कि तुम मुर्दाखाना से एक लम्पी लुची लड़की का बहू बनाकर घर में ला बैठाओ। यह कौन-सी बात है?"

"अच्छा, तेरी ही बात रही। पहिले बहू को मुल्ला जी के घर में भेज देता हूँ। फिर मुर्दा के मरने के बाद के शुक्र के बीतने के बाद भोज-भाज और शादी-तमाशा के रीति रिवाज को पूरा करके उसे अपने घर लाऊँगा।"

"मुल्लाजी के घर भेज देने से एक अनाथ लड़की इज्जतदार कन्या नहीं बन जायगी। भिखमंगे की लड़की जहाँ कहीं भी रहे, भिखमंगे की लड़की ही रहेगी। मुल्लाजी के घर रहे, तब भी वह भिखमंगे की लड़की है और अरबाब कमाल की बहू बने, तब भी भिखमंगे की लड़की है।"

"मैंने नहीं कहा कि बुल बीबी बाय की लड़की है। मैं भी जानता हूँ कि वह भिखमंगे की लड़की है। लेकिन मेरा जो पैसा डूबा था, उसके बदले वह मुफ्त में आ रही है। तू जानती है कि अदीना ने नमक-हरामी करके मेरे पैसे को मार लिया और बीबी आइशा ने मेरी कितनी

बेइज्जती की। इस समय देव मेरी सहायता करने के लिये तैयार हैं। मैं आज जिन्दा अदीना और मुर्दा बीबी आइशा से बदला लूँगा।"

"इमाद क्या करेगा? वह मरने के लिये राजी है, लेकिन इस काम के लिये नहीं।"

"उसका राजी होना न होना कोई मतलब नहीं रखता। इमाद का इस काम में दखल देने का क्या अधिकार है? राजी हो तब भी वही न राजी हो तब भी वही। उसकी क्या मजाल है कि मेरे सोचे-समझे काम को बरबाद करे?" कहकर अरबाब घर से बाहर चला गया।

"दादेश मेरी ओर निगाह करो मेरी ओर निगाह करो!" कहती उसकी बीबी घर में बैठी रोती चाती रही।

एक बेचहार दीवारी की हवेली थी। उसके भीतर की एक कोठरी की छत गिर गयी थी। उसके पास एक दूसरी कोठरी थी, जिसकी दीवारें टेढ़ी हो गयी थीं। गली की तरफ रास्ते की ओर इस हवेली में गाँव के छोटे-बड़े इकट्ठा हुए थे। घर के भीतर एक कोने में अपने सिर को जाँघों पर रखकर दीवार के साथ एक सत्रह-अठारह साल की लड़की बैठी हुई थी। उस लड़की के रंग ढंग से मालूम होता था कि वह बड़ी सुन्दरी होगी। लेकिन अब उसके ऊपर ऐसा दुःख और आफत पड़ी थी कि पतझड़ के फूल की तरह वह बिल्कुल मुर्झायी-सी नजर आती थी। लड़की रोना चिल्लाना नहीं कर रही थी। लेकिन अपनी आँखों को जिस तरह वह कभी घर की ओर, कभी छत की ओर घुमाती थी उससे मालूम होता था कि उसके ऊपर दिल को जलाकर खाक कर देनेवाली आफत आ पड़ी है, और रोने के लिये उसके पास आँसू नहीं रह गये हैं। उसकी उस करुण मूर्ति को देखकर देखनेवाले का दिल दहल जाता था। लड़की के सामने एक ७० साला बुढ़िया बैठी थी, जो कि अपने आपसे कह रही थी, 'दुनिया नाशवान है। यह दिन हर एक आदमी के सामने आनेवाला है। आज बीबी आइशा मर गयी है, तो कल हम भी नहीं बच रहेंगे। जल्दी या देर में हम सभी इस दुनिया से चले

देंगे।' फिर उसने लड़की की ओर निगाह कर कहा—'मेरी बच्ची, अपने को सँभाल। इस मुसीबत मे अपने आपको हाथ से न जाने दे। अगर तेरा नानी मर गयी है, तो मुझे उसकी जगह कबूल कर। मैं जानती हूँ, तुझे अकेला रह जाने का डर है। लेकिन खातिर जमा रख, मैं तुझे अकेला रहने नहीं दूँगी। अगर चाहती है तो यहीं रह। मैं तेरे पास माँ बनके रहूँगी। अगर चाहती है, तो मेरे गरीबखाने में चल। वहाँ हमारे साथ जीवन बसर कर। तू जानती है कि आका शरीफ के सिवा मेरा और कोई नहीं था। मेरा वह बेटा भी पकड़कर जेल में चला गया। कब मुक्ति पायेगा, यह मालूम नहीं। मैं भी तेरी ही तरह बेकस, दुखिया हूँ। हम दोनों एक जगह रहेंगे और एक दूसरे की हमदर्दी करेंगे।"

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह लड़की गुल बीबी थी, और बुढ़िया थी शरीफ की माँ। बुढ़िया अपने बेटे को देखने के लिये हर हफ्ता भिखमगी करके एक कटोरी घी जमा करती थी। इसी भिखमगी के जमाने में वह बीबी आइशा के घर आते जाते उससे परिचित हो गयी थी। जब शरीफ की माँ अपने दुर्भाग्य और शरीफ की गिरफ्तारी की बात कहकर, बीबी आइशा को सुनाते हुए अपने दिल के दुख का हलका करती, तो बीबी आइशा भी अदीना की राम कहानी और तकलीफों को कहकर उसके साथ हमदर्दी जाहिर करती। दोनों बुढ़िया यद्यपि हाल ही में एक दूसरे से परिचित हुई थीं, लेकिन उनके सिर पर पड़े दुख के पहाड़ ने दोनों के बीच पुरानी मित्रता स्थापित करके एक दूसरे के नजदीक कर दिया था। शरीफ की माँ का घर काफी दूर था, लेकिन शायद ही कोई हफ्ता जाता हो, जब कि वह बीबी आइशा के पास न आती हो, वहाँ न सोती हो।

जब बीबी आइशा बीमार पड़ी, तब से उसके मरने के समय तक शरीफ की माँ उस जगह से नहीं हिली। बुढ़िया के मरने के बाद उसकी लाश को उसने बाँधा, पानी और कफन दिया, उसके लिये शोक

मनाया। जब बीबी आइशा की लाश कब्रिस्तान में चली गयी और दफनाने की क्रिया खतम हो गयी, तब वह गुल बीबी के पास बैठी हुई उसे तसल्ली दे रही थी, और उसे अपने साथ ले जाने तथा सहायता करने की बात कर रही थी। कोठरी में पड़ोस की दो-तीन और भी स्त्रियाँ थीं और बाहर गाँव के लोग जमा थे। बीबी आइशा की लाश को ले जाते समय स्त्रियों ने अपने मुर्दों को याद कर करके कुछ रोना धोना किया, फिर अपनी बात में लग गयीं। जिस वक्त गुल बीबी दुःख के समुद्र में डूब रही थी, शरीफ की माँ उसे ढाढस बँधाना चाहती थी। लेकिन वहाँ बैठी दूसरी औरतों में से एक अपने शौहर की शिकायत कर रही थी, दूसरी अपने दामाद की नालायकी बतला रही थी, तीसरी अपनी लड़की की बदकिस्मती की कहानी कह रही थी। बीबी आइशा और गुल बीबी से संबंध रखनेवाली बात कहते हुए एक औरत ने कहा—"मुझे मालूम होता था कि बीबी आइशा की लाश रास्ते में पड़ी रहेगी। लेकिन अब देखा कि उसके जनाजे (अर्थी) में बायों की औरतों के जनाजे से भी अधिक लोग जमा हुए, अधिक लोगों ने उसके ताबूत पर हाथ लगाया।"

दूसरी स्त्री ने उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा—"गली की ओर देखो। बड़े-छोटे सभी इकट्ठा हो फातेहा पढ़ रहे हैं। आरिफ बायँ की औरत जिस दिन मरी थी, उस दिन इससे आधे भी आदमी नहीं जमा हुए थे।"

तीसरी औरत ने कहा—"यह सब अरबाब कमाल के कारण हो रहा है।"

एक स्त्री ने आश्चर्य करते हुए पूछा—"बीबी आइशा के मुर्दे का अरबाब कमाल से क्या संबंध है?"

"बीबी, तुम कैसी हो? दुनिया का क्या कुछ भी पता नहीं है तुम्हें? न जाने कब से अरबाब ने गुल बीबी की सगाई अपने बेटे से कर दी है। दो-तीन दिन में भोज और निकाह भी हो जायगा।"

"कब सगाई की थी ? अभी तक तो किसी ने इसके बारे में सुना नहीं।'

"उसी रोज जिस दिन बीबी आइशा मरी।"

"मुर्दे पे भोज भाज की बात कर रही है क्या ?"

"चाहे मुर्दा का भोज हो, चाहे कुछ भी हो। जो होना था हो गया।"

जब मर्द अपने-अपने घर चले गये, तो अरबाब कमाल और मुल्ला इमाम घर के दरवाजे पर आये। इमाम ने स्त्रियों से कहा—"रहमत बीबी, आइशा को दफन करके हम लोग आ गये। तुम भी अपने-अपने घर जाओ। मेरी बेटी गुल बीबी आ मेरे साथ, मेरे घर चल। वहाँ अपनी माँ के साथ रहना।"

स्त्रियाँ अपनी चादरों को सिर पर रखकर चली गयीं और घर में गुल बीबी तथा शरीफ की माँ भर रह गयीं। कुछ क्षण बाद मुल्ला ने फिर कहा—"जल्दी आ, बेटी। शाम नजदीक आ गयी है। मैं तुझे अपने घर में पहुँचाकर मसजिद जाऊँगा।"

गुल बीबी चुप।

"सोती है, या जागती ? बेवक्त हो रहा है। तुझे जल्दी करने के लिये कह रहा हूँ।" मुल्ला ने कहा।

"नानी के मरने के बाद पहिली रात यहाँ बिना बिताये कहाँ जायगी ?" शरीफ की माँ ने कहा—"आज रात को यहाँ चिराग जला कर रोती हुई शोक मनायेगी।"

'एक छोटी उम्र की लड़की को जिस घर में आदमी मरा हो, उसमे रहना ठीक नहीं। कैसे सोयगी यहाँ ! चिराग जलाया है तो अपने आप जलेगा। उसके लिये यहाँ गुल बीबी को सुलाने की ज़रूरत नहीं।"

"गुल बीबी अकेली नहीं है। यद्यपि बीबी आइशा मर गयी है, लेकिन मैं उसकी जगह गुल बीबी की देख भाल करूँगी।" शरीफ को माँ ने कहा।

अरबाब कमाल अब तक चुपचाप खड़ा था। लेकिन अब बेक़ाबू हो, उसने एकदम चिल्लाकर कहा—"यह नयी बीबी आइशा कहाँ से आ टपकी? हम तो उसे दफना आये, फिर कौन-सी कब्र से उठकर चली आयी? तू कौन है? कहाँ से तू बीबी आइशा की नायब और गुल बीबी की मालकिन बनकर आ गयी? अभी भाग जा, नहीं तो तेरी खाल खींच लूँगा।" फिर मुल्ला इमाम की ओर निगाह करके कहा—"आप जानते हैं कि कौन है? मैं तो इसे नहीं पहिचानता।"

मुल्ला ने दरवाज़े से भीतर मुँह करके नजर डाली और वहाँ बुढ़िया को देखकर अरबाब से कहा—"यह वही औरत है, जो रोज गलियों में भिखमगी करती फिरती है। शायद गुल बीबी को भी बुरे रास्ते पर ले जाने के लिये आई है।" फिर घर की ओर निगाह करके उसने कहा—"ओ बुढ़िया हरजाई! अभी इस जगह से निकल, जिस रास्ते से आयी, उसी रास्ते चली जा। गुल बीबी से तेरा कोई संबंध नहीं है। धर्म शास्त्र के अनुसार गली में फिरनेवाली औरतों के लिये अपरिचित मर्द की तरह औरतों और लड़कियों की देख भाल करना हराम है। उठ, भाग जा! भागने को कह रहा हूँ। भाग!"

मुल्ला इमाम ने अपनी आखिरी बात कहते हुए, हाथ के डंडे को घर की तरफ करके मानो कहा, 'अगर जल्दी नहीं हटती, तो यह तेरे सिर पर पड़ना चाहता है!'

---

## संकट

●

त हो गयी थी। चारों ओर अंधकार था, इतना अंधकार कि यदि धरती की ओर निगाह करें, तो अपने पैरों को भी नहीं देख सकते, आसमान की ओर अगर नजर करें, तो जगह जगह बिखरे सितारों के सिवा वह अधिकतर बादल से ढँका मालूम होता। कोई चीज आँखों के सामने नहीं दिखलायी पड़ती। संसार मौन था। जब-तब वर्षा की बूँदों की टपटपाहट की आवाज के सिवा इस मौन को भंग करनेवाली कोई चीज नहीं थी। इसी समय अरबाब कमाल गली से आया। आज रात का नमाज पढ़ने के बाद वह मुल्ला इमाम के साथ चख-चख करता बैठा हुआ था। उसे अधिक समय हो जाने का पता नहीं लगा, नहीं तो हर रात को अबसे दो घड़ी पहिले ही वह घर लौट आया करता था। जब अरबाब अपनी हवेली के भीतर आया, तो उसकी निगाह सबसे पहिले इबाद की कोठरी की ओर गयी। वह धीरे धीरे वहाँ पहुँचकर, किवाड़ की दराज से भीतर झाँकने लगा। वहाँ एक कोने में लकड़ी के दीवट के ऊपर चिराग टिमटिमा रहा था। शायद तेल कम था, इसलिये रोशनी भी कम थी, जिसकी वजह से भीतर अच्छी तरह दिखायी नहीं पड़ता था। अरबाब ने दराज से भीतर चारों ओर नजर दौड़ायी। गुल बीबी दीवार के पास दिखाई पड़ी। वह उसी तरह वहाँ बैठी थी, जैसे बीबी आइशा के मरने के दिन अपनी कोठरी में देखी गयी थी। फर्क इतना ही था कि आज उस दिन की तरह शोकाकुल और चकित हो, अपनी दृष्टि को नीचे ऊपर नहीं डाल रही थी, बल्कि बिल्कुल शान्त हो, सिर को जाँघ पर रख के मानो सो रही थी। उसकी आँखें मुँदी हुई थीं, लेकिन इसमें

विश्वास नहीं कि वह सो रही थी। अत्यन्त दुख, भारी रंज और अत्य-धिक निराशा ने उसको ऐसी दशा में पहुँचा दिया था कि देखनेवाला समझता कि वह सो रही है।

अरबाब कमाल ने इधर-उधर बहुत नजर डाली, लेकिन इबाद को वहाँ नहीं देखा। वहाँ से दूसरी ओर जा उसने कपास ओटने में लगी अपनी बीबी से पूछा—"रोज ही मैं तुझे ओटने में लगी देखता हूँ। इतनी रूई क्या करेगी?"

"भोज भाज की कमी को पूरा करने के लिये काम करती हूँ। हमारे घर बहू देखने के लिये जब कोई आता है तो मैं शर्म से मर जाती हूँ। जमीन नहीं फटती कि उसमें समा जाऊँ। नयी बहू है, नया घर है, लेकिन एक भी नया गद्दा या रजाई नहीं है, एक भी नया जामा या कुरता नहीं है। घर की दीवार पर न एक भी सुजनी है, न बिछाने के लिये बिछौना। अगर तुम मेरी बात को माने होते, तो यह सब चीजें बहू के साथ आतीं। अब मैं ही देर तक मेहनत कर रही हूँ कि कुछ चीजों को तैयार कर लूँ।"

अरबाब ने कहा—'तू कभी अपने व्यंग-बाण को छोड़ बिना नहीं रहती। जहाँ तेरा मुँह खुला कि तेरी बातें बाण की तरह कलेजे को बेंधने लगीं। तू क्या समझती है कि यह बहू हम मुफ्त में मिली है? नहीं, यह बात नहीं है। अदीना के बाप की लाश का काम काज किया, खुद उसको तीन साल तक पाला-पोसा, हाकिमों को रिश्वत देकर उसे जबरदस्ती काम पर भेजे जाने से बचाया। इन सब नेकियों के बदले उसने मेरा एक भेड़ को बरबाद किया, मेरी नौकरी से भाग गया। अंत में भी एक भेंड़ और कितना खर्च करके मुझे जान बचानी पड़ी। इधर देखती ही है कि बीबी आइशा के मुर्दे का भी क्रिया-कर्म करना पड़ा। इन सारे खर्चों और तकलीफों के बाद वह लड़की हमारे घर बहू होकर आयी है। तू सारी बातों का ख्याल नहीं करती और जब तक जान-म-जान है, तब तक जहान चलाती जा रही है। इन बातों को छोड़।

निकाह किये चालीस रोज हो गये, लेकिन अभी तक यह मालूम नहीं कि ये दोनों एक जगह सोये भी या नहीं। यदि नहीं तो दोष बहू का है या इबाद का ?"

बीबी ने कहा—"दोष न बहू का है न इबाद का। दोष केवल तुम्हारा है, जो कि एक पागल भिखमंगे की लड़की को बहू बना के ले आये। ऐसी औरत को मैं स्वीकार नहीं करूँगी। बहू है, लेकिन जिस दिन से आयी उस दिन से आज तक न मुझसे, न इबाद से और न बहू देखनेवाली किसी औरत से मुँह खोलकर एक भी बात कही! कितना भी पूछती हूँ जवाब ही नहीं देती। जवाब तो अलग, हमारी तरफ निगाह भी नहीं करती। अगर बहुत पूछ-ताँछ कर तंग करते हैं तो मेरी तरफ एक बार तीखी निगाह से देखकर आँखों को धरती में गड़ा देती है। अब तक उसे किसी ने खाते खाते नहीं देखा। जब देखती हूँ, तब अपने सिर को पैरों पर रखे बैठी रहती है।"

अरबाब ने कहा—"तू हर काम में मेरे ऊपर दोष डालती है। यह तेरा दोष है कि अपने बेटे को शिक्षा नहीं देती। यह तेरा दोष है कि बहू का अपने बेटे के साथ मेल नहीं कराती, बल्कि आजीवन इन दोनों के बीच में बैर और फूट डालना चाहती है और उसके बाद सारा दोष मेरे सिर मढ़ना चाहती है। मैं इन दोनों को नजदीक लाने पर बहुत सोचता रहा हूँ, लेकिन अब तक मैंने कुछ नहीं किया। सोचा था कि तू खुद सब बात ठीक कर देगी। अब विश्वास हो गया कि तू कोई काम नहीं करेगी। आज ही रात से इस काम के करने का कोई कारण ढूढूँगा। मैंने मुल्ला इमाम से मिलकर उसे दुआ पढ़ने के लिये कह दिया है। देख मैं आज रात किस तरह काम ठीक करता हूँ।"

इसी वक्त इबाद के पैर की आहट मालूम हुई। अरबाब ने उसको पुकारते हुए कहा—"इबाद !"

"लब्बे (जी)!"

'रात को इस वक्त तक तू कहाँ था, कुत्ते ?'

'कहीं नहीं', कहते इबाद बाप के सामने आया।

'कैसे कहीं नहीं? अभी तो बाहर से आया है।'

'कहीं नहीं। कूचे में लड़कों के साथ बात करता बैठा था।'

'नये घरवाले बने आदमी को ऐसे नहीं रहना चाहिये। क्यों घर नहीं बैठता? क्यों अपनी बीबी के दिल को अपने हाथ में नहीं लेता? तू समझता है कि इसे कबूल नहीं करेगा, तो मैं दूसरी औरत लाकर तुझे दूँगा। इस कच्चे ख्याल को अपने दिमाग से निकाल दे। इसी को अपनी स्त्री बना, तो बना। अगर यह नहीं करेगा तो तुम दोनों को जिन्दा ही कब्र में भेज दूँगा। मुझे अरबाब कमाल कहते हैं। बड़ी मुश्किल से यह नाम कमाया है। क्या तू इसे नहीं जानता?'

अरबाब कमाल ने बातचीत को ऐसी हालत में पहुँचा दिया था कि यदि इबाद के मुँह से एक भी उल्टी सीधी बात निकली तो मारकर उसका सिर फोड़ देता। इबाद भी अपने बाप की आदत को जानता था, इसीलिये बहाना करते हुए बोला—'मैं तो चाहता हूँ, लेकिन वह नहीं चाहती। इसमें मेरा दोष क्या है?'

'मैं सब जानता हूँ। तू पहिले ही से उसे नहीं चाहता था। अब जो होना था हो गया, तो सारा दोष उसके मत्थे मढ़ना चाहता है। अगर तेरा दिल होता तो एक मुट्ठी बरस भर की एक स्त्री से क्या हो सकता था?'

'आप ठीक कहते हैं। पहिले नहीं चाहता था, लेकिन जब हर तरह से आपको उसके लिये उतारू देखा तो मैंने भी स्वीकार किया। करूँ क्या जब कभी उसके पास जाता हूँ, तो भागती है। अगर हाथ बढ़ाकर पकड़ना चाहता हूँ, तो बड़ा असभ्य बर्ताव करती है।' कहकर इबाद ने रोने जैसा मुँह बना लिया।

अरबाब ने कहा—'जा अपने कमरे में। एक हफ्ता और तुझे समय देता हूँ। अगर इतने में ठीक कर लिया तो बहुत अच्छा, नहीं तो क्या करना चाहिये, इसे मैं खुद जानता हूँ।'

इबाद अपने कमरे में चला गया। उसे पूरा विश्वास था कि उसका बाप उसके पीछे-पीछे जरूर आयेगा, इसलिये रोज की तरह उसने दीये को बुझाया नहीं और उस दिन जो कि निकाह की ४०वीं रात थी, पहिली बार गुल बीबी के पास जाकर उसका हाथ पकड़ना चाहा। गुल बीबी चालीस रोज से अपनी जगह से हिली नहीं थी। वह उठकर पीठ को दीवार से लगा के खड़ी हो गया। इबाद ने नजदीक जाकर अपने हाथ को उसकी गर्दन पर रखना चाहा। गुल बीबी ने अपने दोनों हाथों को उसकी छाती पर लगा ढकेल दिया। इबाद पीठ के बल जमीन पर जा गिरा। गुल बीबी बहुत कमजोर थी। उसके पास इतनी ताकत कहाँ से आयी कि इबाद जैसे एक जवान को उस तरह धक्का दे सकती? वस्तुत अपने बाप को दिखलाने के लिये इबाद ने खुद ही यह सारा अभिनय किया था।

अबबाब कमाल किवाड़ के दरवाजे से झाँक रहा था। जब उसने इबाद को जमीन पर पड़ते देखा, तो रोक नहीं सका। कमरे के भीतर घुस, गुल बीबी से बोला—'ओ बेहया लड़की, यह कैसी बेशरमी की बात है जो कि अपने शौहर के साथ तूने किया?'

इस घर म आये चालीस रोज हो गये थे लेकिन आज तक गुल बीबी की आवाज को किसी ने नहीं सुना। आज उसने शेर की तरह दहाड़ते हुए कहा—'बेहया तू! जालिम तू! बेशरम तू!'

'अब इस बेहयाइ को देख!' कहते हुए, अबबाब गुल बीबी की ओर दौड़ा और उसे अपने पैरों के नीचे दबाकर उसके दोनों हाथों को पकड़ना चाहा। गुल बीबी ने भी अबबाब की बेदमजनूँ की शाखाओं की तरह सारे छाती को ढाँके, लम्बी सफेद दाढ़ी को दोनों हाथों में लपेट कर पकड़ लिया। जब अबबाब गुल बीबी के हाथों को पकड़ जमीन पर पटककर मारने लगा, तो गुल बीबी के जोर से गिरने के कारण अबबाब की एक मुट्ठी दाढ़ी उसके हाथ म उखड़ आयी। अबबाब पहिले डराने धमकाने पर ही उतारू था, लेकिन दाढ़ी उखड़

जाने से उसका गुस्सा बहुत बढ़ गया और उसने जमीन पर पड़ी गुल बीबी का लात और हाथ से मारना शुरू किया।

इस वक्त अरबाब के हल्ले-गुल्ले को सुनकर उसकी बीबी ने दौड़े-दौड़े घर म आकर देखा कि उसका शौहर गुल बीबी का मार रहा है और बेटा मूर्ति की तरह दीवार का सहारा लिये खड़ा है। उसने अपने बेटे से कहा—'तू कैसा मर्द है? *इस जालिम के हाथ से अपनी औरत* को छुड़ाता क्यों नहीं?'

अरबाब अपनी बीबी के मुँह मं अपने लिये जालिम' का नाम सुन कर गुल बीबी का वहीं छोड़ सीधे अपनी बीबी की तरफ लपका और उसे उठाकर जमीन पर पटक दिया। उसे भी लात-मुक्के से खूब मारा, फिर उसे वहाँ छोड़ 'इन सारी खराबियों की जड़ तू है' कहते हुए अपने बेटे की ओर दौड़, उसे भी पीटना चाहा। लेकिन इबाद ने इसके लिये मौका नहीं दिया और घर से निकल बाहर की ओर भागा। अरबाब भी उसका पीछा करने के लिये बाहर निकला लेकिन उलझकर गिर पड़ा। घर म लौटकर जले हुए कुत्ते की तरह वह अपनी दाढ़ी क लिये रोता रहा। गुल बीबी बेचारी ने डर के मारे अरबाब की दाढी पकड़ ली थी। जमीन पर गिराइ जाकर अरबाब के हाथ से उसने उतनी मार खायी। वह वहाँ गिरी तो फिर अपनी जगह से नहीं उठी।

इस घटना के बाद बहुत दिनों तक किसी ने अरबाब का कूचे म नहीं देखा। ऊँची दाढ़ी की शरम मे वह बीमार होने का बहाना कर घर से बाहर नहीं निकला। कुछ और समय बीता। दाढ़ी थोड़ी-थोड़ी जम आयी थी। इसी वक्त उसकी बहू गुल बीबी मर गयी। जनाजा और सोगवारी के लिये अरबाब को बाहर आने के लिये मजबूर होना पड़ा। जो कोई भी फातेहा पढ़ने के लिये आता और अरबाब से कुशल-मंगल पूछता, तो अरबाब जवाब में कहता—'खुदा ने मुझे दूसरा जन्म दिया है। बीमारी बहुत सख्त थी। मुँह के बाल सब झड़ गये, और अब फिर से नये जम रहे हैं। देखिये, अभी भी बीमारी का असर मेरी दाढ़ी पर है।'

# चोर

•

ल बीबी इबाद से जितनी घृणा करती थी, उतना ही इबाद भी उसे पसन्द नहीं करता था। वह गुल्दाम के पीछे पागल हो रहा था। वह उसके पीछे इतना पागल हो गया था कि सिर्फ गुल बीबी की ही परवाह नहीं करता था, बल्कि अपने माँ-बाप, खानदान, यहाँ तक कि अपनी इज्जत आबरू को भी भूल गया था। गुल्दाम भी एक घड़ी अगर इबाद को न देख पाती, तो विह्वल हो जाती। शादी हो जाने के बाद भी दोनों प्रेमी कोई-न-कोइ उपाय निकालकर एक दूसरे से मिलते और अपना दुख सुख बयान करते। जब इबाद का गुल बीबी के साथ निकाह हो गया और गुल्न्दाम भी अमान बाकी के घर म बद हो गइ तो इबाद की बेकली और बढ़ गइ। वह पागल की तरह हमेशा अमान बाकी के घर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता फिरता और जैसे ही मौका मिलता, पीछे की दीवार फाँद, भातर घुस पशुशाला या रसोई घर के कोने म गुल्दाम से मिलता। अमान बाकी को, इबाद को अपने घर के इर्द गिर्द बहुत घूमते देखकर शुबहा हुआ। वह गुल्न्दाम के बारे म भी बुरा ख्याल करने लगा। असलियत जानने के लिये एक दिन वह गुल्दाम से बोला—'आज रात को मैं अपने एक दोस्त के घर मेहमानी के लिये जा रहा हूँ। रास्ता लम्बा और रात अँधेरी है, इसलिये वहीं सो जाऊँगा। अगर चाहती है तो तू अपने बाप के घर चली जा, या अपनी माँ को बुलाकर यहीं सो जा।'

गुल्न्दाम ने कहा—"अच्छी बात, ऐसा ही करेंगे।"

अमान बाकी मानो मेहमानी के लिये जा रहा हो, शाम होने के समय अपने कपड़ को ठीक करके बाहर गया। एक घटा गली में जहाँ-

तहाँ घूमकर, लौटकर वह बिना पैर की आवाज किये, दीवार फाँद, हवेली के भीतर चला आया। और वह असली बात जानने के ख्याल से भूसा घर के कोने में छिपकर बैठ रहा।

सप्तमी का चाँद उगने को आया। दीवारों के नीचे की जमीन दरख्तों की छाया से काली हो गयी थी, जिसमें वहाँ आने जाने वालों को पहिचाना नहीं जा सकता था। जब चाँद चारों ओर अपने प्रकाश का फैला चुका, तो गुलन्दाम बगीचे की ओर जा, घूमने लगी। फिर एक छायादार अँधेरी जगह में आकर खड़ी हो गयी। यही जगह थी, जहाँ शौहर के घर न रहने पर दोस्त के आने के लिये उसने संकेत किया था।

गुलन्दाम को बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। कोई बादाम की गुठली-सी चीज आकर, उसके पैरों पर गिरी। उसने भी अपने हाथ की दो ककड़ियों में से एक उसी ओर फेंक दी। जरा देर के बाद दीवार के ऊपर एक काली काली चीज प्रकट हुई। गुलन्दाम ने दूसरे ककड़ी भी उसी तरफ फेंकी। गुलन्दाम का दिल हर्ष और आशंका से काँपने लगा। वह लौटकर, दरवाजे को आधा खोलकर, कमरे में चली गयी। दीवार के ऊपर की काली छाया भी नीचे उतर कर, धीरे धीरे दरवाजे की ओर बढ़ी। उसके भीतर चले जाने पर दरवाजा बन्द हो गया। अमान बाकी भी भूसा घर की खिड़की से एक एक करके सभी बातें देखता रहा। गुलन्दाम का इस बात का कुछ पता नहीं था। अमान बाकी शिकार का हाथ से निकल जाने देना नहीं चाहता था। वह वहाँ से तेजी से आगे बढ़कर घर के भीतर घुस आया। घर में अँधेरा था। शिकार कौन से कोने में है, इसका उसे पता नहीं लग सकता था। असावधानी के कारण वह नाकामयाब नहीं होना चाहता था। शिकार तो घर के भीतर जरूर था, लेकिन डर था, दरवाजे से कहीं बाहर न निकल भागे। उसने बड़ी सावधानी से अंदाज लेना शुरू किया। उसे घर के एक कोने में दो आदमियों के साँस लेने

की आवाज आती मालूम पड़ी। अमान बाकी ने भागने न देने के लिये, जाकर दरवाजे को बन्द कर दिया। हाथ से टटोलकर उसने दियासलाई पाकर उसे जलाया। रोशनी मे अमान बाकी की आँखें दिये की तरह चमक उठीं। प्रकाश मे अपने शिकार को उसने देख लिया। फिर वह चूहे पर बिल्ली की तरह टूट पड़ा। शिकार तो हाथ में आया, लेकिन शिकार एक २५ साला मजबूत जवान था, जबकि शिकारी ५० साल का कमजोर बूढ़ा था। शिकार ने साँड की तरह अमान बाकी को उठा कर जमीन पर दे पटका और खुद दरवाजे से निकलकर बाहर हो गया। जिस वक्त अमान बाकी की जवान के साथ हाथापाई हो रही थी, उसी समय गुलन्दाम भी घर से भागकर बाहर हो गई। वह अपने मुँह को नोच, बालों को बिखरा, अपने माँ बाप के घर चली गयी। और उसने उससे जाकर कहा—"चोर ने मेरे पति को मार डाला। करीब था कि वह मुझे भी मार डालता, किंतु मैं भाग निकली।"

अमान बाकी बड़ी मुश्किल म पड़ा हुआ था। उसकी समझ म नहीं आता था कि कहाँ जाय क्या करे, किससे दिल की बात कहे। वह किससे कहता कि 'मेरी औरत ने मुझसे विश्वासघात किया है।' हाँ, यदि दुश्मन हाथ आ गया होता, तो जैसा कि रिवाज है उसे अपनी बीबी के साथ मारकर, अपनी बदनामी को दूर करते हुए, इस बात को कह सकता था। लेकिन वह भी नहीं हो सका। अब क्या करना चाहिये? इस वक्त जहर के घूँट को पीकर, चुप रहना भी ठीक नहीं था। औरत को छोड़कर इन सारे रंज और तकलीफ को दूर करना भी मुश्किल था। औरत को कबूल किया, ऐसा इमाम के पूछने पर, "कबूल किया" कहकर, उसे हलाल माल बनाकर, उसने रखा था। अब उसपर एक चोर दस्तन्दाजी कर रहा था। उससे बदला लेने की जरूरत था। यह सब सोचते हुए, अमान बाकी के दिल में चोर का शब्द आया, जिस से उसको बड़ी मदद मिली। उसने समझा कि रास्ता निकल आया, वह अपनी चोट की जगह को हाथ से सहलाते उठकर कोठरी से

बाहर आया और बड़ी मुश्किल से छत पर पहुँचकर, जितने जोर से बोल सकता था, उतने जोर से चिल्ला उठा—"चोर को भागने न दें!"

अरबाब कमाल दाढी नुची होने से घर बाहर नहीं आना चाहता था और शाह नज़र भी अपनी लड़की की शिकायत के कारण दामाद से प्रसन्न नहीं था। इन दोनों को छोड़कर गाँव के छोटे-बड़े "क्या बात, क्या बात" कहते, अमान बाक़ी की हवेली के सामने जमा हो गये। अमाम बाक़ी कोठे पर से नीचे उतरकर, लोगों के सामने आ के बोला—"उसे पकड़ा नहीं?"

"किसको?" गाँव के एक आदमी ने कहा।

"चोर को, इबाद को।"

"कौन-से इबाद को?"

"अरबाब कमाल के पुत्र को।"

"अरबाब कमाल का पुत्र चोर है? हमें विश्वास नहीं।"

"मैं भी विश्वास नहीं करता था", अमान बाक़ी ने कहा—"लेकिन जब खुद अपनी आँखों से देखा, तो विश्वास करने के लिये मजबूर हुआ। बात यों है। रात को मेरी स्त्री अपने बाप के घर गयी थी। मैं अकेला सोया था। घर का दरवाजा धीरे-धीरे खुला और कोई आदमी मेरे घर के भीतर घुस आया। वह इधर-उधर से चीजों को जमा करने लगा। मैंने उठकर दियासलाई बाल, चिराग जलाकर देखा कि इबाद है। दुश्मन को पकड़ना चाहा, लेकिन उसने मुझे उठाकर जमीन पर पटक दिया। और खुद बाहर निकल गया। यही कारण था, जो मैंने कोठे पर चढ़कर पुकार की। मुझे विश्वास था कि लोग उसे पकड़ लेंगे, लेकिन यह नहीं हुआ। शिकार हाथ से निकल गया। अब शहर जाऊँगा, तो वहाँ हाकिम के पास दरख्वास्त दूँगा, और यसावुल को ले आकर, उसे बन्दी कर शहर पहुँच, मीरशब के बेतों की ज़बान से उससे बातचीत करूँगा।"

"अमान बाक़ी, आज रात को रह जा। जो कुछ करना हो, कल करना।"—कहते हुए लोगों ने मना किया। लेकिन उसने एक न सुनी और उसी समय निकलकर शहर की ओर चला गया।

यद्यपि कुछ सीधे-सादे लोगों ने अमान बाकी के झूठ के ताने बाने पर विश्वास कर लिया, किंतु अधिकाश तजर्बेकारों को मालूम हो गया कि यह चोर कौन था। शाह नजर ने भी भागकर अपने घर आ लड़की से चोर की बात सुनी, तो उसे विश्वास हो गया कि सचमुच ही यह चोर आम नहीं हो सकता था। लेकिन अपने लाभ का ख्याल करके उसने इस भेद को खोलना पसन्द नहीं किया।

शरीफ करातेगिन के बन्दीखाने में था, जब कि एक दिन एक २४–२५ साला जवान जेल के भीतर लाया गया। जब नये मेहमान ने आकर बन्दियों के गले में जेल ( जजीर ) और पैरों में बेड़ी देखी, तथा इस कब्र जैसी छोटी, तग और अँधेरी कोठरी म तक्लीफें देखीं, तो डर के मारे रोने लगा। बोला—"तुमहत लगाकर नाहक ही मुझ गिरफ्तार किया गया।"

उस समय एक बन्दी ने उससे पूछा—"तू कहाँ का रहनेवाला है और किसका लड़का है?"

"फ्लाँ गाँव का रहनेवाला तथा अरबाब कमाल का पुत्र हूँ।"

"तेरा बाप जिन्दा है?"

"हाँ।"

"माल और मिलकियत उसके पास है?"

"हाँ, मेड़ों का रामा ( झुड ) भी है, खेती का काम भी है, घर और जायदाद भी है। मेरे पिता प्रतिष्ठित तथा धनी आदमी हैं और गाँव के दो-तीन बड़े लोगों में गिने जाते हैं।"

"अगर ऐसा है तो क्यों डरता है? जेलखाने में सदा रहना, जेल और बेड़ी पहिनना, मीर गजब के बेतों की मार से जान देना, यह सब हमारे जैसे गरीब, बेकारों के लिये है। तू चाहे झूठी तोहमत के

कारण पकड़ा गया हो या सच्ची, जल्दी ही तुझे छुट्टी मिल जायगी और जितने दिनों यहाँ रहेगा इज्जत और प्रतिष्ठा के साथ एक मेहमान की तरह दिन गुजारेगा। जब तेरा पिता धनी और पैसेवाला है तो हाकिम से लेकर कैदखाने के सिपाही तक सभी तेरी नाजबरदारी करेंगे, अगर तुझे छोड़ किसी दूसरे को बन्दीखाना में लाये होते और उसके बाप से पैसा मिलना सम्भव न होता तो दूसरी बात थी। तुझे ऐसे ही यहाँ नहीं लाये हैं। तेरे आने से सभी सरकारी लोगों की रोटी पर घी पड़गी, इसीलिये तुझे यहाँ लाये हैं। जिस वक्त उनका काम ठीक हो जायगा, तुझे छुट्टी दे देंगे। अगर हमारे या हमारे बापों के पास चार पैसा होता, तो हम इस हालत में न पड़े रहते।

जवान ने नये आये बन्दी को कुछ तसल्ली देनी चाही थी, लेकिन जैसे ही बाहर से पैर की आहट सुनायी दी, वह डर के मारे काँपने लगा। ताला और किवाड़ खोलने की आवाज जब सुनी, तो जान पड़ा कि भय के मारे उसके प्राण निकले जा रहे हैं। इसलिये उसने अपने को बन्दियों के पीछे छिपा लिया, लेकिन भीतर आनेवाला था जेलखाने का सिपाही। एक हाथ में रोटी और दूसरे में एक चायनिक में चाय लिये हुए पास आकर उसने बन्दियों से पूछा—"बाय बच्चा कहाँ है?"

"कौन सा बाय-बच्चा?" एक बन्दी ने पूछा।

सिपाही—"अरबाब रमाद का पुत्र इबाद।"

इबाद ने सिपाही के हाथ में जब चाय और रोटी देखी, तो प्रसन्न हो बिना भय के अपनी जगह खड़ा होकर बोला—"मैं ही इबाद हूँ। क्या कहते हो?"

"कुछ नहीं। तुम्हारे लिये चाय और रोटी लाया हूँ। खुदा चाहेगा, तो जल्दी ही छूट जाओगे। लेकिन उस वक्त मेरी खिदमत को भूलना नहीं।" फिर पास जाकर इबाद के कान में बोला—"रोटी और चाय यसावुल्बाशी ने भेजी है। उन्होंने कहा है, 'जिस वक्त बाप देखने आये, अगर हमारी दोस्ती चाहते हो तो उससे पैसा खरच करने में

कजूसी न करने के लिये कहना, नहीं तो वही हालत होगी जो कि यहाँ दूसरे बन्दियों की देख रहे हो।"

इस बातचीत से शरीफ को मालूम हो गया कि यह उसी अरनाज कमाल का बेटा है, जिसने उसकी माँ को बीबी आइशा के घर से "हरजाई औरत" कहकर भगा दिया और रोती चिल्लाती गुल बीबी को पकड़ ले गया। गुल बीबी की हालत जानने के लिये ही शरीफ ने इबाद के साथ नजदीकी सम्बन्ध स्थापित करना चाहा और कुछ दिन जो इबाद ने जेलखाने में काटे, उसमें उसने सारी बातें जान लीं।

---

## बेहोशी

अदीना ने समाचारखाने में जब अपने परिवार की बात शरीफ से पूछी, तो इस भय से कि अदीना की हालत कहीं बुरी न हो जाये, सब कुछ जानते हुए भी शरीफ ने उसे बतलाना नहीं चाहा। अपनी रामकहानी सुनाने के बाद जब उसे दुखी, किन्तु कुछ धीरज धरे देखा और फिर आगे की बात उसने पूछी तो शरीफ ने सक्षेप मे सारी बात कह सुनायी। शरीफ अपनी कहानी अदीना को सुनाते समय हर थोड़ी थोड़ी देर पर उसकी हालत को ध्यान से देखता और उसे पहिले से भी ज्यादा शान्त देख फिर आगे की बात उसने पूछी तो शरीफ ने सक्षेप में सारी बात कह सुनायी। जब कहानी खत्म हो गयी, तो उसने देखा कि अदीना सो गया है। उसने समझ लिया कि इस कथा का उसके ऊपर कोइ असर नहीं हुआ। इसी बीच में शाह मिर्जा पुलाव ओर शोरबा लेकर आया और साथ खाना खिलाने के लिये चाहा कि अदीना को जगा दे। उसने बहुत कोशिश की, लेकिन अदीना नहीं जगा। मालूम हुआ कि वह बेहोश हो गया है। अब शरीफ ने समझा कि यह सारी शान्ति और गम्भीरता उस घटना को महत्व न देने के कारण नहीं, बल्कि कमजोरी के कारण थी।

शाह मिर्जा ने अदीना के हाथ-पैर मले और उसके मुँह पर पानी का छींटा दिया। तब अदीना ने होश में आकर, अपनी आँखों को खोला। लेकिन खाने की बात तो अलग, उसमें हिलने डोलने की भी

शक्ति नहीं रह गयी थी। केवल अपनी आँखों को खोलकर एक बार गौर से थोड़ी देर देखकर उसने फिर उन्हें मींच लिया। अदीना की इस हालत को देखकर वह आश और रोटी शाह मिर्जा और शरीफ के गले से भी नीचे नहीं उतरी। दोनों ने अदीना की चारपाई को उठाकर समावारखाने के भीतर पहुँचाया।

शरीफ फिर आने का वचन देकर अपने रहने की जगह चला गया।

---

## पतझड़

आ इस अक्तूबर, १६१८ को ताशकन्द की आबहवा मामूली से ज्यादा ठण्डी हो गयी थी। वृक्षों के पत्ते, जो पहिले से ही पीले हो गये थे, इस सर्दी के कारण अपने को और नहीं रोक सके और बाज़ के झपटे में पड़े कबूतर के पैरों की तरह हर तरफ बिखर कर गिरने लगे। उसमें से कुछ छतों पर उड़कर गये, कुछ नहरों में और कुछ दूसरी जगहों में। पतझड़ की वर्षा भी उनके पीछे पड़ी हुई थी। इसी के कारण मानो वह अपने लिये शरण-स्थान ढूँढ रहे थे। अधिक सर्दी की वजह से वर्षा भी बरफ से मिली हुइ पड़ रही थी। जमीन पर पड़ी यह बरफ अभी हवा से इधर-उधर उड़ती ठीक से सब जगह को न ढाँक, सबको कुरखी-सा बनाये हुए थी। जाड़े के समय से पहिले आ जाने के कारण अभी लोगों ने सरदी की पोशाक अपने लिये तैयार नहीं करायी थी, इसलिये आने-जानेवाले इस बरफ की बारिश म पानी में गोता खाये मुर्गी के चूजों की तरह काँपते, अपने हाथों को छिपाये, बराण्डों, दुकानों के छज्जों या दूसरी जगहों में खड़े किंकर्त्तव्यविमूढ़ से दिखाइ पड़ते थे। बादल काला था, सूरज छिपा दिन अँधेरा, ऋतु भीषण, जमीन पंकिल और आसमान बरफ की वर्षा करता था। धीरे धीरे मौसिम ने ऐसा कर दिया कि कूचे और सड़कों पर आदमियों के आने-जाने की कोई आवाज सुनायी नहीं देती थी। ताशकन्द-जैसे एक कोलाहलपूर्ण बड़े शहर के लिये यह नीरवता बड़ी विचित्र थी। अन्त में हवा की सरसराहट के सिवा कहीं कोई शब्द नहीं सुनाई पड़ता था।

इसी वक्त ताशकन्द के कश्कर मुहल्ला की ओर से एक गरीब का ताबूत ( *अर्थी* ) *आता दिखलायी पड़ा, जिसके ऊपर चार गज मोटा*

रंगा कपड़ा पड़ा हुआ था। ताबूत के साथ आठ-नौ गरीब मजदूरों के सिवा और कोई नहीं था। वे ही ये ताबूत उठानेवाले भी, शोक मनाने वाले भी और मुर्दे के सम्बन्धी भी। भारी बोझ से लदे ऊँट की तरह ताबूत था, लेकिन उनका बोझ वह बोझ नहीं था, जिसे ऊँट, घोड़ा या मनुष्य उठा सके। यह बोझ था दुख, रंज, गम, हसरत, वियोग और निराशा का जो कि पहाड़ों की कमर को भी झुका सकता था। निश्चय ही ऐसे बोझ को वे ही आदमी उठा सकते थे जो कि ताबूत को ले जा रहे थे।

ताबूत धीरे धीरे उरदा से पार हो और कितने मुहल्लों से गुजरते शैम्बार दो-तहर के कब्रिस्तान में पहुँचा। वहाँ आज ही एक नयी क़ब्र खोदी गयी थी, जिसमें उन्होंने मुर्दे को लिटा दिया और फिर क़ब्र को ठीक से बन्द कर दिया। लोगों ने आस-पास मिट्टी डालकर वहाँ ऊँट के कोहान की तरह एक कब्र खड़ी कर दी। लिखित पत्थर की जगह वहाँ कुछ ककड़ियाँ चुन दीं। यह सब काम खतम हो जाने के बाद उन आदमियों में से एक ने पूछा—"अदीना कैसा आदमी था?"

दूसरे ने जवाब दिया—"अदीना एक ऐसा फकीर, गरीब, निराश जवान था, जो तरुणाई में ही अकारण विश्वासघात, खयानत, जुल्म और अन्याय की बलि हो गया! धनियों और बायों ने उसे बेसमय ही खतम कर दिया!"

प्रश्न कर्ता शाह मिर्ज़ा था और उत्तरदाता शरीफ़।

फिर सबने एक ही बार आवाज लगायी—"अदीना मुर्द (मर गया)! जिन्दाबाद इन्कलाब!"

"नेस्तबाद अन्याय!" नारा लगा, वे लोग जिस रास्ते से आये थे उसी रास्ते से लौट गये।

समावारखाने में जिस दिन अदीना ने शरीफ़ से बातचीत की थी उसके एक महीने बाद वह मर गया।

———

# समाप्ति

इतिहास बतलाता है कि ताजिक कोहिस्तान में बहुत जुल्म और अत्याचार हुआ, बहुत खून बहाया गया, बहुत से परिवार उजाड़ दिये गये। मध्य एशिया के और लोगों को भी बहुत तकलीफें बर्दाश्त करनी पड़ी होंगी, लेकिन कोहिस्तान के ताजिकों का तो सारा इतिहास ऐसे अत्याचारों से भरा पड़ा है, जैसा अन्यत्र शायद ही कभी देखा गया हो। एक ओर बुखारा के अमीर उनको बरबाद करते, दूसरी ओर खुद उनके अपने धनी बाय और अमलदार हर तरह से लूट खसूट करते हुए, उनकी जिन्दगी को दूभर करते। ऊपर से उनके पुराने जमाने से चले आये रीति रिवाज भी पहाड़ की तरह छाती को दाबे हुए थे। यह था उनका जीवन पथ। इस पथ में बहुतेरे अदीना, बहुतेरे शरीफ, बहुतेरे शाह मिर्ज़ा, बहुतेरे सगीन, बहुतेरी गुल बीबियाँ, बहुतेरी बीबी आइशायें और बहुतेरी गुलदाम बलि चढ़ीं, कुर्बान हुईं।

यद्यपि १९२० की क्रांति ने बुखारा से अमीर की हुकूमत को खतम कर दिया, उसके हाकिमों को मार भगाया, लेकिन स्थानीय धनिकों और बड़ों का जोरजुल्म देर तक चलता रहा। आखिरी अमीर बुखारा के पैदा किए बासमचियों (डाकुओं) के जुल्म से ताजिक जाति को बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। उन्होंने बेगुनाह ताजिक मर्द-औरतों, बच्चे बूढ़ों को हज़ारों की तादाद में कत्ल किया और उनके गाँव के गाँव जला दिये। उस समय ताजिकिस्तान ने ऐसा जुल्म सहा, जिसका उदाहरण इतिहासों में बहुत कम मिलता है, लेकिन अन्त में दुख की काल रात्रि खत्म हुई।

सन् १९२४ में मध्य एशिया की जातियों की नयी राजनीतिक सीमायें निश्चित हुईं, जिसके साथ ताजिक कोहिस्तान के आकाश में सुख और समृद्धि, शान्ति और स्वतन्त्रता की उषा प्रकट हुई। इस सीमाबन्दी के अनुसार स्वतन्त्र सोवियत ताजिकिस्तान की सरकार कायम हुई। लाल सेना और ताजिक गरीब किसानों ने मिलकर बासमचियों (डाकुओं) की जड़ उखाड़ फेंकी।

ताजिकिस्तान केवल बासमचियों से ही मुक्त नहीं हुआ बल्कि उसने अपने यहाँ के जमींदारों और पशु-मालिकों को भी निकाल बाहर किया, जिससे एक नया ताजिकिस्तान पैदा हुआ।

अब ताजिक पहाड़ों के आकाश में हवाई जहाज उड़ते हैं, ताजिकिस्तान के पहाड़ों की ऊँची-नीची, टेढ़ी मेढी सड़कों पर मोटरें और मोटर-बसें दौड़ती है। वह समय भी दूर नहीं है, जब कि इन पहाड़ों पर रेलें दौड़ा करेंगी (अब दौड़ रही हैं)। अब केवल शहरों में ही नहीं, बल्कि गाँवों में भी स्कूल, शिशु-शालायें, बीमारखाने, क्लब, किताबखाने, वाचनालय, सैकड़ों हजारों की तादाद में स्थापित हो गये हैं। आज वहाँ खोपड़ी के मीनारों की जगह बेतार के मीनार, कपास के कारखानों की चिमनियाँ और रेलवे के सिगनल खड़े दिखाई पड़ते हैं।

अदीना मर गया। शरीफ और शाह मिर्जा के जीने मरने की बात हमें मालूम नहीं। लेकिन हम इतना जानते हैं कि पहिले के अदीना, शरीफ और शाहमिर्जा-जैसे फकीर और उत्पीड़ित आज-कल ताजिक मेहनतकशों के 'डेपुटी' (पार्लामेंट मेम्बर) बने हुए हैं। गुल बीबी और बीबी आइशा तथा उन-जैसी हजारों ताजिक स्त्रियाँ क़ुर्बान हुईं, लेकिन अब ऐसी हजारों गुल बीबियाँ और बीबी आइशायें पैदा हुई हैं, जिन्होंने कि ताजिक स्त्रियों को मर्दों की गुलामी तथा पुरानी अत्याचार पूर्ण रीति रिवाजों को सदा के लिये मुक्त कर दिया है। आज जैसे कल

के गरीब ताजिक मर्द स्वतन्त्रतापूर्वक अपना काम करते हैं, उसी तरह स्त्रियाँ भी अधिकार प्राप्त और स्वतन्त्र हैं।

मुमकिन है कि अभी भी ताजिक जाति के भीतर अरबाब कमालों, मुल्ला साफराहों और मर्दे-खुदाओं जैसे लोग हों, जो ताजिक लोगों के रास्ते में हर तरह काँटा बिछाना चाहते हैं, लेकिन हमें विश्वास है कि जिस गरीब वर्ग ने बाहरी जालिमों को अपने भीतर से निकाल फेंका, वह फिर अपने भीतर के अत्याचारियों के धोखे और फरेब में न पड़ेंगे और उनकी सारी बहानेबाजियों को झूठ करके, दुनिया से उन्हें नेस्त नाबूद कर डालेंगे। आज ताजिकिस्तान में जो फूल खिला है, वह पूर्वी दुनिया को मधुर मेवा प्रदान करेगा।

---